बातें मुलाकातें

बातें मुलाकातें

प्रशिक्षु पत्रकारों से विशिष्ट व्यक्तियो के साक्षात्कार

संपादक

कमलकांत बुधकर

प्राध्यापक : हिन्दी पत्रकारिता

छात्र संपादक

सुशील उपाध्याय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का प्रकाशन

1997

प्रकाशक एवं प्रतिलिप्यधिकार
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार-249404

मूल्य : 125.00 रुपए.
प्रथम संस्करण: 13 अप्रैल 1997
आवरण सज्जा: **पल्लव बुधकर**

कंपोजिंग एवं मुद्रण :
टाइम्स कम्प्यूटर्स एण्ड कम्यूनिकेशंस,
निकट स्टेट बैंक, हरिद्वार फोन: (0133) 426333
के माध्यम से
अम्बिका ऑफसैट,
28/1 प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर
फोन: (0131) 432542, 432596

संपर्क:
पत्रकारिता प्रकोष्ठ, हिन्दी विभाग,
मानविकी संकाय,
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार 249404

BATEN - MULAKATEN : Kamal Kant Budhkar / 1997
Rs. 125/- Total Pages : 154



॥ समर्पण ॥

गुरुकुल के प्रथम यशस्वी स्नातक
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
के पूर्व कुलपति

साँस्कृतिक राष्ट्रपुरुष
सर्जक साहित्यकार
एवं
हिन्दी पत्रकारिता के पुरोधा
प्रो. इन्द्र विद्यावाचस्पति
की पावन प्रेरक स्मृति को
सादर समर्पित !

शुभाशीष

गुरुकुल के स्नातकों ने हिंदी पत्रकारिता में नए मानदंड स्थापित किए हैं। एक दौर था जब हिंदी के प्रमुख राष्ट्रीय समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में गुरुकुल के स्नातक ही महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभाले हुए थे। बीच के कुछ वर्षों में यह परंपरा शिथिल हुई लेकिन अब पुन: गुरुकुल के छात्र अपनी परंपरा को कायम रखने के लिए सामने आ रहे हैं। आज पूर्व के मुकाबले उनकी जरूरत अधिक महसूस की जा रही है।

पिछले वर्षों में पत्रकारिता क्षेत्र में बहुत से महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चुके है। एक ओर जहाँ वैज्ञानिक साधन-सुविधाएँ बढ़ी हैं वहीं इस क्षेत्र में कई तरह की गिरावट भी आई है। गुरुकुल के पत्रकारों की गौरवशाली परंपरा को देखते हुए यह विश्वास किया जाना चाहिए कि यहाँ के प्रशिक्षित पत्रकार इस 'गिरावट' से न केवल खुद बचेंगे बल्कि इसे रोकेंगे भी। आज पत्रकारिता क्षेत्र में पहले से बेहतर संभावनाएँ है लेकिन इसके लिए लेखन क्षमता के साथ व्यावसायिक दक्षता भी जरूरी है। हिन्दी विभाग में पत्रकारिता प्रकोष्ठ के माध्यम से यह कार्य किया जा रहा है। ***'बातें-मुलाकातें'*** नई कलम की संभावनाओं को उजागर कर रही है।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए मैं हिन्दी विभाग को धन्यवाद देता हूँ। हिन्दी पत्रकारिता के प्राध्यापक श्री कमलकांत बुधकर इस प्रयास के लिए विशेष तौर से बधाई के पात्र है। मैं सभी प्रशिक्षु पत्रकारों के उज्ज्वल भविष्य की भी कामना करता हूँ।

-डॉ. धर्मपाल
कुलपति
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

वर्ष प्रतिपदा,
विक्रम संवत् 2054

अनुक्रम

सस्कृत पत्रकारिता मे काम हो रहा है

-डॉ.रामकृष्ण शर्मा

मन और आत्मा को प्रभावित करते है यज्ञ

-आचार्य रामनाथ वेदालंकार

वेद गुरुकुल को नई ऊँचाइयाँ दे सकते हैं

-प्रो.रामप्रसाद वेदालंकार

मेरे उपन्यास मेरे नाम से नहीं छपे

-वेदप्रकाश शर्मा

देश का जनमत भाजपा के पक्ष में

-कैलाश जोशी

काग्रेस ने आतकवाद को बढ़ावा दिया

-कुशाभाऊ ठाकरे

उत्तराखड राज्य अवश्य बनना चाहिए

-नित्यानंद स्वामी

चुनाव में जात नहीं योग्यता देखो

-चौधरी महेंद्रसिंह टिकैत

युवा राजनीति को सही दिशा दे सकता है

-राजेंद्र कुमार गुप्त

सभी दल भाजपा जितने साम्प्रदायिक

-रामसिंह माण्डेबॉस

भाजपा की सोच में कहीं अंतर्द्वन्द्व नहीं

-वीरेन्द्र कुमार सखलेचा

जनता की अदालत हर अदालत से बडी

-विद्याचरण शुक्ल

आमुख

साक्षात्कार एक ऐसी विधा है जो व्यक्ति के अंतरंग में झाँकने का अवसर देती है। 'कहकर मन को हल्का करने' की बात प्रायः सुनने को मिलती है। व्यक्ति अपने मन की बात कहकर एक ओर जहाँ स्वयं 'एकोऽहं बहुस्याम:' की परम्परा का निर्वाह करता है वहीं दूसरी ओर 'अभिव्यक्त हो जाने' के अहसास से भी तृप्त होता है। पत्रकारिता के क्षेत्र में सामान्य से विशिष्ट व्यक्ति तक के मन में उतर जाने के लिए इसी साक्षात्कार की सीढ़ी की मदद ली जाती है। यूं भी कह सकते है कि साक्षात्कार की सीढ़ी चढ़कर कोई भी अभिव्यक्ति की उस खुली छत पर पहुंच सकता है जहाँ अनंत आकाश में पसर जाने और उड़ते रहने की संभावनाएँ हैं।

पत्रकारिता के प्रशिक्षण के दौरान साक्षात्कार की महत्ता प्रशिक्षुओं को बताई जाती है ताकि वे समाज-जीवन में लोगों से मिलकर उन्हें न केवल सुनें बल्कि उन्हें समझकर उनका दुख-दर्द, उनके अनुभव, विचार, मान्यताएं, जीवनशैली औरों तक पहुँचाएँ। रिक्शे-तांगे वाले से लेकर प्रधानमंत्री-राष्ट्रपति तक से मिलकर बतियाने की प्रक्रिया से एक सक्रिय पत्रकार को गुजरना ही पड़ता है। बात करने वाले के सामने अगर पत्रकार है तो वह अपनी बातचीत में थोड़ा सतर्क जरूर हो जाता है पर उसकी मन की बात निकलवाने के लिए पत्रकार कब उसकी उस सतर्कता को अपनी वाक्शैली में लपेट लेता है यह कई बार उसे भी पता नहीं चल पाता। बहरहाल, यह तो तय है कि बातों में रस होता है और लोग बतियाने में, बतकहियों में रुचि लेते हैं। कोई किससे किसके बारे में क्या कह रहा है यह जानना भी लोगों की रुचि का विषय है और दैनंदिन पत्रकारिता के माध्यम से हर सुबह पूरा होता है। बातों के विराट् जाल में हर कोई फँसता और फँसाता है। चाहे वह प्रजा हो या राजा।

'बातें-मुलाकातें' वाणी के विस्तार का ही एक आयाम है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें बातें-मुलाकातें करने वाले गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्रशिक्षु पत्रकार है जबकि बातें बताने और मुलाकातें देने वाले लोग समाज जीवन के वे लोग हैं जिन्होंने धर्म, अध्यात्म, पत्रकारिता, संपादन, साहित्य, राजनीति, शिक्षा, कला, खेल, चिकित्सा आदि विविध क्षेत्रों में वैशिष्ट्य प्राप्त किया है। हमारे प्रशिक्षु पत्रकारों से ये विशिष्ट लोग स्नेह से मिले और इनकी युवकोचित जिज्ञासाओं का उन्होंने न केवल शमन किया बल्कि पत्रकारिता में कदम

रखने वाली नई पीढ़ी के इन कलमकारों को प्रोत्साहित भी किया। आज जब गुरुकुल के प्रशिक्षु पत्रकारों द्वारा पिछले पाँच सत्रों, 1991 से 1996, में लिए गए प्रतिनिधि साक्षात्कारों का संकलन ***'बातें-मुलाकातें'*** आपके हाथों में है, मैं इसमें शामिल सभी साक्षात्कारदाताओं के प्रति अपनी ओर से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि उन्होंने मेरे विद्यार्थियों का उत्साहवर्द्धन किया।

जैसा कि आचार्य डॉ. विष्णुदत्त राकेश ने इसी पुस्तक में अन्यत्र लिखा है गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का पत्रकारिता से बड़ा पुराना नाता रहा है। उसी नाते को नवजीवन देने के लिए तत्कालीन कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार के कार्यकाल में उनके और आचार्य डॉ. राकेश के सत्प्रयत्नों तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अनुमति से गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में **एक वर्षीय हिन्दी पत्रकारिता स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम** सत्र 1991-92 से आरंभ हुआ। छठे वर्ष तक आते-आते इस पाठ्यक्रम में 81 छात्रों ने प्रवेश लिया तथा प्रथम पांच वर्षों में 22 छात्र प्रथम श्रेणी में, 43 द्वितीय श्रेणी में तथा 02 तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। प्रथम पांच वर्षों में उत्तीर्ण 67 छात्रों में से तीस छात्रों को विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं, दूरदर्शन, जनसंपर्क एवं हिन्दी कार्यालयों में विभिन्न पदों पर कार्य करने का अवसर भी मिला है। इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम में हरिद्वार ही नहीं बल्कि रुड़की, ऋषिकेश, देहरादून, सहारनपुर, मेरठ, मुज़फ्फरनगर, बुलन्दशहर, अनूपशहर, शामली, कैराना आदि नगरों के छात्रों ने भी प्रवेश लेकर लाभ उठाया है।

आरंभिक पांच वर्षों में इन प्रशिक्षु पत्रकार छात्रों को नई दिल्ली, भोपाल, ग्वालियर, हरिद्वार और इन्दौर के चौदह दैनिक समाचार पत्रों में पत्रकारिता का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिलाया गया। इन समाचारपत्रों में नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, हिन्दुस्तान, भास्कर, नई दुनिया, जागरण, नवभारत, स्वदेश, आचरण, चेतना आदि प्रमुख हैं। प्रशिक्षु पत्रकारों के लिए समय-समय पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया गया जिनमें डॉ. विद्यानिवास मिश्र, प्रभाष जोशी, पं. लक्ष्मीशंकर व्यास, डॉ. कन्हैयालाल नंदन, पं. अच्युतानंद मिश्र, बालकवि बैरागी, राजकिशोर, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, डॉ. वेदप्रताप वैदिक, डॉ. नंदकिशोर त्रिखा, डॉ. देवेन्द्र दीपक, श्याम वेताल, प्रो. सरोज कुमार, विनोद मिश्र, राजेश बादल, आलोक मेहता, प्रकाश दुबे, राकेश शर्मा, शलभ भदौरिया, अरुण दीक्षित, अजय चतुर्वेदी, विनोद अग्निहोत्री, विजयदत्त श्रीधर, संतोष कुमार शुक्ल, श्रीमती मंगला अनुजा, डॉ. देवेन्द्र भसीन, ध्रुवनाथ चतुर्वेदी, एल. एन. शीतल, डॉ. राम विद्रोही, डॉ. रामजीलाल जांगिड, राजेन्द्र यादव, नित्यानंद मैठाणी, यादवेन्द्र, शिवरूप तिवारी, चन्द्रकांत सरदाना, आर. एम. पी. सिंह, सुरेश वाजपेयी, दिलीप चिंचालकर, डॉ. मानसिंह परमार आदि प्रमुख विद्वानों को आमंत्रित किया गया।

आरंभिक पाच वर्षों में जहा पत्रकारिता के छात्रों ने अपनी प्रशिक्षण यात्राओं के दौरान पत्रकारिता से जुडे संस्थानों जैसे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन, पत्रसूचना कार्यालय, पीटीआई, यूएनआई, आकाशवाणी, दूरदर्शन, माधवराव सप्रे समाचारपत्र संग्रहालय, हिन्दुस्तान, राष्ट्रीय सहारा और अमर उजाला के अत्याधुनिक मुद्रणालय आदि का अवलोकन कर वहाँ की कार्यविधि को समझा वही ऐतिहासिक, सास्कृतिक एवम् पुरातात्विक महत्व के स्थलों जैसे राष्ट्रपति भवन, संसद भवन और वहाँ लोकसभा की कार्यवाही, भारत भवन, साची के स्तूप, उदयगिरि और भीमबैठका की गुफाएं, भोजपुर का विराट शिवलिंग, माण्डू का किला, धार के स्मारक, म.प्र. हिन्दी ग्रथ अकादमी, भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड के हरिद्वार और भोपाल स्थित कारखाने, मध्य प्रदेश की विधानसभा तथा लोकसपर्क निदेशालय और 'माध्यम' कार्यालय, ग्वालियर का दुर्ग, प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर, तानसेन की मज़ार, छतरिया, संग्रहालय, जयविलास पैलेस आदि का अवलोकन किया।

इन पाच वर्षों में पत्रकारिता के छात्रों ने अपने प्रायोगिक समाचार पत्र **'शतपथ'** के पॉच अक भी प्रकाशित किये है जिनकी सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। इन अंकों में समाचार सग्रह, लेखन, प्रूफ रीडिंग, कटिंग, पेस्टिंग आदि का समस्त कार्य छात्रों ने ही किया। हिन्दी विभाग मे हिन्दी पत्रकारिता के छात्रों के लिए एक विभागीय पुस्तकालय भी चलाया जा रहा है।

पत्रकारिता प्रकोष्ठ की गतिविधियों के अन्तर्गत ***'बातें-मुलाकातें'*** को पुस्तकाकार प्रकाशित कराने की योजना तो कई दिनों से मन में थी पर उसे रूपाकार दिया श्रद्धेय कुलपति डॉ. धर्मपाल की प्रेरणा ने। आचार्य डॉ. विष्णुदत्त राकेश का प्रेरक व्यक्तित्व तो सदा से ऐसे अकादमिक और रचनात्मक कार्यों को प्रोत्साहित करता ही रहा है, इस पुस्तक की प्रस्तुति में भी उनका अयाचित स्नेह मेरा दिशा-निर्देश करता रहा है। डॉ. ज्ञानचद्र रावल हिन्दी विभागाध्यक्ष होते हुए भी मेरे अनुजवत् हैं। उन्होंने इस योजना को स्वीकृति देने में क्षणार्द्ध का भी विलंब नही किया। इन सबके प्रति आभार प्रकट करना मेरा कर्त्तव्य है।

इस पुस्तक को अत्यल्प समय में आपके हाथों तक पहुँचाने में जहाँ छात्र संपादक तथा 'संत हरिश्चन्द्र भाटी स्मृति स्वर्णपदक' प्राप्त पूर्व छात्र श्री सुशील उपाध्याय ने पाण्डुलिपि संशोधन में मेरी मदद की है वही उनके साथी श्री सजय वर्मा, प्रभाकर मिश्र और सेवाराम वर्मा के सहयोग के लिए मैं उन्हें साधुवाद और शुभकामनाएँ ही दे पा रहा हूँ। टाइम्स कम्प्यूटर्स एण्ड कम्यूनिकेशंस के श्री सदीप शर्मा, पल्लव बुधकर और कु. उमा राघव ने दिन-रात परिश्रम करके पुस्तक की टाइप-सैटिंग समय से पूरी की। मैं हिन्दी विभाग की ओर से उनको धन्यवाद देता हूँ।

गुरुकुल के प्रशिक्षु पत्रकारों ने जो विशिष्ट साक्षात्कार लिए हैं वे अब आपके सम्मुख हैं। इन्हें पुस्तकाकार प्रकाशित करने के पीछे यही उद्देश्य रहा है कि छात्र इस विधा के प्रति आकृष्ट हों। उनकी झिझक टूटे, उन्हें लगे कि उनके द्वारा किए गए काम को भी कहीं, किसी सीमा तक मान्यता मिल रही है। दूसरे यह कि पत्रकारिता में आने वाले भावी छात्र अपने पूर्ववर्ती छात्रों के कार्य से प्रेरणा लेकर कुछ नया कर सकें।

'बातें मुलाकातें' शामिल साक्षात्कार प्रकाशन के समय भले ही 'पुरानी बातचीत' कहलाएँ पर इनमें कुछ ऐसी बातें ज़रूर हैं जो हर समय की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इन सबके बावजूद यह पुस्तक **अपनी तरह का पहला प्रयास है** जो अन्य पत्रकारिता प्रशिक्षण संस्थानों ने संभवतः अभी तक नहीं किया है। इस पर आपकी **'हर तरह की'** प्रतिक्रिया हमारा मार्गदर्शन करेगी इसी विश्वास के साथ निवेदन है कि अपनी प्रतिक्रिया कृपया लिखें ज़रूर।

मेष संक्रांति, वि.सं. 2054
13 अप्रैल 1997
हरिद्वार।

कमलकांत बुधकर
संपादक

हिन्दी पत्रकारिता का गोमुख : गुरुकुल

गुरुकुल हिन्दी पत्रकारिता का प्रमुख केन्द्र रहा है। स्वामी श्रद्धानंद जी ने 1889 ई. में 'सद्धर्म प्रचारक' साप्ताहिक पत्र उर्दू में निकाला था पर अनेक हिन्दी प्रेमियों के आग्रह पर उन्होंने 1907 ई० से उसे हिन्दी में निकालना प्रारंभ किया। इसी वर्ष श्री माधवराव सप्रे के सम्पादन में मराठी केसरी भी हिन्दी में निकला। यह हिन्दी पत्रकारिता का प्रारंभिक युग था। स्वाधीनता, समाज सुधार, राष्ट्रीयता, शैक्षिक क्रान्ति तथा आध्यात्मिक उन्नयन इन पत्रों का प्रमुख लक्ष्य था। 1857 की स्वाधीनता क्रान्ति के दौरान श्री अजीमुल्ला खाँ के 'पयामे आज़ादी' की निम्नांकित पंक्तियाँ हिन्दी पत्रों की मार्गदर्शिका बन गईं।

हम हैं इसके मालिक, हिन्दुस्तान हमारा,
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा।

इन पंक्तियों के प्रकाशन के लगभग बत्तीस वर्ष बाद 'सद्धर्म प्रचारक' का प्रकाशन हुआ। सद्धर्म प्रचारक के तेवर बड़े तीखे थे। स्वाधीनता आन्दोलन और राष्ट्रीय जागरण की दिशा में इस पत्र ने बड़े महत्त्व का कार्य किया। लोकमान्य तिलक की गिरफ्तारी तथा लाला लाजपतराय के विदेश प्रवास के बाद स्वामीजी ने स्वदेशी आंदोलन की बागडोर अपने हाथों में ले ली। स्वामीजी की दृढ़ता, निर्भीकता तथा दूरदर्शिता के कारण आर्यसमाज अंग्रेज़ी शासकों के दमन से मुक्त हुआ तथा अपनी दो टूक कथन शैली के कारण दिल्ली तथा पंजाब में सद्धर्मप्रचारक के पाठकों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई। 1915 में गाँधीजी से भेंट के बाद तो स्वामीजी राष्ट्रीय आन्दोलन में खुलकर सामने आ गए। गाँधीजी के सत्याग्रह को स्वामीजी ने धर्मयुद्ध का नाम दिया तथा स्वामीजी के प्रथम पुत्र-शिष्य पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति इस धर्मयुद्ध के लिए गठित सत्याग्रह समिति के मंत्री बने। ख़िलाफ़त आन्दोलन के साथ स्वामी जी के कारण आर्यसमाज पूरी तरह जुड़ गया। स्वामी श्रद्धानन्द तथा इन्द्र जी ने तत्कालीन आन्दोलनों को अपने समाचार पत्रों के माध्यम से देशव्यापी बनाया। स्वामीजी ने हिन्दी में '*श्रद्धा*' तथा अंग्रेज़ी में 'लिबरेटर' नामक पत्र निकाले।

पण्डित इन्द्र हिन्दी पत्रकारिता के पितामह कहे जा सकते हैं। उर्दू के बढ़ दिल्ली में उन्होंने 1918 में हिन्दी का पहला साप्ताहिक पत्र 'विजय निकाला। सत्यवादी, अर्जुन, नवराष्ट्र तथा जनसत्ता नामक पत्र भी इन्द्र जी ने निकाले। अर्जुन नामक पत्र तो बहुचर्चित हुआ जो बाद में 'वीर अर्जुन' के रूप में प्रकाशित होता रहा। 1947 में हिन्दी के प्रसिद्ध कवि-नाटककार श्री चिरंजीत के सम्पादन में उन्होंने 'मनोरंजन' नामक एक साहित्यिक मासिक पत्र भी निकाला था। इन्द्रजी जन्मजात पत्रकार थे। उन्होंने छात्रावस्था में 'सत्यप्रकाश व असत्यविचारक' तथा 'उषा' नामक हस्तलिखित

पत्र भी निकाले थे। स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वतंत्रता के बाद लिखे गए उनके सम्पादकीय लेखों ने राष्ट्रीय विचारकों को चिन्तन के नूतन आयाम दिए। फिर तो गुरुकुल से अलंकार, गुरुकुल समाचार गुरुकुल, गुरुकुल पत्रिका, वैदिक मैगजीन, वैदिक पथ, आर्यभट्ट तथा प्रजाद जैसे अनेक पत्र प्रकाशित हुए। वैदिक मैगजीन की प्रशंसा तो विश्वप्रसिद्ध साहित्यकार श्री लियो टालस्टाय तथा योगिराज श्री अरविन्द ने भी की थी।

गुरुकुल के पत्रकार लेखकों में श्री सत्यदेव विद्यालंकार, श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, डॉ. सत्यकेतु विद्यालकार, श्री सत्यकाम विद्यालंकार, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, श्री हरिवंश विद्यालंकार, श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार, श्री रामगोपाल विद्यालंकार, श्री दीनानाथ सिद्धान्तालकार, श्री युधिष्ठिर विद्यालंकार, श्री यज्ञदत्त विद्यालकार, श्री क्षितीश वेदालंकार, श्री ब्रह्मदत्त विद्यालंकार तथा कृष्ण चन्द्र मेहता के नाम उल्लेखनीय हैं। साहित्यिक दृष्टि से श्री सत्यकाम ने 'धर्मयुग' तथा 'नवनीत', श्री चन्द्रगुप्त ने 'आजकल', 'विश्वदर्शन' तथा 'सारिका', श्री नरेन्द्र विद्यावाचस्पति ने 'प्रतिभा', श्री प्रताप विद्यालंकार ने 'अभियान' तथा श्री विद्यासागर विद्यालकार ने 'प्रकर' पत्रिकाओं का सम्पादन कर अपने पाण्डित्य की गहरी छाप छोड़ी। श्री विश्वनाथ विद्यालंकार के सम्पादन में प्रकाशित 'वैदिक विज्ञान' मासिक भी सदैव याद किया जाता रहेगा।

दैनिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, अमरभारत तथा विश्वमित्र के सम्पादक के रूप में श्री सत्यदेव विद्यालकार को कभी भुलाया नहीं जा सकता उन्होंने पत्रकारिता को देशसेवा का सच्चा माध्यम माना। पत्रकारिता की शिक्षा उन्हें शिक्षा श्रद्धानद जी से मिली। हिन्दी पत्रों में कार्टून प्रकाशित करने की परम्परा का सूत्रपात् उन्होंने ही किया। उनके द्वारा कलकत्ता से सम्पादित-प्रकाशित 'नवयुग' मासिक व्यंजक कार्टूनों के कारण प्रसिद्ध हुआ। गुरुकुल में रहते हुए उन्होंने राजहंस, अद्भुत, विजयदशमी तथा समालोचक नामक हस्तलिखित पत्र निकाले थे। विजयदशमी दैनिक पत्र था। इसमें भी धारदार कार्टूनों का उपयोग होता था। सत्यदेव जी की निर्भीक लेखनी तथा विस्फोटक टिप्पणियाँ अंग्रेज सरकार की आँखों की किरकिरी बनी रहीं। इसी कारण 1920 से लेकर 1947 तक उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। यह लिखते हुए हमें गौरव का अनुभव हो रहा है कि दिल्ली के प्रमुख राष्ट्रीय पत्रों के आदि सम्पादक (हिन्दुस्तान, नवभारत, विश्वमित्र तथा अमरभारत) होने का सम्मान श्री सत्यदेव जी के ब्याज से गुरुकुल के स्नातक को ही मिला। आपके द्वारा लिखित स्वामी श्रद्धानंद की जीवनी हिन्दी की धरोहर है।

अस्तु, निस्संकोच कहा जा सकता है कि गुरुकुल हिन्दी पत्रकारिता का गोमुख रहा है। यहाँ के स्नातकों की रचना-प्रतिभा ने इस विद्या द्वारा हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में अपूर्व योगदान किया है। अनेक प्रतिभाशाली लेखकों का निर्माण भी पत्रकारिता के ब्याज से गुरुकुल ने किया। विज्ञान, समाजशास्त्र, इतिहास, पुरातत्त्व, राजनीतिशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, दर्शन तथा वन्य जीवन से सम्बन्धित अनेक सिद्धहस्त लेखक गुरुकुल से निकले। इन स्नातक लेखकों ने राजनीति तथा हिन्दी लेखन में

समानभाव से सक्रिय भाग लिया तथा निःस्वार्थ, निर्भीक और समर्पणभाव से राष्ट्र की सेवा की। हिन्दी पत्रकारिता को भाषा परिष्कार की दृष्टि भी इन स्नातक सम्पादकों से मिली। समाज निर्माण तथा उद्बोधनात्मक साहित्य लेखन आजीवन इनका अपराजेय व्रत रहा। हिन्दी पत्रकारिता के राष्ट्रीय इतिहास लेखन में इस प्रकार गुरुकुल का ही पलड़ा भारी रहेगा।

गुरुकुल की इसी पहचान को बनाए रखने के लिए हमने हिन्दी विभाग में पिछले छह वर्षों से हिन्दी पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा चलाया हुआ है। अपने पूर्व स्नातकों की उज्ज्वल परम्परा के निर्वहण हेतु हमारे नये स्नातक परिकर कस कर खड़े हो रहे हैं। उनके रचनाकार के उद्बोधन तथा जागरण के लिए हमने प्रायोगिक परीक्षा के रूप में साक्षात्कार, फीचर, आलेख, जीवनी लेखन को पाठ्यक्रम में स्थान दिया है। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि प्रशिक्षु छात्र तत्परता, रुचि तथा श्रम से इन विधाओं का लेखन करते हैं, केवल औपचारिकता का निर्वाह नहीं करते।

'बातें-मुलाकातें' इन्हीं प्रशिक्षु विद्यार्थियों द्वारा लिखित साक्षात्कारों का संकलन है जिसका सम्पादन पत्रकारिता के प्राध्यापक *श्री कमलकान्त बुधकर* ने किया है। समाज के ज्ञात-अल्पज्ञात बहुरंगी चेहरों को नई कलम में रोप कर इन रचनाकारों ने जीवन की संवेदनाओं को बहुत गहरे उतरकर छुआ है। यद्यपि सभी नवोदित लेखक है पर कला की पारदर्शिता तथा मर्मस्पर्शी चेतना की अपूर्व संभावनाएँ इनमें निहित दिखाई देती है। वस्तु विन्यास तथा सम्प्रेषणीयता के गुण भी इनके लेखन में संदीप्त है। मुझे आशा है कि प्रशिक्षु छात्रों का यह प्रयोग सहृदय पाठकों को पसन्द आएगा।

मैं सभी छात्र लेखकों तथा उनके प्राध्यापकों को इस कार्य के लिए बधाई देता हूँ तथा विश्वास करता हूँ कि आचार्य स्वामी श्रद्धानंद द्वारा प्रवर्तित पत्रकारिता-मन्दाकिनी के तट पर अपने अग्रज पत्रकार स्नातकों की तरह बैठकर सारस्वत सुधा का पान करते हुए भविष्य निर्माण का चित्र पर बुनने वाले आज के प्रशिक्षु कल के आचार्य सिद्ध होंगे। क्योंकि-

'कैसे-कैसे चराग़ बुझ-बुझ कर
कैसे-कैसे चराग़ जलते हैं'!

आचार्य डॉ. विष्णुदत्त राकेश
हिन्दी विभाग

वर्ष प्रतिपदा,
विक्रम संवत् 2054
हरिद्वार

मेहनतकशों से ही भिक्षा लेता हूँ

-पद्मश्री स्वामी कल्याणदेव

वयोवृद्ध संत स्वामी कल्याणदेव करीब जो दशकों से से सामाजिक एवं आर्थिक विषमता तथा अशिक्षा के खात्मे के लिए जुटे हुए हैं। वह एक ऐसे संन्यासी है, जिन्होंने दीन-दुखियों में ईश्वर के दर्शन किए। पद्मश्री स्वामी कल्याणदेव ने मुजफ्फरनगर जिले में दर्जनों शिक्षा संस्थाएं खड़ी कीं और शोध और तकनीकी शिक्षा के केंद्र स्थापित किए। उन्होंने लोगों में धर्म भावना पैदा की मगर धर्म को खाने-कमाने का साधन नहीं बनने दिया। प्रस्तुत है स्वामीजी से ***चंद्रबोस*** *का एक संवाद :-*

महाराज जी, आपकी अपने बारे में क्या राय है?

खुद को आम आदमी मानता हूँ और जनसेवक भी। मुझे खुशी है कि परमात्मा ने मुझे गरीबों और दुःखी लोगों की सेवा करने के लिए चुना है। मैंने मानव मन में भगवान के प्रति प्रेम पैदा करने के लिए लगातार प्रयास किया है। मैं गरीबों की सेवा के लिए और लंबी उम्र चाहता हूँ।

क्या आप भी सुख-दुख का अहसास करते हैं।

वैसे तो साधु दुख-सुख से परे होते है लेकिन मै उस समय खुश होता हूं, जब लोगों में प्रेम और सद्भाव दिखाई देता है। लोगों के कष्ट और पीड़ा देखकर मुझे दुःख होता है।

आप अपने शुरुआती जीवन के बारे में कुछ बताएं?

मेरा जन्म 1880 में हुआ था। शुरु से ही मुझे सांसारिक विषमताएं परेशान करती थीं। इसी के चलते मैंने इस वर्ष की उम्र में घर छोड़ दिया था। मै करीब दस वर्ष तक उत्तराखंड में परमात्मा की खोज में भटकता रहा। वर्ष 1900 में मैंने स्वामी पूर्णानंद महाराज से मुनि की रेती (ऋषिकेश) में संन्यास की दीक्षा ली। उन्होंने ही मेरा नाम कल्याणदेव रखा। कुछ वर्षों तक गुरुजी के पास रहा और बाद में जनसेवा के लिए निकल पड़ा। 1925 में मै पहली बार गांधीजी से मिला और उनसे प्रेरणा पाकर जनसेवा के कार्य को तेज किया। मैंने अपने अन्य साथियों के गाँव-दर-गाँव घूमकर आजादी का अलख जगाई। आजादी के बाद मैंने अपना ध्यान शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर लगाया। मेरे निमंत्रण पर नवंबर 1958 में नेहरू जी शुक्रताल आए और उन्होंने मेरे शिक्षा संबंधी प्रयासों में भरपूर सहयोग का आश्वासन दिया।

पद्मश्री से सम्मानित किए जाने पर आपको कैसा लगा?

राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने 1982 में मुझे पद्मश्री का सम्मान प्रदान किया। मैंने शिष्यों और मित्रों के आग्रह पर इस सम्मान को स्वीकार किया। हालांकि मैं आज भी इस बात में विश्वास रखता हूं कि कोई भी उपाधि या सम्मान साधु-संतों के लिए निरर्थक है।

आपने गाँधीजी से प्रेरणा हासिल की, आज के दौर में आप किस हद तक उनके सिद्धांतों का पालन कर रहे हैं?

मैंने गाँधीजी के सभी सिद्धांतों को जीवन में ढाला है। सर्वधर्म समभाव और अहिंसा का मैं प्रबल समर्थक हूँ। आज भी मैं चरखे से कते मोटे सूत का कपड़ा पहनता हूं। मेरी जरूरतें बेहद सीमित हैं। पिछले पंद्रह साल से मैं एक ही कंबल को प्रयोग करता आ रहा हूं। शिक्षा के संबंध में मैंने गाँधीजी की मान्यताओं को ही लागू करने का प्रयास किया है। आज भी मैं मेहनतकश लोगों से भिक्षा स्वीकार करता हूं।

हर वर्ष आपको करोड़ों रुपए का दान मिलता है, उस धन का कैसे उपयोग करते हैं?

इस धन का अधिकांश हिस्सा शैक्षणिक संस्थाओं को चलाने और नई संस्थाओं के निर्माण में खर्च हो जाता है। बाकी धन गौशाला तथा आश्रमों आदि की व्यवस्था में लग जाता है। मैं और अधिक शिक्षण संस्थाएँ खोलने का इच्छुक हूं ताकि गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले लेकिन धन की कमी के कारण मैं यह कार्य नहीं कर पा रहा हूं।

आपने शुक्रताल में ही सबसे अधिक कार्य क्यों कराए?

शुक्रताल पौराणिक जगह है। महाभारत काल में शुकदेव महाराज ने यहाँ राजा परीक्षित को कथा सुनाई। करीब एक शताब्दी पहले स्वामी हरिबाबा ने वटवृक्ष के नीचे रेत के टीले पर भागवत कथा सुनाई थी। त्रिवेणी में प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने मुझे शपथ दिलाई थी कि तुम्हें शुक्रताल के मठ व मंदिरों का उद्धार करना है। इसी सबसे प्रेरित होकर मैंने शुक्रताल में थोड़ा-बहुत कार्य कराया। यह भी मेरी इच्छाओं में शामिल है कि मैं जिले भर के जीर्ण-शीर्ण आश्रमों एवं मंदिरों का उद्धार कराऊं लेकिन 'धनाभाव' हर बार आड़े आ जाता है। मैं शिक्षा प्रेमियों और धर्मबंधुओं से अनुरोध करता रहता हूँ कि वे मेरी सहायता करते रहें।

सत्र - 1993-94

राजनीति में साधुत्व की आवश्यकता है

-स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि

स्वामी सत्यमित्रानंद गिरी देश के उन गिने-चुने विद्वान संतों में से है जो निरे साधु नहीं विचारक भी है। उन्होंने विश्वभर में हिन्दू मत के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे प्रखर राष्ट्रवादी तो है ही साथ में सांप्रदायिक सौहार्द की जीती-जागती मिसाल भी है। धर्म और राजनीति की घालमेल तथा अन्य कई बिंदुओं पर विहिप के वरिष्ठतम न्यासी तथा भारतमाता मंदिर के संस्थापक स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि के साथ ***विनीत वशिष्ठ*** *की बातचीत के प्रमुख अंश :-*

स्वामी जी, हिन्दू धर्म का स्वरूप क्या है?

हिन्दू धर्म का स्वरूप विस्तृत और दीर्घकालीन है। सभ्यता के प्रारंभ से पूर्व काल में वैदिक मंत्रों, वैदिक ऋचाओं और वैदिक चिंतन द्वारा हिन्दू धर्म की स्थापना हुई। मानव की आवश्यकता चिंतन है, इसीलिए धर्म की आवश्यकता है। कर्म से ही मर्यादा उत्पन्न होती है और मनुष्य माता और पत्नी में अंतर समझता है। हिन्दू धर्म ने मर्यादाओं का ज्ञान दिया। हिन्दू धर्म ही बताता है कि धर्म का आचरण करने से अर्थ की प्राप्ति होती है, कर्म की प्राप्ति होती है और उसके बाद मोक्ष का प्राप्ति होती है। हिन्दू धर्म बहुत ही उदार है जिसका प्रमाण यह मंत्र है- सर्वे भवंतु सुखिन:। हिन्दू धर्म की विशेषता यह भी है कि हमने देवताओं के अलावा जल, अग्नि, पृथ्वी आदि को भी पूजा है। यह धर्म पूर्णतया वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है।

क्या धर्म एवं राजनीति एक दूसरे से जुड़े हैं?

राजनीति यदि धर्म विहीन हो जाएगी तो वह कूटनीति हो जाएगी। राजनीति में धर्म को पूर्ण रूप से नहीं आना चाहिए। यदि धर्म के लोग राजनीति में आ जाएँगे तो जनसामान्य मार्गदर्शन के लिए किसके पास जाएँगे। धर्म का प्रभाव राजनीति पर पड़े यह तो ठीक है लेकिन साधु-संत पूर्ण रूप से राजनीति में आएँ यह आवश्यक नहीं। चंद्रगुप्त, रामचंद्र और श्रीकृष्ण के आचरण के आधार राजनीति एवं धर्म के संबंध को स्पष्ट किया जा सकता है। राजनीति में साधुओं की नहीं बल्कि साधुत्व की आवश्यकता अवश्य है। राजनीति में रहने वालों के लिए साधु बनना आवश्यक नहीं है परंतु उनमें साधुत्व की आवश्यकता है।

साधुओं का क्या दायित्व है, अहिंसा परमोधर्म: को आप किस तरह देखते है?

साधुओं का दायित्व लोगों को आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाना है, समाज का दिशा-निर्देशन भी उनके दायित्वों में शामिल है। अहिंसा परमोधर्म: ठीक है परन्तु धर्म का पालन करते-करते कायर बन जाना उचित नहीं है। यदि कोई हमारे घर की स्त्री को जोर-जबर्दस्ती ले जाये और हम अहिंसा का पालन करने के लिए मूक दर्शक बने रहे तो ऐसी अहिंसा कायरता है। अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए यदि हमें कोई हिंसा करनी पड़ती है तो यह हिंसा भी अहिंसा ही कहलाएगी।

वर्तमान परिस्थितियों में क्या धर्म की परिभाषा के पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है?

धर्म की परिभाषा के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता तो नहीं दिखाई पड़ती परंतु धर्म की वास्तविक परिभाषा क्या है इसे व्याख्यायित करने की आवश्यकता है। धर्म का मूल्यांकन तो नहीं हुआ है परंतु इसके मानने वालों के आचरण में फर्क पड़ा है। आज के माहौल में धर्म की व्याख्या करने वालों के साथ धर्म का पालन करने वालों का सम्मान भी होना चाहिए।

संन्यासी किसे कहा जाएगा?

गीता के अनुसार अपनी कामनाओं को कम करते हुए कर्तव्यों का पालन करने वालों को 'संन्यासी' कहा गया है। बाद में आदि शंकराचार्य के समय में दायित्वों को पूरा करते हुए नियम, संयम व परोपकार का कार्य करने के लिए जो संस्था निर्मित हुई वह संन्यासी थी। त्याग, तपस्या व महिलाओं से दूरी बनाये रखना, नशीली वस्तुओं का सेवन न करना ही वर्तमान में संन्यास का पालन करना है।

समाज कल्याण के लिए क्या राजनीति ही एकमात्र साधन है?

समाज कल्याण के लिए राजनीति बहुत छोटी चीज है। समाज कल्याण के लिए अज्ञान, अशिक्षा, बीमारी, दहेज प्रथा जैसे बहुत कार्य है जो राजनीति के बिना किए जा सकते है। आजकल राजनीति तो केवल चुनाव तक सीमित रह गई है।

राजनीति को धर्म की आवश्यकता तो सदा से रही है लेकिन क्या आप महसूस करते है कि आज धर्म को राजनीति की आवश्यकता है?

मैं ऐसा महसूस नहीं करता। हाँ, धर्म की कुछ छाया राजनीति पर जरूर रहनी चाहिए जिससे कि राजनीति भ्रष्टाचार, अनाचार से मुक्त रहे। यह तभी होगा जब उसके मन में धर्म का भाव होगा। अत: राजनीति को लुटेरा बनने से रोकने के लिए राजनीति में धर्म की आवश्यकता है।

पत्रकारों के दायित्व को आप किस तरह से रेखांकित करते है?

पत्रकार सत्य-पथ का पालन करें। उनका कर्तव्य है कि लोगों में ऐसा जागरण लाएँ जिससे वे अच्छे साहित्य के पठन-पाठन की ओर आकर्षित हो और वैचारिक चिंतन के लिए आगे आएँ।

सत्र - 1992-93

राष्ट्रीय स्वाभिमान के साथ सौदेबाजी सहन नहीं

-स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती

बदायूँ संसदीय क्षेत्र से दसवीं लोकसभा के भाजपा सांसद स्वामी चिन्मयानंद परमार्थ आश्रम हरिद्वार के परमाध्यक्ष होने के साथ-साथ एक प्रखर वक्ता एवं समाजसेवी हैं। हरिद्वार में आयोजित एक समारोह में उनसे वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को लेकर बातचीत की गई। प्रस्तुत है राजीव वर्मा के बातचीत के प्रमुख अंश :-

मायावती सरकार को समर्थन देने के बारे में आपकी पार्टी की नीति क्या है?

सामाजिक समरसता, उत्तर प्रदेश में असंवैधानिक सरकार का पतन करना और लोगों में संविधान के प्रति, शासन के प्रति विश्वसनीयता पैदा करना। अराजकतत्वों और माफिया तत्वों के बढ़ते प्रभाव पर अंकुश लगाना। विकास की गति जो जड़ हो गई थी उसे पटरी पर लाना और सरकारी संपत्ति के दुरुपयोग को रोकना। इस सरकार को समर्थन का मुख्य उद्देश्य दलितों में आत्मविश्वास पैदा करने के लिए एक दलित महिला को शासन के शिखर पर पहुँचाना रहा है।

सुना गया है कि इस मुद्दे पर बहुत पहले से आप की पार्टी में विचार-विमर्श चल रहा था?

यह समर्थन अंत्योदय का हिस्सा है। दरअसल पं. दीनदयाल उपाध्याय ने समाज के अंतिम व्यक्ति की सत्ता में साझेदारी एवं विकास सुनिश्चित करने का मुद्दा उठाया था। इसके लिए उन्होंने अंत्योदय नाम का एक कार्यक्रम दिया जिसको जयप्रकाश जी ने भी स्वीकार किया था। दलितों को यदि सत्ता तक नहीं पहुँचाया जाता तो उनके मन में समाज, लोकतंत्र और वर्तमान व्यवस्था के प्रति असंतोष पैदा हो जाता। भाजपा ने मौका के मिलते ही इस असंतोष को खत्म किया जबकि दूसरी पार्टियों ने तो बाबू जगजीवन राम जैसे व्यक्ति को प्रधानमंत्री नहीं बनने दिया था। विभिन्न दल दलितों को बतौर वोट बैंक प्रयोग कर रहे है मगर उन्होंने कभी इस तरह की पहल नहीं की। उनको अवसर बार-बार मिले उसका उपयोग भी उन्होंने किया। यहाँ तक कि वी.पी. सिंह ने मंडल कमीशन की बात की, दलितों के उत्थान की बात की लेकिन जनता दल ने आज तक किसी दलित को मुख्यमंत्री नहीं बनाया। राष्ट्रीय मोर्चा ने किसी दलित को मुख्यमंत्री नहीं बनाया। लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने अवसर मिलते ही यह काम किया। महाराष्ट्र में जब हमारी शिवसेना के साथ सरकार बनी तो हमने

गोपीनाथ मुंडे को उपमुख्यमंत्री बनाया जो दलित है। हमारी सोच तो सामाजिक समरसता की है। हमारा विश्वास है कि जब तक दलित जातियों के मन में संपूर्ण समाज के प्रति अपनत्व का विश्वास पैदा नहीं होगा तब तक सामाजिक विघटन को नहीं रोका जा सकता। जो महिला मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठी है मुलायम सिंह उसे निगल जाना चाहते थे। मगर हमने उसे मुख्यमंत्री बनाकर मुलायम सिंह को बौना कर दिया।

इस सरकार को आपकी पार्टी कब तक समर्थन देगी?

जब तक वो सरकार चलाना चाहे, हमारा समर्थन जारी है और जारी रहेगा। लोग हमसे क्यों पूछ रहे हैं। मुलायम सिंह से किसी ने नहीं पूछा था कि बसपा गठबंधन तुम्हारे साथ कितने दिन रहेगा। चंद्रशेखर से किसी ने नहीं पूछा था कि कांग्रेस का समर्थन तुम्हारे साथ कितने दिन रहेगा।

इस समय आपकी पार्टी के जनाधार की क्या स्थिति है।

हमारा जनाधार मजबूत हुआ है। पहले से बढ़ा है। हमने उस राजनैतिक दुष्प्रचार का पर्दाफाश किया है जो भारतीय जनता पार्टी के संबंध में दूसरे लोग कर रहे थे। दूसरे तमाम दल ये कहते थे ये तो बनियों, ब्राह्मणों की पार्टी है। हमने देश को बताया कि हम जातियों के आधार पर न सरकार बनाते हैं, न चुनाव लड़ाते है और न राजनीति करते है। हमारा विश्वास सबको साथ लेकर चलने और सबके अंदर राष्ट्रीय भावना पैदा करने में है। देखिए, मायावती और कांशीराम के मन में भाजपा के प्रति कितना जहर था, वो जहर दूर हुआ। वे नारा लगाते थे 'तिलक-तराजू और तलवार, सबको मारो जूते चार' और अब यह नारा गायब है। अब तो नारा लग रहा है 'तिलक-तराजू और तलवार, सबकी बोलो जय-जयकार।'

विश्व हिन्दू परिषद् ने बनारस में जलाभिषेक और मथुरा आंदोलन शुरू किया था, क्या उसमें आपकी पार्टी का परोक्ष समर्थन था?

देखिए, विश्व हिंदू परिषद के कार्यक्रमों से भारतीय जनता पार्टी का कोई मतलब नहीं। वैसे विहिप अपने आप में एक सक्षम संस्था है। उसे किसी राजनैतिक समर्थन की आवश्यकता नहीं है। विहिप हिंदू समाज से जुड़ा हुआ एक सशक्त आंदोलन है और उसने विश्व के तमाम संगठनों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। विश्व हिंदू परिषद् के समर्थन की आवश्यकता किसी राजनैतिक दल को हो सकती है मगर दल के समर्थन की आवश्यकता विहिप को न कभी थी और न है।

आजकल अपराध और राजनीति का गठजोड़ एक महत्त्वपूर्ण विषय है, जिस पर बहस चल रही है। क्या आपकी पार्टी अपराधियों से मुक्त है?

अपराध और राजनीति के गठजोड़ को तोड़ने के लिये ही हमने मायावती को समर्थन दिया। राजनीति में अपराध के जनक मुलायम सिंह को किनारे कर दिया। भाजपा में कम से कम पार्टी के नेतृत्व में अपराध दूर तक नहीं है। पार्टी की शक्ल और चरित्र उसके नेतृत्व से आंका जाता है। कार्यकर्ताओं में जब जनाधार बढ़ता है,

पैमाने बढ़ते है तो किसी पर कोई आरोप लग सकता है, छोटा-मोटा कांड हो सकता है और उसको दूर करने, समझाने और रोकने का प्रयास लोग करते हैं। लेकिन नेतृत्व तो हमारा निरपराध हो, भाजपा का नेतृत्व बेदाग है। किसी की हिम्मत नहीं कि नेतृत्व को अपराधी साबित कर दे।

आगामी चुनाव में आपकी पार्टी के प्रमुख मुद्दे कौन-कौन से होंगे?

राजनीति में अपराधी तत्वों का प्रवेश रोकना। इसके अलावा देश में स्वदेशी अर्थव्यवस्था को स्थापित करना, भारत को कर्ज मुक्त बनाना, रोजगार के अधिकतम अवसर उपलब्ध कराना, राष्ट्रीय स्वाभिमान और सम्मान के विरुद्ध किसी भी बहुराष्ट्रीय कम्पनी से कोई समझौता पर वार्ता नहीं करना। कश्मीर से धारा-370 हटाना और उसे राष्ट्र की मुख्य धारा में लौटाना। हम वर्चस्वी और मजबूत सरकार के पक्ष में है। महिला सम्मेलन में भाग लेने के लिए चीन सरकार ने अरुणाचल की महिलाओं का वीजा नहीं दिया, क्योंकि वह अरुणाचल को अपना हिस्सा बताता है। इस सारे प्रकरण पर सरकार चुप रही। ऐसी सरकार के होने या न होने का क्या लाभ है? अगर छोटा सा इजरायल बिना किसी शर्त के सम्मान और स्वाभिमान के रह सकता है, तो घास की रोटियाँ खाकर देश के सम्मान और स्वाभिमान चलाने वालों के वंशधर अपना सम्मान क्यों नहीं बचा सकते? हम गरीबी में जी लेंगे, लेकिन राष्ट्रीय स्वाभिमान के साथ सौदेबाजी सहन नहीं करेंगे। ये हमारा स्पष्ट चुनावी मुद्दा है।

इस बार त्रिशंकु संसद बनने की संभावना व्यक्त की जा रही है, आपकी पार्टी को बहुमत मिलेगा?

इस देश की जनता अब नेताओं की बेवकूफी नहीं ढोना चाहती। आप देखिए बिहार में लोग कहते थे कि किसी को बहुमत नहीं मिलेगा। यहाँ मिली-जुली सरकार बनेगी। उड़ीसा में कहते थे यहां किसी को बहुमत नहीं मिलेगा महाराष्ट्र में कहते थे यहां किसी को बहुमत नहीं मिलेगा, मिलीजुली सरकार बनेगी। लेकिन आपने देखा कि जनता ने हर जगह जो सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरा, उसको बहुमत दे दिया। आज सबसे बड़ी अग्रिम पार्टी के रूप में भारतीय जनता पार्टी ने हस्ताक्षर दर्ज कराया है। इसलिए जनता अब भाजपा को बहुमत देने के पक्ष में मूड बना रही है।

चर्चित एनरॉन परियोजना के रद्द करने का राजनीतिक मतलब निकाला जा रहा है, इस पर आप क्या कहना चाहेंगे?

जो लोग एनरॉन परियोजना पर समझौता करने के लिए शरद पवार और केंद्र सरकार की आलोचना कर रहे थे वही लोग आज एनरॉन परियोजना गोपीनाथ मुंडे द्वारा रद्द कर दिए जाने पर उसे राजनैतिक कह रहे है। जो लोग इस परियोजना को राष्ट्र के सम्मान के विरुद्ध मानते थे वही लोग वही अखबार, मीडिया और दूसरे अन्य माध्यमों से महाराष्ट्र सरकार को गालियाँ दे रहे है।

राजीव हत्याकांड पर आपकी पार्टी द्वारा सोनिया के आक्रोश का समर्थन

किया जा रहा है, क्यों?

हमारी पार्टी का समर्थन राजीव गाँधी की ही नही वरन सभी हत्याओं की जाँच के विलंब को लेकर है। हम लोगों की पीड़ा को समझते है। वो चाहे राजीव गाँधी के परिवार की हो, चाहे दिल्ली के दंगों में मारे गये परिवारों की। राजीव गाँधी के हत्या की जाँच में और चार साल विलंब हुआ है जबकि '84 के दंगों की जांच में बारह साल लग गए। यह उससे भी अधिक चिंता का विषय है। दंगे में तीन हजार लोगों के हत्यारों में से अभी तक एक भी गिरफ्तार नहीं हुआ। दंगे के आरोपी केंद्र में मंत्री बने बैठे है।

एक किताब छपी है, बड़ी विस्तृत किताब है। अंग्रेजी में आई है। कल उसकी समीक्षा में पढ़ रहा था। पंजाब में जो आतंकवाद पनपा उसमें एक ऐसे मंत्री का हाथ था जो आज भी केंद्र में मंत्री है। सवाल ये है कि अगर सही जाँच हो तो लोग अपराधों की साजिश से सत्ता में आने की बात सोचना भी छोड़ देंगे।

जाँच में देरी के लिए आप किसको दोषी मानते है?

जाँच में जो देरी हो रही है उसके लिये केवल सरकार जिम्मेदार है। सरकार ही हर जाँच के लिए कमीशन नियुक्त करती है। उसके साधन उपलब्ध कराती है, उसको समयबद्ध निर्णय देने के लिये निर्देश देती है। राजीव गाँधी की हत्या की जाँच में तो जो विलंब हो रहा है उसको लेकर अर्जुन सिंह बहुत परेशान है। अर्जुनसिंह की ये परेशानी अभी छह महीने पहले पैदा हुई है। उसी सरकार में प्रधानमंत्री के बाद महत्वपूर्ण स्थान रखते थे तब उनको ये चिन्ता नहीं थी। जिस दिन इस्तीफा दिया उसी दिन से उनको चिन्ता लगी है। कांग्रेसी यदि इन बातों में ईमानदार होते तो देश में इस तरह के राजनैतिक हत्याएँ नहीं होती।

अपराध के मुद्दे पर मुलायम सिंह ने आपको पार्टी को बहस के लिए आमंत्रित किया है, इस पर आप क्या कहना चाहेंगे?

निश्चित ही यह उनका एक नया अपराध है। उन्होंने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी में सबसे ज्यादा अपराधी है। ये झूठ बोलने का उन्होंने नया अपराध किया है। यह बहस का मुद्दा भी नहीं है ये तो आंकड़ों से देखा जा सकता है, किसके खिलाफ कितने मुकदमें दर्ज है। मुलायम सिंह जब पहली बार मुख्यमंत्री हुए थे, तब कितने मुकदमें थे उनके खिलाफ पुलिस में, और कल्याण सिंह के खिलाफ कितने मुकदमें। अन्ना शुक्ला, डी.पी. यादव उनके मंत्रिमंडल में आये, उनके टिकट से चुने गए। प्रदेश के जितने माफिया है सब उनके साथ है और स्टेट गेस्ट हाउस में क्या हुआ था, वो सत्संग हुआ था? वो अपराध नहीं था? इस तरह का कोई प्रायोजित अपराध भारतीय जनता पार्टी ने किया है कभी? विधान सभा में उन्होंने लाठी चलवाई, प्रेस पर उन्होंने हमला किया, न्यायालय पर हमला किया फिर भी उनको अपराध नज़र नहीं आता है तो ये उनकी विशेषता है।

प्रशिक्षु पत्रकारों के लिए कोई शुभकामना?

पत्रकारिता के जो मापदंड हैं उनके प्रति आप कितने निष्ठावान है, यही पत्रकार के लिए एक योग्यता होती है। पत्रकारिता के क्षेत्र में जिस तरह से प्रदूषण पैदा हुआ है उसे खत्म करने के लिए गणेश शंकर विद्यार्थी जैसी परंपरा के लोग चाहिए। मुलायम सिंह के विवेकाधीन कोष से पैसा लेकर की गई पत्रकारिता न पत्रकारिता होती है न उससे राष्ट्र का स्तर सुधरता है।

□

सत्र 1992-93

मानवसेवा ही सबसे बड़ा धर्म है

-स्वामी चिदानंद सरस्वती

देश-विदेश में सांप्रदायिक सौहार्द की पताका फहराते घूमने वाले युवा संन्यासी स्वामी चिदानंद सरस्वती परमार्थ निकेतन ऋषिकेश के अध्यक्ष और भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद के चेयरमैन हैं। उन्होंने हिन्दू विश्वकोश के प्रकाशन का गुरुतर कार्य भी हाथ में लिया है। प्रस्तुत है ***कमलसिंह रावार*** *का उनसे एक संवाद :-*

परमार्थ निकेतन की स्थापना कब और कैसे हुई?

परमार्थ निकेतन की स्थापना सन् 1942 में की गई और इसकी स्थापना महामंडलेश्वर स्वामी शुकदेवानंद महाराज ने की थी। मानव सेवा के उद्देश्य से निकेतन की स्थापना की गई। मैं यहां पर एक साल पूर्व अध्यक्ष बना। हमारे यहां सभी संतों का आशीर्वाद पाने के बाद अध्यक्ष पद दिया जाता है।

परमार्थ निकेतन की स्थापना के पीछे क्या उद्देश्य थे?

परमार्थ निकेतन के मुख्य उद्देश्य निर्धनों की सहायता शिक्षा, चिकित्सा और सभी धर्मों के प्रति समादर भाव रखते हुए मानवता, आध्यात्मिकता एवं समानता पर आधारित सिद्धांतों का विकास करना।

जनकल्याण के लिए आपके क्या-क्या कार्यक्रम हैं?

हमारे यहां जनकल्याण के कार्यक्रमों में यात्रियों के लिए नि:शुल्क आवास की व्यवस्था है। गरीब बच्चों के लिए स्कूल का निर्माण और चिकित्सा व्यवस्था आदि कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। हमारा उद्देश्य कार्यक्रम चलाने से है न कि प्रचार के लिए।

राजनीति और धर्म के बारे में आपके विचार क्या है?

मेरा मानना है कि राजनीति में धर्म हो लेकिन धर्म में राजनीति न हो।

देश में धर्म के नाम पर राजनीतिक पार्टियां चुनाव लड़ रही हैं?

किसी भी राजनीतिक पार्टी को ले लें तो वह किसी न किसी ऐसे मुद्दे पर चुनाव लड़ रही है जिससे देश को, समाज को जाति को या सभी धर्मों को थोड़ा-बहुत नुकसान हो रहा है। मुख्य बात यह है कि इससे देश को सबसे अधिक नुकसान हो रहा है। राजनीतिक पार्टियों को सेवा के भाव से काम करना चाहिए। भावनाएं भड़काकर स्वार्थ सिद्ध करना ठीक नहीं।

हिंदू धर्म को समर्पित कई महात्मा और स्वामी संसद सदस्य बने हैं, आप इनसे क्या अपेक्षा रखते हैं?

इस बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

आप भारतीय दर्शन की किस धारा के अनुयायी हैं?

मैं केवल मानवता की सेवा को सबसे बड़ा धर्म समझता हूं। मैंने सभी धर्मों का अध्ययन किया है, सभी धर्मों से एक ही बात निकल कर आती है कि मानव की सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। किसी धारा विशेष का अनुयायी होने से देश व समाज को लाभ नहीं होगा। आज देश में सर्व धर्म की ही आवश्यकता है क्योंकि सभी धर्मों को एक साथ पूरा सम्मान केवल भारत जैसे देश में ही मिल सकता है।

आज भारत 'गेट' जैसे समझौते पर हस्ताक्षर कर विदेशी कंपनियों को आमंत्रित कर रहा है। इस बारे में आपके विचार?

अभी मैंने इस बारे में अध्ययन नहीं किया है।

जाति या धर्म के आधार पर देश के विभाजन की बात कहां तक सही या गलत है।

मैंने पहले भी कहा कि राजनीतिक पार्टियां इस तरह के मुद्दे उछाल कर देश के टुकड़े करने की फिराक में हैं। इसको रोकने के लिए हम सभी को मिलकर राष्ट्र विरोधी ताकतों से लड़ना होगा। देश टूटेगा तो समाज और संस्कृति भी प्रभावित होगी।

आपके परमार्थ निकेतन की अन्य शाखाएं कहां-कहां हैं?

परमार्थ निकेतन की शाखाएं ऋषिकेश के अलावा हरिद्वार, दिल्ली, अमेरिका, आस्ट्रेलिया और यू.के. में हैं।

आपकी आय के स्रोत क्या हैं?

हमारी आय के स्रोत हमारे भक्तों द्वारा दी जाने वाली राशि है। हमारे यहां सदस्य बनने के लिए भी शुल्क लिया जाता है, लेकिन यात्रियों से रहने का कोई शुल्क आदि नहीं लिया जाता है।

□

सत्र - 1993-94

मंदिरों में सम्पत्ति जुटाना गलत नहीं

-महंत तारापुरी

*महंत तारापुरी करीब छह दशक से श्री पंचायती निरजनी अखाड़े की व्यवस्थाओं से जुड़े रहने के साथ साधनारत योगी भी हैं। वे मानते हैं कि अखाड़ों के माध्यम से साधु-संतों में एकता पैदा होती है और एकता के बिना आत्मिक व आध्यात्मिक विकास संभव नहीं है। प्रस्तुत है महत तारापुरी से **धीर सिंह सैनी** की एक बातचीत:-*

बाबा आपने किस बात से प्रेरित होकर संन्यास लिया ?

जहाँ तक मेरे संन्यास लेने का प्रश्न है बचपन से ही मैं एकात की खोज में रहा। 12 वर्ष की अवस्था में मैंने घर छोड़ा और हरिद्वार निरंजनी अखाड़े में आ गया।

क्या आप ऐसा नहीं मानते कि साधना तो गृहस्थ होकर भी की जा सकती है?

हाँ, यह भी सच है - गृहस्थी भी साधना करते हैं। साधना में गृहस्थी कभी संन्यासियों से आगे निकल जाते है, लेकिन साधना के लिए शांति व एकान्त अच्छा होता है।

वर्तमान में विभिन्न धर्म संप्रदायों में गुटबंदी को आप किस रूप में देखते हैं?

यह बात सही है कि विभिन्न धर्म सप्रदायों में गुटबंदी हो रही है। इससे किसी धर्म या संप्रदाय का भला नहीं होगा। उन्नति के लिए एकता जरूरी है। बिना एकता के विकास असंभव होता है। पूर्ण विकास के लिये संगठन जरूरी है। आत्मिक और आध्यात्मिक विकास के लिए भी एकता और संगठन जरूरी है।

निरंजनी अखाड़ा किन विचारों या सिद्धांतों के आधार पर बना?

अखाड़े कई है, और बहुत पुराने हैं। इन अखाड़ों का संगठन हिंदू सस्कृति को मुसलमानों के आक्रमणों से बचाने के लिये किया गया था। इन अखाड़ों में उस समय हर प्रकार की शिक्षा-दीक्षा दी जाती थी। अब ये अखाड़े धर्म प्रचार के कार्यों में लगे है।

अयोध्या विवाद के विषय में आपकी क्या राय है?

अयोध्या में रामलला का मंदिर था, यह साक्ष्यों से प्रमाणित हो चुका है। अत:

मुसलमानों को वह स्थान राममंदिर के लिए हिंदुओं को सौंप देना चाहिए।

आपकी राय में धर्मनिरपेक्षता का क्या मतलब है?

धर्मनिरपेक्षता का मतलब है संविधान में सब धर्मों को समान अधिकार, उन्नति और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सही सोच और सही दिशा की जरूरत है। जब भी ये दिशा बिगड़ती है तो समस्याएँ आ खड़ी होती हैं।

कुछ समय से संत-महात्माओं की यूनियनबाजी, अखाड़ों, मंदिरों व धर्मशालाओं के नाम पर सम्पत्ति खड़ी करने के प्रयासों के बारे में आपका क्या कहना है?

यूनियन होना अति आवश्यक है। बिना यूनियन के प्रजातंत्र में कोई आवाज सुनता ही नहीं है। रही बात सम्पत्ति की, तो इसके बिना भी कोई काम नहीं चलता। संत महात्माओं में सम्पत्ति किसी एक की नहीं होती। एक के बाद एक संत महात्मा आते रहते हैं, सब महात्माओं का उस पर अधिकार होता है। देखरेख भी करनी पड़ती। इसको 'सम्पत्ति खड़ा करना' कहना गलत होगा।

हरिद्वार के विकास के बारे में आपका क्या सोचना है?

भारतवर्ष में चार स्थान ऐसे है जहाँ कुंभ, अर्द्धकुंभ होते है- हरिद्वार, इलाहाबाद, उज्जैन और नासिक। हरिद्वार उत्तर भारत का पहला ऐसा तीर्थ स्थान है जहाँ भारत के ही नहीं विश्व के प्रत्येक कोने से यात्री आते है और गंगा स्नान कर पुण्य के भागीदार होते हैं। इसलिए हरिद्वार के विकास के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए।

आपके अखाड़े में व्यवस्थापन कैसे चलता है?

हमारे अखाड़े में व्यवस्थापन ठीक सरकार की तरह चलता है। अखाड़े में साधुओं के तबादले होते हैं, श्रीमहंत, सचिव, कोठारी, थानापति आदि अखाड़ों में पद होते हैं। इस प्रकार अखाड़ों की व्यवस्था चलती है।

सत्र - 1992-93 □

हमारा संवाददाता विश्वसनीय है

-अतुल माहेश्वरी

पत्रकारिता लोगों के रहन सहन, उनकी दिनचर्या और दैनंदिन की समस्याओं को समझने का सबसे मजबूत माध्यम है। यह समाज का आईना है और लोकतंत्र की सजग प्रहरी भी। पत्रकारिता जगत में हर पल नए प्रयोग हो रहे हैं। ऐसा ही एक प्रयोग है- आंचलिक और ग्रामीण पत्रकारिता को बढ़ावा देना तथा रोजी-रोटी की लड़ाई में उलझे आम आदमी को अखबार से जोड़ना। 'अमर उजाला' इस प्रयोग का एक उदाहरण है। करीब आधी शताब्दी पूर्व शुरू हुए इस अखबार ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश की पत्रकारिता में नए मानदंड स्थापित किए हैं। पत्रकारिता से जुड़े कुछ सवालों पर अमर उजाला, मेरठ के संपादक अतुल माहेश्वरी से रामकुमार का संवाद प्रस्तुत है :-

अमर उजाला का प्रकाशन कब शुरू हुआ?

इसका प्रकाशन 1948 में शुरू हुआ। तब से 1996 तक इसके पाँच संस्करण अलग-अलग शहरों से शुरू हो चुके हैं।

समाचार पत्र निकालने का मुख्य उद्देश्य क्या होना चाहिए?

सही अर्थों में समाजहित और देशहित को ध्यान में रखना ही समाचारपत्र निकालने का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

अमर उजाला की कोई विशेष उपलब्धि बताइए?

यह क्षेत्रीय समाचारपत्र के रूप में सर्वाधिक सफल है। क्षेत्रीय समस्याओं को उठाने, जनता की आवाज को उठाने का अमर उजाला ने प्रयास किया है। हमने गली-मोहल्लों तक की समस्याओं को उजागर करके नया पाठक वर्ग तैयार किया और ग्रामीण पत्रकारिता को बढ़ावा दिया है।

आपके समाचार पत्र के पाठकों की संख्या पूर्वी उत्तर प्रदेश में कम क्यों है?

पूर्वी उत्तर प्रदेश में हमारा अखबार निकलता ही नहीं है। कानपुर से निकलना शुरू हुआ है, लेकिन यह भी उ.प्र. के मध्य में है। जब पूर्वी उत्तर प्रदेश में अखबार पहुँचता ही नहीं तो पाठक कहाँ से आएँगे?

समाचारपत्र में विज्ञापनों का समाचारों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

इस मामले में समाचार पत्रों की अपनी कुछ पुरानी परम्पराएँ होती है, उन्हीं

का पालन किया जाता है। आमतौर से विज्ञापन समाचारों को प्रभावित नहीं करते। छपने लायक चीजों को विज्ञापन के माध्यम से रोक पाना लगभग असंभव है। अलबत्ता ये जरूर है कि विज्ञापन-दाता को खबरों में नाममात्र का अतिरिक्त महत्त्व दे दिया जाए।

समाचारपत्र की सफलता किस बात पर निर्भर करती है?

पाठकों की आवश्यकता के अनुरूप सामग्री प्रदान करें तथा समाज और राष्ट्र के प्रति दायित्व का सही और ईमानदारी से निर्वाह करें। विश्वसनीयता भी बहुत बड़ी चीज है। विश्वसनीयता के अभाव में कोई अखबार सफल नहीं हो सकता। तकनीकी दक्षता और प्रशिक्षित लोगों की भी आवश्यकता होती है।

आप संवाददाताओं की नियुक्ति किस आधार पर और किन बातों को ध्यान में रखकर करते हैं?

संवाददाता का चरित्र और उसकी विश्वसनीयता का सर्वाधिक ध्यान रखा जाता है। उसे विवादास्पद नहीं होना चाहिए। समाचार को तोड़ने- मरोड़ने वाला न हो। लापरवाह और गैरजिम्मेदार लोगों से भी बचा जाता है वैसे प्रयास यह रहता है कि प्रशिक्षित और पत्रकारिता को समर्पित व्यक्तियों को अखबार में स्थान दिया जाए।

पश्चिमी उ.प्र. में अमर उजाला की बिक्री सर्वाधिक होने के पीछे अखबार के किस विभाग की अहम भूमिका होती है?

अखबार के सारे विभाग अपना-अपना कार्य पूरी मेहनत और लगन के साथ करते हैं। जैसे कार के चारों पहियों की कार चलने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ठीक वैसे ही सभी विभाग मिलकर अखबार को चलाते हैं। किसी के भी महत्व को कम करके नहीं आँका जा सकता।

अमर उजाला के पाठकों को यह कमी महसूस होती है कि एक जिले का समाचार दूसरे जिले में पढ़ने को नहीं मिल पाता, इसका क्या कारण है?

समाचार पत्रों का आकार पाठकों की आकाँक्षाओं के अनुरूप नहीं है। हम भी यह महसूस करते हैं। लेकिन खास महत्व की छोटी खबरों को प्रादेशिक पृष्ठ पर छापा जाता है। कम महत्व के समाचारों को स्थानीय पृष्ठ पर लगाया जाता है। समाचार पत्र का प्रारूप बनाते समय पाठकों की रुचि का विशेष ध्यान रखा जाता है।

आप एजेंसी के समाचारों पर कितना निर्भर करते हैं?

सिर्फ दस प्रतिशत। एजेंसी और अपने संवाददाता द्वारा दिये गये समाचार में से हम अपने संवाददाता को विश्वसनीय मानते हैं। जहाँ हमारे संवाददाता नहीं हैं, वहाँ के समाचारों के लिए एजेंसियों पर निर्भर रहना पडता है।

सरकारी दबाव से मुक्त रहकर कितने लोग लिख पाते हैं?

ये तो अखबार चलाने वालों पर निर्भर करता है कि गैरसरकारी और सरकारी

दबाव से मुकाबला करने की उनकी इच्छाशक्ति कितनी होती है।

भारत की लोकतान्त्रिक व्यवस्था में समाचार पत्रों की क्या भूमिका है?

प्रजातन्त्र में समाचार पत्रों की अति महत्वपूर्ण भूमिका होती है। देश में बढ़ी अनियमितताओं, घोटालों का पर्दाफाश अखबारों ने ही किया है, जैसे माधवसिंह सोलंकी की घटना को अखबारों ने ही उजागर किया और बोफोर्स तोप जैसे मामले को भी सबसे पहले अखबारों ने उठाया।

अखबारों में पत्रकारों के लिखने की स्वतंत्रता मालिकों द्वारा किन परिस्थितियों में रोकी जाती है?

स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए, पत्रकार को जनसामान्य या जनप्रतिनिधि से खिलवाड नहीं करना चाहिए। हमारा काम जनता को किसी भी घटना की सूचना भर देना है। समाचार देने की पूरी स्वतंत्रता पत्रकारों को होती है, लेकिन किसी की टोपी उछालने की नही। यदि स्वतंत्रता स्वच्छदता में बदल जाती है तो तब उसे जनहित को ध्यान में रखते हुये मालिक द्वारा रोकना जरूरी है।

वीडियो और टी.वी. पत्रकारिता के बढ़ने से प्रिंट मीडिया की क्या स्थिति होगी?

आडियो, वीडियो या टी.वी. से प्रिंट मीडिया को कोई खतरा नहीं है। अच्छा साहित्य और मुद्दे प्रिंट मीडिया की देन है। देश में देहात की बिजली, पानी, किसानों की समस्याए जिस तरीके से प्रिंट मीडिया उजागर कर सका है वह स्थिति वीडियो, टी.वी. की नहीं है। हां, एक बात जरूर है कि ये सब चीजें पश्चिम की देन है और अब पश्चिम के नये टी.वी. चैनल, सी.एन.एन आदि कुछ तो प्रभावित करेंगे ही। वैसे प्रिंट मीडिया की अपनी अलग महत्ता है इसलिए तमाम नई चीजें आ जाने के बावजूद इसका महत्त्व कम नहीं होगा।

आपके अखबार ने अपने क्षेत्र में राष्ट्रीय अखबारों के पाठकों की संख्या को प्रभावित किया है?

असल बात यह देखना है कि आप पाठक को जो कुछ दे रहे है उसका महत्व कितना है। पाठक को बनाए रखने के लिए उसकी नब्ज को पहचानना जरूरी होता है। राष्ट्रीय अखबारों को राष्ट्रीय चरित्र बनाने की सबसे बड़ी जरूरत है।

सत्र - 1992-93

□

पत्रकार सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करें

-अक्षय कुमार जैन

समाचारपत्र के संपादक के रूप में स्व. अक्षय कुमार जैन ने जो यश और ख्याति प्राप्त की, वह शायद ही किसी अन्य सम्पादक को मिली हो। हिंदी के मूर्धन्य पत्रकार और सम्पादक अक्षय जी को हिंदी के विकास में किये गए योगदान के लिए 'पद्मभूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया गया, वे इस पुरस्कार को पाने वाले प्रथम हिंदी के पत्रकार थे। लेकिन हिंदी के साथ भेदभाव के विरोध में उन्होंने इस सम्मान को लौटा भी दिया।

*वर्ष 1039 में श्री कृष्णदत्त पालीवाल के साथ 'सैनिक' से संपादकीय यात्रा शुरू की। इसके बाद उन्होंने 'सुदर्शन', 'वीर' में काम किया। दिसंबर 1946 में वे नवभारत से जुड़े और उप संपादक, संवाददाता, मुख्य उप संपादक समाचार संपादक, विशेष प्रतिनिधि आदि रहते हुए फरवरी 1955 में प्रधान संपादक हुए। अक्षय कुमार जैन ने लगभग 20 पुस्तकें लिखीं। "भारत पाक युद्ध डायरी" खासी चर्चित रही। अक्षय जी से **अरुण नैथानी** की एक भेंटवार्ता के प्रमुख अंश प्रस्तुत है :-*

आजादी के बाद की पत्रकारिता का लक्ष्य या मिशन क्या है?

1947 से पूर्व पत्रकारिता का पूर्ण लक्ष्य आजादी प्राप्त करना था। आम देशभक्त की तरह पत्रकार व सम्पादक जेल गए, लाठियाँ खाई और अन्य यातनाएं सही। स्वराज के बाद इसकी आवश्यकता खत्म हो गयी। जब चाहा जनता ने मत से सरकारें बदल दीं। देश के सामने अब राजनीतिक स्वतंत्रता के स्थान पर आर्थिक व सामाजिक आजादी लक्ष्य हो चला। आज पत्रकारों का दायित्व है कि सामाजिक अन्याय व सदियों से दबे कुचले लोगों को न्याय दिलाने में सहयोग करें। आर्थिक व सामाजिक आजादी ही आज पत्रकारिता का लक्ष्य है।

क्या आप पत्रकारिता के वर्तमान स्वरूप से संतुष्ट हैं?

मैं संतुष्ट हूँ भी और नहीं भी। संतुष्ट इस संबंध में हूँ कि समाचार पत्रों की साज-सज्जा व तकनीक में क्रांतिकारी परिवर्तनों से पाठक संख्या बढ़ी है। लेकिन अंग्रेजी का अंधानुकरण, अनुवाद व पत्रकारों की राजनीतिक प्रतिबद्धता से चिंतित हूँ। मैं जब तक नवभारत टाइम्स में रहा तो मैंने प्रयास किया कि यू.एन.आई., पी.टी.आई., समाचार भारती, हिंदुस्तान समाचार सेवा व नेफा के समाचार का अनुवाद करके उसे मौलिक रूप से लिखा जाए। भाषा मौलिक रूप में पाठक के पास जानी

चाहिए।

दूसरे आज समाचारों में राजनीतिक भेदभाव भी किया जाने लगा है। मैंने अपने कार्यकाल में आर.एस.एस., साम्यवादियों, कांग्रेस आदि सभी के समाचारों को पर्याप्त स्थान दिया। सब लोग अखबार पढते और पत्र को अपना बताते थे। इससे हमारी पाठक संख्या भी बढ़ी। वर्ष 1954 में जब मैं नवभारत टाइम्स में आया था तो इसकी प्रसार संख्या मात्र 16 हजार थी। वर्ष 1977 में जब मैंने संस्थान छोड़ा तो पत्र की प्रसार संख्या चार लाख से ऊपर थी।

लोग उस समय हिंदी के पत्रों को महत्व नहीं देते थे। बाद में जब हमारा पत्र लाखों में छपा तो सरकार ने पूछा भाई यह पत्र कौन सा है, जिसका प्रसार लाखों में है। फिर राजनेता व उद्योगपति हिंदी पत्रों को महत्व देने लगे। हमें इसका खमियाजा भी भुगतना पड़ा, कुछ लोगों ने हम पर हमला भी किया। लेकिन हमारा पत्र लोकप्रिय हुआ।

आपके लगाये वृक्ष को काटने की साजिश दिल्ली में नवभारत टाइम्स को अनुदित पत्र बनाकर की जा रही है, कुछ कहेंगे?

यह दुर्भाग्यपूर्ण है, यह खतरे की घटी न केवल नवभारत टाइम्स के लिए है, वरन् अन्य उन संस्थानों के लिए भी है जो अंग्रेजी अखबारों के समूह से निकल रहे हैं। यह हिंदी पाठक के प्रति साजिश है।

यदि नवभारत टाइम्स निकट भविष्य में अनूदित पत्र बना दिया गया तो क्या पाठक को अंग्रेजी संवाददाता न्याय दे सकेंगे?

यह एक महत्वपूर्ण विषय है। यदि कोई भी पत्र अनुवादित होता है तो हिंदी सवाददाताओं की शृंखला समाप्त कर दी जाएगी। हिंदी का पाठक वर्ग निम्न मध्यम वर्गीय ग्रामीण व छोटे किसान आदि हैं। हिंदी आम ग्रामीण की भाषा है। अंग्रेजी का संवाददाता वहा तक पहुँच ही नहीं पाएगा। उसकी दृष्टि ऐसी न होगी। अंग्रेजी का पाठक उच्च वर्ग से संबंधित है, चाहे वह नेता नौकरशाही या साधन सम्पन्न वर्ग हो। यदि हिंदी के पाठक के साथ न्याय करना होगा तो हिंदी बोलने वाले, हिंदी सोचने वाले व हिंदी लिखने वालों को ही संवाददाता बनाना होगा।

यह देखने में आया है कि दिल्ली के कथित राष्ट्रीय पत्र क्षेत्रीय समस्याओं या राष्ट्रीय स्तर की घटनाओं को कम स्थान देते हैं जबकि दिल्ली में राई को पर्वत बता देते हैं, ऐसा क्यों?

हां ऐसा है, दरअसल जो घटना पास में होती है, बड़ी दिखाई देती है। पिछले दिनों उत्तरकाशी में विपदा आई, लेकिन दिल्ली में मेरे पड़ोस में लगी आग ज्यादा महत्वपूर्ण व बड़ी प्रतीत होगी। वैसे यह दुर्भाग्यपूर्ण भी है कि देश की सारी सोच रीति-नीति दिल्ली में आ गई है। राष्ट्रीय मुद्दे व स्थान के अभाव के कारण क्षेत्रीय समस्याओं को स्थान कम मिलता है। आज क्षेत्रीय पत्रों में भी ग्रामीणों पर सामग्री कम होती है, वे भी राष्ट्रीय अखबारों की नकल कर रहे है जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए।

पूँजीपति पत्रों पर हावी हो रहे हैं, कैसे रोका जाये?

संपादक पर निर्भर करेगा कि वह किस प्रकार स्वयं को स्वतंत्र रख सकेगा। आज संपादकों को मोटी-मोटी पगार मिल रही है अत: वे छोड़कर नहीं जा सकते। सम्पादक को समझौते करने होते हैं। हम अपने समय में नियंत्रक थे, अबको स्थिति नहीं है।

पत्रकारिता के मूल्यों की गिरावट को कैसे रोका जाए?

बड़ा मुश्किल काम है, पत्रकार भी समाज का ही अंग है। आज समाज में चारों ओर भ्रष्टाचार है। अब तो भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बन गया है। लेकिन समाज में डॉक्टर, अध्यापक, इंजीनियर व पत्रकार के विशेष दायित्व है। समाज के दिशा निर्देश करने वाले वर्ग का विशेष चरित्र होना चाहिए। हमारे समय में कोई पत्रकार मदिरा का उपयोग नहीं करता था, लेकिन आज आम बात हो गयी है। पत्रकार का पाठक के प्रति महत्वपूर्ण दायित्व है, उसका उसे निर्वाह करना होगा।

क्या संपादक का दायित्व उपदेशक का होना चाहिए?

आज परिस्थितियाँ बदल चुकी है, पाठक बहुत जागरूक व बुद्धिमान है। उसे उपदेश नहीं दोनों पक्षों का विवरण चाहिए। ऐसी अवस्था में सपादक अपना पक्ष तर्क के रूप में रख सकता है।

क्या आप बाल पत्रकारिता के मौजूदा स्वरूप से संतुष्ट हैं, क्या बाल साहित्य को परीकथाओं व तिलस्मी कथाओं से अलग रखा जाए?

आज नदन, चपक व चदामामा जैसी अच्छी पत्रिकाएं निकल रही है, लेकिन मैं पूरी तरह संतुष्ट नहीं हूं। मैंने अपने सम्पादकीय काल में बालजगत पन्ना निकाला, जिसमें बच्चे स्वय सम्पादन व लेखन का कार्य देखते थे। उस पीढ़ी से अच्छे पत्रकार हमारी हिंदी पत्रकारिता को मिले। जहाँ तक परीकथाओं का जिक्र है, मै इसे उचित मानता हूँ। गाँव में बच्चा एक डंडा लेकर घोड़े के रूप में दौड़ाता चलता है, जबकि वहाँ घोड़ा नहीं है। इससे बच्चे में कल्पनाशीलता का विकास होता है। वैदिक, जातक, जैन व परीकथाओं से बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलती है।

आपने 1968 में 'पद्मभूषण' का सम्मान क्यों लौटाया?

'श्री यशवंत राव चव्हाण तत्कालीन गृहमंत्री मेरे मित्र थे। उन्होंने बताया कि हम संसद में 'राजभाषा कानून' ला रहे हैं। मैंने अनुभव किया कि जिस हिंदी की सेवा के लिए मुझे 'पद्मभूषण' मिला था, उसके साथ अन्याय हो रहा है तो मैंने अपना विरोध उसे लौटाकर दर्ज किया।

□

सत्र 1991-92

आसान नहीं है बच्चों के लिए लिखना

-डॉ. कन्हैयालाल नन्दन

*देश के वरिष्ठ पत्रकार और साहित्यकार डॉ. नन्दन ने जहाँ अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया है वहीं कवि के रूप में भी प्रतिष्ठा पाई है। पिछले दिनों हरिद्वार में प्रेस क्लब की ओर से आयोजित एक सगोष्ठी के दौरान उनसे मिले **श्रवण कुमार** की लंबी बातचीत के प्रमुख अंश:-*

आप 'पराग' से वर्षों तक जुड़े रहे, इसलिए आज आपसे बाल-साहित्य पर चर्चा करना चाहता हूँ। वैसे तो ये आपका छूटा हुआ विषय है, आप इसके बारे में थोड़ा-सा प्रकाश डालेंगे?

आज मैं इस बात पर अक्सर गौर करता हूँ कि बच्चों के लिए जितना अच्छा साहित्य होना चाहिए उतना शायद हमारे समय में नहीं हो पाया हालाँकि आज बच्चों का साहित्य भी अधिक विकसित हुआ है। आज बाल साहित्य कम्प्यूटर आदि आधुनिक चीजों के बारे में तो ज्ञानवर्द्धक बातें रहती है, किंतु जहाँ तक साँस्कृतिक साहित्यिक लेखों का सवाल है तो आज उनमें कुछ ह्रास हुआ है। मैं समझता हूँ बड़े साहित्यकार आज भी बच्चों के लिए लिखते हैं। हालाँकि उसमें कुछ परिपक्वता भी रहती है। मेरा मानना है कि उनकी भाषा ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चों के मन मस्तिष्क पर असर पडे। वैसे बड़े साहित्यकार सोचते है कि बच्चों के लिए लिखने के बजाय अगर बड़ों के लिए लिखा जाए तो ज्यादा अच्छा रहेगा। यह सोच बाल-साहित्य के लिए बहुत रुकावट बन जाती है। अभी पिछले दिनों साहित्य अकादमी के अध्यक्ष यू.आर. आनन्दमूर्ति से बात हुई, जो मूलत: कन्नड़ के लेखक है। उन्होंने कहा कि बच्चों का साहित्य हिन्दी भाषा और अन्य भारतीय भाषा के मुकाबले आज भी कन्नड़ में बहुत कम है। मैं सोचता हूँ कि भारतीय भाषाओं में बाल-साहित्य पर अधिक से अधिक सरल भाषा में ज्ञानवर्द्धक रचनाएँ हों ताकि बच्चों के दिमाग पर उसका असर पड़े और बच्चों के सोचने की शक्ति विकसित हो।

बाल साहित्य है क्या? आप इसे किस तरह से देखते हैं?

देखिए बाल-साहित्य के लिए ऐसा कोई निश्चित खाँचा तो है नहीं। उनके मनोरंजन के लिए, अलग आयुवर्ग में उनके ज्ञान के भण्डार के लिए, जिस तरह की जरूरत हो, और उस जरूरत के हिसाब से जो साहित्यिक, साँस्कृतिक या अन्य कोई रचना लिखी जाए यही बाल साहित्य है। कोई जरूरी नहीं है कि जयशंकर प्रसाद का ध्रुवस्वामिनी या स्कंदगुप्त नाटक केवल बड़ों के लिए ही है। उसे अगर

बच्चों के हिसाब से लिख कर दिया जाए तो बच्चे भी खूब शौक से उसे पढ़ेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि बाल साहित्य ऐसा साहित्य है जिसमें किसी भी रचना को चाहे वो ऐतिहासिक नाटक हो या फिर साँस्कृतिक निबन्ध बच्चों की भाषा में बच्चों को परोस दिया जाए तो वह बाल साहित्य है।

पहले के बाल साहित्य और आज के बाल साहित्य में क्या मूलभूत अंतर आया है?

ये तो मैं शायद नहीं बता पाऊँगा लेकिन इतना जरूर लगता है कि आज की रचनाएँ बच्चों के दिमाग पर सही नहीं उतर रही हैं। ये सही है कि वह समय बहुत पीछे छूट गया है, लेकिन इतना जरूर कहूँगा कि मैं जब लिखता था या हूँ तो उसे विशेष तौर से लिखता हूँ। ताकि बच्चों को उसमें दिलचस्पी हो। मेरे कहने का अर्थ यह है बच्चों के लिखी गई रचनाओं में जो भावुकता होनी चाहिए आज उसका अभाव-सा दीख रहा है।

बाल साहित्य किन चीजों को ध्यान में रखकर लिखा जाए।

एक बार हमने एक सीरिज शुरू की थी जिसमें हम बच्चों को बड़े-बड़े साहित्यकार से मिलवाने की कल्पना में लिखते थे। एक बार पंद्रह बच्चे गये और दिनकर जी से मिले। यह बात उन बच्चों को उम्रभर याद रहेगी कि हम बचपन में दिनकर या महादेवी वर्मा से मिल चुके हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि बड़े साहित्यकारों को भी अपने को बालसाहित्य से जोड़ना चाहिए ताकि बच्चों को अधिक से अधिक अच्छी रचनाएँ पढ़ने को मिलें। हमने जो सीरिज शुरू की थी वह काफी चर्चित रही। स्वयं दिनकर जी बोले कि ये बहुत अच्छा काम किया गया है। दिनकर जी जब बच्चों से मिले तो बच्चों ने उनसे पूछा कि आपको मिठाई पसंद है। दिनकर जी बोले, 'बेटे मिठाई तो बहुत पसंद है, वैसे मैं डायबिटीज का शिकार हूँ, किंतु मिठाई देखकर मुझ से रहा नहीं जाता, खासतौर से जलेबी तो मुझे काफी पसंद है। इसे देख लेने के बाद चाहे कितनी भी डायबिटीज हो मैं जलेबी खा ही लेता हूँ।' मतलब ये कि बच्चों से बच्चों की तरह ही उनकी ही भाषा में बात करना। कहीं न कहीं ये बात उनके मन में घर कर जाती है। बच्चों को उनकी ही भाषा में कहना उनके सृजनात्मक निर्माण में जरूर असर डालेगा। मेरा मानना है कि बच्चों का उनके रचनाकारों से जरूर सम्पर्क होना चाहिए, साक्षात्कार होना चाहिए। साहित्यकारों से उनका मेलजोल बढ़ाया जाए। इससे साहित्यकारों को भी बेहतर ढंग से बच्चों को समझने का अवसर मिलेगा तथा वे उनके लिए बढ़िया लिख सकेंगे।

बालसाहित्य में जो गीत पहले थे अब नहीं रहे। उसमें विकृतियाँ आ गई हैं। लय और ताल की सीमाएँ पीछे छूट गयी हैं। इसकी क्या वजह हो सकती है?

बाल साहित्य में ही क्यों, सब जगह गड़बड़ हो गया है। साहित्य में तो अराजकता सी आ गई है। साहित्य में लय, ताल, छन्दों का पूरा ध्यान रखा जाना

चाहिए। गीत इस प्रकार से लिखा जाए कि पढ़ने में सुविधा हो। इस बात को रचनाकार के समक्ष भी रखा जाना चाहिए। लेकिन दिक्कत यह है कि लोगों में सहिष्णुता धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। लेखक समझता है कि ईर्ष्यावश हमारा दोष निकाला जा रहा है। इस तरह से यह समाज में दूषित भावना हो गई है और साहित्य में तमाम तरह की गड़बड़ियाँ हो रही हैं। बाल साहित्य पर भी इसका असर पड़ा है।

क्या आप मानते हैं बाल साहित्य में छन्दों की प्रतिबद्धता होनी चाहिए?

जरूर होनी चाहिए। देखिये छंद होने से वो पद या गीत जल्दी याद होता है। बच्चों को अगर लयबद्ध करके दिया जाय तो वह उन्हें रुचिकर लगेगा। मैं तो ये कहूँगा कि गणित और व्याकरण के सिद्धांत छंदों से याद होते हैं। मैं आज भी कारक के चिह्न छन्दों में पढकर ही अपने नाती को सिखाता हूँ। मुझे यह सब याद है क्योंकि मैंने इसे छदों में पढ़ा था। दिनकर की उर्वशी है-'उर्वशी अपने समय का सूर्य हूँ' ये पक्तियां पढने से सहज ही याद हो जाती हैं, क्योंकि पढ़ने से कहीं न कहीं अर्थ की ध्वनिया, शब्दों की ध्वनिया आसानी से लय में पढी जाती हैं। छंदमुक्त रचनाओं को याद करने में काफी दिक्कत होती है।

आजकल कार्टून, कॉमिक्स या चित्रकथाएं हैं, क्या उसका कुछ बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है?

नहीं ऐसा तो नहीं है, तमाम ऐसी चित्रकथाएं हैं जिसमें बच्चों की रुचि बढती है। जो आप उसे पढ़ाते रहे, जैसे रामायण की कथाएं, महाभारत की कथाएं, महापुरुषों की कथाएं आदि इनसे उन्हें ज्ञान भी मिलता है और उनकी रुचि भी बनी रहती है। बाल साहित्य में इद्रजाल या मायाजाल फैलाने वाले लोग तात्कालिक सफलता तो हासिल कर सकते हैं लेकिन अत में उन्हें मुँह की खानी पड़ेगी। बच्चे में यदि तर्क की क्षमता पैदा हो गई तो है तो वह चलताऊ चीजों से प्रभावित नहीं होगा।

आप संडे मेल से जुड़े हुए हैं, आप उसमें बाल-साहित्य को जगह देते हैं?

हम परिवार के लिए सामग्री देते हैं। पूरे परिवार में बच्चे भी आ जाते हैं, इस दृष्टिकोण से हमें सोचना पडता है। हम चाहते हैं कि अगर बच्चों के लिये भी कोई चीज जाती है तो बच्चे उसे जरूर देखें। बच्चों के लिए हम अलग से सामग्री भी देते हैं। प्राय: विज्ञान में नई खोजें होती रहती हैं, उसको हम सूचना परक् बना कर देते हैं ताकि इससे बच्चे को अधिक से अधिक लाभ मिले। हम बच्चों को अहसास कराना चाहते हैं कि वे परिवार का हिस्सा हैं और उनके लिए अखबार में बढ़िया चीजें दी गई हैं।

अगर आपको पुन: बाल पत्रिका का प्रकाशन करने को कहा जाए तो क्या आप पराग का प्रकाशन करना चाहेंगे?

नहीं, पराग जैसी पत्रिका तो नही करूँगा, उसमें कुछ परिवर्तन जरूर करूँगा।

आज बच्चों के लिए जैसी पत्रिका की जरूरत है उसके अनुरूप उसे ढालने का प्रयत्न करूँगा। आज संपर्क सूत्र इतने तेज हो गए है कि अमेरिका में जो हो रहा है, ब्रिटेन में जो हो रहा है, या फ्रांस में जो हो रहा वो हम तक पहुँचता है। इसलिए मुझे लगता है कि विश्व की विभिन्न भाषाओं से अच्छी-अच्छी सामग्री लेकर बच्चों को दी जाए, उन्हें अच्छी-अच्छी रचनाएं पढाई जाए। इसका अगर मुझे अवसर मिलेगा तो मैं जरूर करना चाहूँगा या करूँगा। मेरी इच्छा है कि विश्वसाहित्य की श्रेष्ठतम रचनाओं को हिंदी पढ़ने वाले बच्चों को भी पढाया जाए। ये हमारा दायित्व है। वास्तव में मैं बच्चों से जुड़ना ज्यादा पसंद करूँगा।

आप पराग से वर्षों से जुड़े रहे और उसे काफी आगे तक बढ़ाया, सफल नेतृत्व किया फिर उसके बंद होने के क्या कारण रहे?

इसमें कुछ तो व्यावसायिक कारण रहे। लेकिन एक बात और है कि अगर आप उम्मीद करें कि यह पत्रिका व्यावसायिक रूप से सफल होगी तो ये बड़ा मुश्किल है। कहीं न कहीं बच्चों के लिए साहित्य देने का काम बडे-बडे प्रकाशनों या संस्थानों द्वारा किये जाते रहे है। लेकिन उनसे लाभ हासिल नही हो रहा है। लेकिन ये पत्रिकाएँ बडे प्रकाशनों के लिए एक पीढ़ी का निर्माण करती है। इसलिए मैं कहा करता था कि पराग को पढना धर्मयुग को पढने के लिए एक अच्छा रीडर तैयार करना भी है। जब टाइम्स ऑफ इण्डिया ने पराग को बंद किया तो मुझे नही मालूम था कि वो धर्मयुग को भी बद करना चाहते है। जब मै समझा कि धर्मयुग बद होने जा रहा है तो मैंने कहा कि धर्मयुग को बद कर रहे है तो पराग को पहले ही बन्द करो। ताकि वो पाठक वर्ग बनना ही बंद हो जाय। लेकिन ये दायित्व नैतिक दायित्व है। इस देश के निर्माण के लिए कि बच्चों को अच्छे से अच्छे साहित्य देते रहें। अपने देश के नन्हें नागरिकों के लिए प्रकाशन जारी रखें बल्कि उसे एक अनिवार्यता की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। किंतु जब सब कुछ व्यावसायिक दृष्टि से देखा जाने लगता है तो बच्चों को पहले ही उसका शिकार बनाया जाता है।

हिंदी की पत्रिकाएँ धीरे-धीरे बद होती जा रही है। इसके लिए हिंदी पाठक को प्रतिरोध करना चाहिए। जो लोग पत्रिका बंद करते है तो उनका प्रतिरोध होना चाहिए जिससे पता चले कि इसके इतने पाठक थे। हिंदी के पाठक वर्ग को हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं को खरीदना चाहिए। अपने यहां हिंदी में एक अखबार को दस आदमी पढ़ते है। जबकि मराठी में ऐसा नही है। वहा एक अखबार मुश्किल से दो आदमी पढ़ते है। एक ऑफिस में अगर कई चपरासी है तो सबके लिए अलग-अलग अखबार है। अपने यहां पत्रिका खरीद कर पढ़ने की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। कहने का मतलब है कि अगर पढ़ने की सामग्री के लिए भी अपनी जेब खर्चा में कुछ कमी कर देते है तो यह अच्छी स्थिति होती है। लेकिन हिंदी पाठकों में यह परंपरा नही है। हिंदी में पुस्तक खरीद कर देने की परपरा नही है, भेंट देने का प्रचलन नही है। कहीं अगर आप किसी की शादी में पुस्तक भेंट देंगे तो आपकी खिल्ली उड़ाई जाएगी। ये सब तमाम ऐसे कारण है जो हिंदी पाठक वर्ग चाहे वह

किसी भी वर्ग के हों, प्रभावित होते हैं और तमाम पत्रिकाएँ लगातार बंद होती जा रही हैं।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय व उसमें चलाए जा रहे पत्रकारिता प्रशिक्षण के विषय में आप क्या कहेंगे?

असल में गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय का नाम बचपन में सुनता था। पहले जो वहाँ की दुर्दशा होती चली गई यह सुनकर दु:ख होता है, लेकिन अब समाज के एक ऐसे वर्ग का निर्माण जो त्याग, तप, सेवा के लिए अपने आपको तैयार करता है, वहाँ शुरू हो चुका है। मैं उन सभी प्रशिक्षु पत्रकारों को शुभकामनाएँ देता हूँ कि लगन, मेहनत और कर्त्तव्यबोध की भावना से कार्य करें। नए लोग बदलाव के लिए अपनी कलम चलाएँ। वे अपने सामाजिक दायित्वों को समझें और रचनात्मकता की ओर ध्यान दें।

□

सत्र - 1994-95

जनता ही रोक सकती है पीत पत्रकारिता

-जयकिशन शर्मा

*जयकिशन शर्मा हिंदी के जाने-माने पत्रकारों में से हैं। करीब दो दशक से वे पत्रकारिता से जुड़े हैं। कई पत्रों में विभिन्न पदों का दायित्व संभाल चुके श्री शर्मा फिलहाल ग्वालियर के दैनिक समाचार पत्र स्वदेश के स्थानीय संपादक हैं। प्रस्तुत है उनसे की गई **राज बहादुर गंगवार** और **धर्मेन्द्र गुप्ता** की बातचीत :-*

इस क्षेत्र में आने की प्रेरणा आपको कैसे मिली?

मेरी आयु उस समय 20 वर्ष थी जब मैं इस क्षेत्र में आया। बचपन में समाचार पत्रों में तथा रेडियो पर युद्ध के समाचार पढ़ता व सुनता था। मन में रोमांच होता था कि कैसे एक संवाददाता युद्ध भूमि में रहकर समाचार भेजता है। घटना की खबर सबसे पहले एक पत्रकार को होती है फिर आम जनता को। यह सोचकर भी इस क्षेत्र में आने की प्रेरणा मिली।

एक अच्छा पत्रकार होने के लिए किन गुणों की आवश्यकता है?

एक अच्छा पत्रकार बनने के लिए चार गुणों का होना अति आवश्यक है। ये गुण है एक पत्रकार में जानने की तीव्र इच्छा होनी चाहिए, खबर को सरल शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए, दिमाग कंप्यूटर की तरह गतिमान हो और व्यक्ति निर्भीक हो।

क्या एक साहित्यकार अच्छा पत्रकार हो सकता है?

एक साहित्यकार अच्छा पत्रकार बन जाए ये कोई जरूरी नहीं है। साहित्यकार बनने के लिए लिखने का अभ्यास व कल्पनाशीलता जरूरी होती है जबकि पत्रकार बनने के लिए इन गुणों के साथ अन्य कई गुणों की भी आवश्यकता होती है। अलबत्ता एक अच्छा पत्रकार बढ़िया साहित्यकार आसानी से बन सकता है।

पत्रकार का समाज के प्रति क्या दायित्व होना चाहिए?

पत्रकार का काम सूचना देना होता है। यदि कहीं कोई दुर्घटना होती है तो पत्रकार को चाहिए कि उसे वीभत्स ढंग से प्रस्तुत न करके सहानुभूति पूर्वक प्रस्तुत करे। पत्रकार का काम समाज को जोड़ने वाला होना चाहिए तोड़ने वाला नहीं।

पत्रकारिता के लिए प्रशिक्षण कहां तक जरूरी है?

पत्रकारिता का क्षेत्र चूंकि दिन-प्रतिदिन व्यापक होता जा रहा है अत: इसके लिए अब प्रशिक्षण आवश्यक बन गया है। लेकिन यदि एक अप्रशिक्षित व्यक्ति में उपरोक्त चार गुण मौजूद हैं तो बिना प्रशिक्षण के भी वह एक अच्छा पत्रकार बन सकता है अन्यथा डिप्लोमा या डिग्री जुटा लेने से कोई फायदा नहीं होगा।

क्या आज भी पत्रकार विषम स्थिति में काम कर रहे हैं?

विषम परिस्थितियाँ तो पत्रकार के सामने हमेशा से रहती आई हैं क्योंकि खबर प्राय: किसी न किसी को चोट पहुँचाती ही है। भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी, राजनीति आदि पर लिखते समय पत्रकारों को बलिदान भी देना पड़ता है। टेक्नोलॉजी का विकास होने से भी पत्रकार की आर्थिक दृष्टि से दिक्कतें काफी बढ़ गई हैं।

पत्रकारिता को चौथा स्तंभ क्यों कहा जाता है?

विधायिका, न्यायपालिका तथा कार्यपालिका जिस प्रकार जनता से जुड़े हैं उसी प्रकार पत्रकारिता भी जनता से जुड़ी हुई है। इसीलिए इसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। विधायिका, न्यायपालिका तथा कार्यपालिका के बारे में आम जनता को एक पत्रकार ही बताता है तथा आम जनता की उपरोक्त तीनों के बारे में क्या अभिव्यक्ति है इस बात को भी पत्रकार ही उजागर करता है। एक तरह से वह इन तीनों के बीच समन्वयक की भूमिका निभाता है।

पीत पत्रकारिता को कैसे रोका जाए?

जब कोई पत्रकार अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए किसी के पीछे पड़ जाता है और उसे 'ब्लैकमेल' करने लगता है तो ऐसी पत्रकारिता पीत पत्रकारिता कही जाती है। पीत पत्रकारिता को जनता ही रोक सकती है। जब जनता को पता चलेगा कि अमुक पत्रकार अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए किसी व्यक्ति पर कीचड़ उछाल रहा है अथवा, किसी व्यक्ति विशेष के बारे में बढ़ा-चढ़ा कर लिख रहा है तो आम जनता उसका बहिष्कार करेगी और संबंधित अखबार को खरीदना बंद कर देगी, इससे पीत पत्रकारिता स्वय ही समाप्त हो जायेगी।

इस क्षेत्र में आने वाले नए लोगों के लिए आप क्या कहेंगे?

नए लोगों को चाहिए कि वे अपने लिए कोई एक क्षेत्र चुन लें एवं उस पर नई से नई व पुरानी से पुरानी जानकारी प्राप्त करें। इसके साथ ही अन्य सभी क्षेत्रों की थोड़ी-थोड़ी जानकारी भी अवश्य रखें। तभी वे एक अच्छे पत्रकार के रूप में सफल हो सकते हैं।

□

सत्र 1993-94

आसान नहीं है पत्रकारिता में टिके रहना

–जी.सी.नारद

*'पत्रकारिता की यात्रा आसान नहीं है। ग्लैमर से प्रभावित होकर इस क्षेत्र में आने वाले लोग ज्यादा दिन नहीं ठहर सकते। ऊंचे आदर्शों और लक्ष्यों वालों के लिए यह क्षेत्र सुरक्षित है। जो आत्मसंतुष्टि इस क्षेत्र में हासिल होगी, वह कहीं नहीं हो सकती' यह कहना है दैनिक जागरण (भोपाल) के प्रभारी संपादक जी.सी.नारद का। पचास साल पूर्व पत्रकारिता से जुड़े श्री नारद निचले स्तर से शुरुआत करके इस पद तक पहुंचे। प्रस्तुत है उनसे **राजीव वर्मा** की एक बातचीत :-*

पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी जीवन यात्रा के बारे में कुछ बताइए।

जहा तक पत्रकारिता का प्रश्न है, अपने परिवार में मै दूसरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ। मेरे पिता जी 1930 से पत्रकार थे। मैं कह सकता हूँ कि पत्रकारिता मुझे विरासत में मिली। वैसे 1948 से मै सक्रिय पत्रकारिता में हूँ। 1950 में जबलपुर से निकलने वाले दैनिक नवभारत के सपादकीय विभाग का मैं पहला सदस्य था, सन् 1952 तक मै नवभारत में रहा। तत्पश्चात् सरकारी सूचना विभाग में मेरा चयन हो गया। 1986 तक मै जन संपर्क विभाग में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए सह सपादक के रूप में रिटायर हुआ।

हिंदी पत्रकारिता में अनुवाद की प्रक्रिया तेज हुई है। क्या अंग्रेजी के सहारे के बगैर हिंदी पत्रकारिता का स्तर ऊंचा नहीं उठेगा?

इस संदर्भ में आपको देखना पडेगा कि अपने देश में पत्रकारिता का विकास किस रूप में हुआ। हमारे यहा अंग्रेजी पत्रकारिता से हिदी पत्रकारिता आई। थोडे समय पहले तक पी.टी.आई., यू.एन.आई तथा अन्य समाचार एजेंसिया ही अंग्रेजी में समाचार भेजती थी। जब तक भाषा, वार्ता के रूप में हिदी टेलीप्रिंटर नहीं आए। तब तक इसके सारे समाचार अनुवादित होते थे। अंग्रेजी अखबारों ने भी हिदी पत्रकारिता को सहयोग दिया है। आज भी उनसे समाचार लिए जाते है। अत: इस प्रश्न का हम खडन नहीं करते है, केवल अनुवाद पर ही सब निर्भर है, ऐसा भी नही मानते। टाइम्स ऑफ इडिया पत्र निकला उसका हिदी सस्करण नवभारत टाइम्स निकला, हिदुस्तान टाइम्स का हिदी सस्करण निकला, ये अंग्रेजी से अनुदित नहीं है। इनकी अपनी एक अलग पाठक सख्या और पठनीयता है। दूसरे हिदी का पाठक अभी उतना प्रवुद्ध और जागरूक नही है, जितना अग्रेजी का पाठक या दक्षिण भारतीय

पाठक, साक्षरता का प्रतिशत भी यहा पर कम है।

आजादी से पहले पत्रकारिता एक मिशन के रूप में थी। किंतु अब यह व्यवसाय का रूप लेती जा रही है, इसमें आपकी क्या राय है?

अखबार निकालना, आज इतना आसान नहीं है। एक लबी पूंजी का खेल हो गया है। इसलिए इसमें वे सारी व्यावसायिक विकृतियां आएँगी। अगर हम कहें कि इस काजल की कोठरी में पत्रकारिता निष्कलंक रह जाए तो ऐसा नहीं हो सकता। फिर निश्चित रूप से सभी लोग इस तरह लिखने को तैयार नहीं होंगे। इसके विरोध भी होंगे। पत्रकारिता के मूल में बुद्धिवादी चिंतन है और उसका यदि बहुत ज्यादा शोषण हो तो वह बगावत कर देता है। विद्रोह दिल के अहसास से होता है। यदि यह अहसास उसमें आ जाये कि कलम खरीदी जा रही है तो उसका विरोध निश्चित रूप से होगा।

आजादी से पहले और अब के समाचार पत्रों में आपको क्या अंतर परिलक्षित हुए हैं?

पहले लक्ष्य एक ही था, अब कोई एक निश्चित लक्ष्य नही है। अब अधिकांशत: पत्र पाठकों के विचार पर निर्भर करते हैं। जो अखबार जिस विचारधारा को प्रेषित करता है, तो अपने पाठकों को उसके लिये प्रेरणा देता है। लोक रुचि से जो चलते हैं वे पॉपुलर होते हैं। बाकी खत्म हो जाते हैं।

आज राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के युग में समाचार पत्रों को किस प्रकार संतुलित रख सकते हैं?

विवेक से और निष्पक्ष होकर काम करना चाहिए। तथ्यों के आधार पर राय व्यक्त कीजिए। राजनीतिक दल के मुखपत्र न बनें लेकिन उसका विश्लेषण लोक हित में करें। हमारे सविधान पर कोई हमला तो नही हो रहा उसका अतिक्रमण तो नहीं हो रहा है ये सब ध्यान रखना चाहिए।

आज पाठक को अखबार में बहुत कम महत्व दिया जाता है?

हमारे यहाँ अखबार मूल रूप से दो प्रकार के हैं। एक राष्ट्रीय अखबार, दूसरा क्षेत्रीय स्तर के अखबार। पाठकों की समस्याएँ क्षेत्रीय स्तर की अधिक होती है। इसके लिये आँचलिक पत्रकारिता और ग्रामीण पत्रकारिता बहुत जरूरी है। इसके अलावा हरेक अखबार में सपादक के नाम पत्र का एक कालम होता है। सबसे बड़ी समस्या ये है कि पाठकों में अभिव्यक्ति की क्षमता का अभाव है। समस्याएँ व्यक्तिगत न हों, यह इसके लिए आवश्यक है।

माफियाओं के कारण खोजी पत्रकारिता का ह्रास हुआ है। तमाम दबावों के चलते एक पत्रकार किस प्रकार अपना कार्य कर सकता है?

ऐसे लोगों के मुखौटे उतारने के लिए ही खोजी पत्रकारिता शुरू हुई। खोजी पत्रकारिता होती ही यह है कि वह किसी मामले में होने वाले नियमों के उल्लंघन या अनियमितताओं को उजागर करे। कहाँ तक ये सरकारी तंत्र में तालमेल बिठाए

हुए है, यह देखे। ह्रास की बजाय आज खोजी पत्रकारिता बढ़ती जा रही है। प्रशासन भी किसी न किसी रूप में दल से जुडा हुआ है। अत: प्रशासन से भी सुरक्षा प्राप्त करना पत्रकारिता के हित में नहीं होगा। किसी सरक्षण के सहारे-यदि पत्रकार सोचता है कि वह अपना काम करे तो यह नहीं हो सकता।

पत्रकारिता के क्षेत्र में आप इलैक्ट्रॉनिक्स मीडिया और प्रिंट मीडिया में से किसे अधिक प्रभावी मानते हैं?

पत्रकारिता वैसे तो स्वय प्रिंट मीडिया के सहारे आगे बढ़ी। लेकिन आजकल प्रचार के माध्यम बहुत बढ गये है। वैसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अधिक प्रभावी है। फिर भी प्रिंट मीडिया का असर ज्यादा देर तक रहता है। क्योंकि इसमें समाचार एक दृश्य की तरह गुजर नहीं जाते है।

एक पत्रकार के रूप में आपकी व्यक्तिगत और सार्वजनिक उपलब्धियाँ क्या रही हैं?

ये तो आत्मिक अनुभूति की बात है। यदि भला किया है तो मुझे सतोष होगा। और मुझे तो सत्य के लिए लडना है। उसके एवज में क्या मिला इसका लेखा-जोखा मैं करूँ तब तो मैं पत्रकार नहीं रह गया। हमने अपनी कलम को बेचा नही, लोगों ने कितनी प्रेरणा ली यह सब अलग बात है। जो हमने सोचा, उसे अभिव्यक्ति दी। सही उद्देश्य से यदि जुडे रहे तो आपको निश्चित रूप से प्रतिष्ठा, विश्वसनीयता मिल जाती है।

इस क्षेत्र में आने वाले युवाओं को क्या दिशा-निर्देश देंगे?

अपने आदर्शों को ऊँचा बनाएँ और उनमें आस्था रखें, इन आदर्शों को आगे बढ़ाएँ। आदर्शों का या लक्ष्यों का अभाव आगे नहीं बढने देगा। पत्रकारिता में ग्लैमर है, आकर्षण है, पर स्पष्ट रूप से यह कष्ट साध्य यात्रा है। आपको लगेगा कि आप घाटे में हैं। लेकिन इस काम में संतोष है। यदि आप पत्रकारिता में आ रहे है तो अपने आत्म सम्मान को अपने विवेक को अपनी बुद्धि को और अपनी कलम की प्रखरता को गिरवी मत होने दें-मेरा यही कहना है।

सत्र - 1992-93

□

पीत पत्रकारिता के लिए कड़े कानून हों

-ठाकुर विश्वनारायण सिंह

सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित ठाकुर विश्वनारायण सिंह को ब्रेल साहित्य और पत्रकारिता का जनक माना जाता है। उन्होंने पत्रकारिता और साहित्य में उच्च शिक्षा प्राप्त की। हिंदी और अंग्रेजी दोनों पत्रकारिता क्षेत्रों में उन्होंने कार्य किया है। नागपुर के दैनिक 'नवभारत' में कार्य करने के बाद पी.टी.आई. अंग्रेजी न्यूज एजेंसी में कार्य किया। ठाकुर विश्वनारायण सिंह भारत की पहली हिंदी न्यूज एजेंसी के संस्थापकों में से एक हैं। 1954 में देहरादून ब्रेल प्रेस में, यू.पी.एस.सी. ने उनको संपादक के रूप में चुनकर भेजा और वे भारत के पहले ब्रेल संपादक बने। प्रस्तुत है उनसे ***पारुल*** *का एक संवाद :-*

आपने पत्रकारिता को ही क्यों चुना?

बी.ए. पास करने के बाद मैं जीवन के चौराहे पर खड़ा हुआ था। भारत छोड़ो आंदोलन में जेल जाने के कारण मेरा रुझान राजनीति की तरफ हुआ, लेकिन मैंने पत्रकारिता से ही देश सेवा का फैसला किया। क्योंकि परिवार का वातावरण भी साहित्यिक था।

आपके प्रेरणा स्रोत कौन-कौन हैं?

मेरे जीवन पर मेरी मां का अधिक प्रभाव पड़ा। इसके अलावा राहुल सांस्कृत्यायन, डॉ. भास्कर नारायण खरे का भी प्रभाव पड़ा। इन्हीं लोगों से मैंने प्रेरणा पाई।

ब्रेल लिपि में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

जिस समय मेरी नियुक्ति हुई तब यहा काम करने की कोई सही योजना ही नहीं थी। यहाँ काम करने वाले लोगों को साहित्य और पत्रकारिता का कोई व्यावहारिक ज्ञान नहीं था। उस समय अधिकतर लोग अधिक उम्र के थे। इसलिए वे कम काम करने के पक्षधर थे। इस सबंध में मैंने एक कार्ययोजना तैयार की और नेत्रहीनों के लिए ऐसा साहित्य छपवाया जो चरित्र निर्माणकारी हो। मैंने विज्ञान विषय को भी ब्रेल में छपवाया ताकि नेत्रहीनों की रुचि इस ओर बढ़ सके। ब्रेल साहित्य सृजन का कार्य दस भारतीय भाषाओं में करवाया गया। यह भाषाएँ है-हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी, तमिल, तेलगु, बगला, संस्कृत, मराठी, उड़िया और गुजराती। इस कार्य से दस लाख लोगों को फायदा पहुँचा।

क्या विदेशों में भी यह साहित्य भेजा गया है?

हाँ, यह साहित्य नेपाल, जर्मनी, इंग्लैंड, फ्रांस और युगांडा आदि देशों को भेजा गया है। इससे विदेशों में हिंदी साहित्य का प्रचार और प्रसार हुआ।

भारतीय ब्रेल प्रेसों में क्या-क्या सुधार होने चाहिए?

ब्रेल प्रेस के साधनों को बढ़ाया जाए। सरकार द्वारा दी जाने वाली सहायता राशि बढ़ाई जानी चाहिए। कंप्यूटरों का प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि प्रिंटिंग क्षमता बढ़ाई जा सके। साहित्य और पत्रकारिता से जुड़े लोगों को इस कार्य के लिए आगे आना चाहिए। ब्रेल की संकोच लिपि का विस्तार किया जाना चाहिए।

अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि आप किसे मानते हैं?

मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि पूर्व दस्यु तहसीलदार सिंह को जेल से रिहा कराना मानता हूँ। इसकी वजह से और 500 डाकुओं ने आत्मसमर्पण किया था। 1960 में डाकुओं के प्रथम बैच के आत्म-समर्पण की योजना मैंने तत्कालीन मेजर यदुनाथ सिंह के साथ मिलकर बनायी थी।

इसके अलावा आपका साहित्य के क्षेत्र में और क्या योगदान है?

भारत में 'दृष्टिहीन' नामक पुस्तक जिसकी तीस हजार प्रतियां मध्य प्रदेश सरकार ने छपवायीं, 'पिंडारी ठग और डाकू' यह क्रमशः धर्मयुग में छप चुकी है, 'किस्से अनोखे पर सच्चे', 'कालपात्र' आदि बच्चों की कहानियां तथा नेत्रहीन बच्चों के लिए 'शिशु आलोक' आदि किताबें मैंने लिखीं।

ब्रेल साहित्य और पत्रकारिता के लिए आपको कितने पुरस्कार मिल चुके हैं?

मुझे 1976 में कलकत्ता की नागरी प्रचारिणी सभा ने पत्रकार शिरोमणि की उपाधि से सम्मानित किया। 1977 में रूस ने सोवियत लैंड नेहरू एवार्ड से सम्मानित किया। ब्रेल संपादन के लिए लायन्स क्लब, देहरादून ने भी सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश की हिंदी साहित्य समिति, अखिल भारतीय पत्रकार परिषद के सदस्यों में से एक हूँ।

पीत पत्रकारिता से कैसे बचा जाये?

इसके लिए सख्त कानून बनने चाहिए और उनका कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। शिक्षा का स्तर इस तरह का होना चाहिए कि व्यक्ति की अंतरात्मा उसे कचोटे कि वह गलत कार्य कर रहा है। लेकिन पत्रकारिता से जुड़े रहने के कारण मेरा यह अनुभव रहा है कि नेता और पत्रकार दोनों एक-दूसरे से दोस्ती करने के लिए सदा तैयार रहते हैं और इससे पीत पत्रकारिता जन्मती है। नए पत्रकारों को भी अध्ययन काल एवं शुरुआती दौर में राजनीति से अलग रहना चाहिए।

सत्र - 1993-94 ☐

व्यावसायिकता पत्रकारिता की चुनौती

-माधवकांत मिश्र

राष्ट्रीय सहारा और स्वतंत्र भारत के संपादन से जुड़े रहे माधवकांत मिश्र देश के जाने माने युवा पत्रकारों में से है। शुक्रताल में आयोजित एक प्रशिक्षण शिविर के दौरान उनसे विभिन्न मुद्दों पर ***गोपाल शर्मा*** *की बातचीत के मुख्य अंश:-*

कौन सी भावना आपको पत्रकारिता में लेकर आई?

यह बड़ा नेक सवाल है कि किस भावना से मैं पत्रकारिता में आया। यह निश्चित है कि जिस ध्येय व उद्देश्य को लेकर मैं 1968 में इस क्षेत्र में आया था आज उसमें काफी अतर आया है। लेकिन आज भी मुझे लगता है कि अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा यह क्षेत्र अधिक महत्त्वपूर्ण है। कुछ सकारात्मक कर गुजरने की भावना के साथ मैं इस क्षेत्र में आया।

हिन्दी पत्रकारिता की मुख्य चुनौती क्या मानते हैं?

सबसे बड़ी चुनौती जो हिदी पत्रकारिता के सामने है वह है-व्यवसायिकता की। एशियाड के बाद दूरदर्शन ने जनजीवन में जो रंग भरा है वह सबसे बडी चुनौती है। मूल्यों की चुनौती है, विश्वसनीयता की चुनौती है और खास चुनौती सामने खड़े होने की, टिकने की चुनौती है। आज अखबार का मुकाबला दूरदर्शन से, पत्रिकाओं, फिल्मी पत्रिकाओं से है।

आज आप पत्रकारिता के शिखर पर हैं, इस क्षेत्र में आने वाले कथित पत्रकारों पर कैसे नियंत्रण किया जाए?

पहली बात तो यह है कि मैं शिखर पर नहीं हूं, अभी इस प्रक्रिया में हूँ। वैसे भी पत्रकारिता का कोई शिखर नहीं होता। आज गॉव में जो पत्रकार काम कर रहा है, वह हम से अधिक महत्त्वपूर्ण है। आज जो बडी न्यूज निकली है वह छोटे पत्रकारों से आई है। जो लोग अपनी गाडियों पर 'प्रेस' लिखते हैं उन्हें आज तक यह नही पता कि 'प्रेस' लिखने का अधिकार किसे है। 'प्रेस' लिखने से कोई पत्रकार नही बन जाता। हमें यह मानना पड़ेगा कि पाठकों में इतनी सामर्थ्य है कि वे कथित पत्रकारों को छॉटकर अलग कर दें।

हिंदी पत्रकारिता का भविष्य क्या है?

इसका भविष्य बहुत उज्ज्वल है। पिछले पांच वर्षो में अनेक हिदी पत्र आए

हैं। अनेक संस्थाओं से पत्रकार आ रहे हैं। अंग्रेजी का एक प्रभाव है जो धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है।

आपके पत्र ने एक नई जगह बनाई है, सुना है कि आप अपना पत्र घाटे में बेच रहे हैं?

यह मानना व्यर्थ है कि अखबार खाली पैसे से निकलता है। जिन पत्रों की आप बात कर रहे हैं, उनके पास साधन हैं। बिरला जितना धन हमारे पास नहीं है। हमारा उद्देश्य अलग है, उनका उद्देश्य अलग है। आज अखबारों में हत्या, बलात्कार आदि के समाचार ही अधिक पढ़ने को मिलते हैं। हम चार पृष्ठ अलग से देते हैं जिससे पाठक को शांति मिले और 12 पृष्ठों की यातना से गुजरते पाठक को उस यातना से मुक्ति मिले। इस सबकी बदौलत हमारे अखबार ने नई जगह बनाई है। हमारे उद्देश्य बड़े हैं इसलिए घाटे की अधिक चिंता नहीं।

आज अखबार पूँजीपतियों के हाथों में हैं। क्या आपको लिखने में बाधा होती है?

लिखने में बाधा पूरी तौर पर नहीं होती। यह स्वीकार करने में मुझे कोई संकोच नहीं है कि जो 10 करोड़ रुपये लगाता है वह किसी संवाददाता के लिए नहीं लगाता। वैसे सबसे बड़ी बाधा तो हमारे सामने सरकार है।

अंतराष्ट्रीय अखबार देश में आ रहे हैं, आपको कैसा लगता है?

मैं व्यक्तिगत रूप से इस पक्ष में हूँ कि आने चाहिए, क्योंकि आप इसे बंद नहीं कर सकते। पाठकों को स्वयं निर्णय कर लेने दीजिए। हम प्रतियोगिता के लिए तैयार हैं। हम यह मानकर चलते हैं कि पाठक के साथ न्याय हो। यदि पाठक के साथ न्याय नहीं होगा तो वह चोरी छिपे पढ़ेगा। आज आप बी.बी.सी. क्यों सुनते हैं? क्योंकि हमने अपनी विश्वसनीयता खोई है। यदि हम मेहनत से लग रहे तो कोई भी आए हम क्यों घबराएंगे?

सत्र - 1993-94

अंग्रेजी जनजीवन की भाषा नहीं

-राजेन्द्र शर्मा

*मध्य प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता से जुड़े अनेक ऐसे पत्रकार हुए है जिन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। **'दैनिक स्वदेश'** के प्रधान संपादक श्री राजेन्द्र शर्मा के साथ क्षेत्रीय पत्रकारिता के संदर्भ में **विकास अग्रवाल** की अतरंग बातचीत के प्रमुख अंश :-*

पत्रकारिता के क्षेत्र में आपका प्रवेश कैसे हुआ?

पत्रकारिता में आए हुए मुझे पच्चीस वर्ष से ज्यादा हो गए, तब मै विद्यार्थी था। पढते-पढते ही तब मैने पत्रकारिता में काम किया। ग्वालियर से एक अखबार निकलता था - 'हमारी आवाज'। यह अखबार राजमाता सिंधिया से जुड़ा था। उस अखबार से मेरा पत्रकारिता में प्रवेश हुआ। बहुत कम उम्र थी मेरी, लगभग 20 वर्ष का था। मेरे जीवन का एक मिशन था जिसे पूरा करने की दृष्टि से मै इस क्षेत्र में आया। पत्रकारिता मेरे लिये पैसा कमाने या आजीविका कमाने का माध्यम नहीं थी। इस माध्यम से हम जिन जीवन मूल्यों में आस्था रखते है उन मूल्यों के प्रति अपना योगदान दे सकें, उन मूल्यों को आगे बढाने के भागीदार बन सकें यही मेरा प्रमुख उद्देश्य था। इसका मैने यथासभव प्रयत्न किया।

वर्तमान हिंदी पत्रकारिता को आप किस स्थिति में देखते हैं?

देखिए वर्तमान हिदी पत्रकारिता मेरी दृष्टि से बहुत अच्छी स्थिति में है और केवल आज ही नहीं भविष्य भी हिदी पत्रकारिता का होगा। आज हमें अंग्रेजी पत्रकारिता का विशेष रूप से जो प्रभाव दिखाई दे रहा है वह शनैः-शनैः समाप्त हो जाएगा। अंग्रेजी भले ही कुछ महत्वपूर्ण लोगों की या सत्ता या व्यवसाय की भाषा हो लेकिन जो जनजीवन की भाषा है वह हिदी ही है। अंग्रेजी के माध्यम से कभी भी जनता के साथ सीधा सवाद कायम नहीं किया जा सकता। जिसको भी जनता के साथ जुडना होगा उसको हिदी के साथ जुडना होगा। हिदी ही नहीं अन्य जो दूसरे प्रदेश है उनकी प्रादेशिक भाषा है, उनसे जुडना होगा और आप देखेंगे कि जहा हिदी या भाषाई समाचारपत्र स्थापित है, केवल महानगरों को छोड कर, कहीं भी अग्रेजी समाचार पत्र अपनी जडें नही जमा पाए है। भोपाल मध्यप्रदेश की राजधानी है यहाँ अंग्रेजी बोलने वाले बहुत से लोग है, अनेक भाषाओं से जुडे लोग है फिर भी अंग्रेजी का कोई भी ऐसा पत्र नही है जो कह सके कि मैं बहुत अच्छी तरह स्थापित समाचार पत्र हूँ।

हिंदी की पत्रकारिता आज धीरे-धीरे अनुवाद के दायरे से भी बाहर हो गई है। उसमें हिंदी की एजेंसियों ने बहुत बड़ी निभाई है। जबकि पहले यह होता था कि अंग्रेजी एजेंसियां होती थी और हिंदी की खबर ठीक नहीं मानी जाती थी। लेकिन जब से 'वार्ता' व 'भाषा' पूर्ण रूप से कार्य करने लगी है तब से 90 प्रतिशत समाचार पत्र ऐसे हैं जिनके पास एक ही एजेंसी है। इसलिये हिंदी में कार्य करने की प्रवृत्ति धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। फिर मैं यह कहना चाहूँगा कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में व अन्य भाषाई समाचार पत्र में कुछ न कुछ जो आदान-प्रदान का सिलसिला चलता ही रहना चाहिए। हमें पूर्ण रूप से अनुवाद पर नहीं निर्भर नहीं रहना चाहिये। लेकिन अगर हम अनुवाद बिल्कुल ही छोड़ देंगे तो हम बहुत सी बातें जानने से वंचित हो जाएँगे। इसलिए उनका प्रभुत्व तो हम स्वीकार न करें लेकिन जो जानकारी है वह स्वीकारें। दूसरी भाषाओं की जानकारी से हमारे ज्ञान का क्षितिज विस्तृत होता है।

हिंदी पत्रकारिता के संबंध में क्षेत्रीय पत्रकारिता की क्या भूमिका आप समझते हैं?

देश का कुछ क्षेत्र ऐसा है कि वहाँ हिंदी क्षेत्रीय भाषा है। कुछ क्षेत्र ऐसा है कि जहाँ अन्य भाषा। इस स्थिति में कहीं हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं की स्थिति लगभग समान है। हिंदी सब की तुलना में बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि हिंदी ही सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। दूसरे देशों में भी राष्ट्रभाषा व राज्य भाषा के रूप में हिंदी का स्थान है। हिंदी आज नहीं तो कल इस देश की संपन्न भाषा बनने में सफल होगी ही। आज राजनीतिक समस्या इसके सामने है लेकिन एक समय ऐसा होगा कि राजनीति ही हिंदी की मदद करेगी। फिलहाल राजनीति हिंदी के लिये नुकसानदेह हो सकती है लेकिन राजनीतिक कारणों से लोगों को हिंदी स्वीकार करने के लिये बाध्य होना पड़ेगा।

क्षेत्रीय स्तर पर जो जनचेतना जगाने का कार्य हुआ है उसमें हिंदी ने क्या मदद की है?

जितनी भी चेतना जगी, चाहे राष्ट्रीय चेतना रही हो चाहे जन चेतना रही हो, यहाँ तक कि आज़ादी के आंदोलन में भी जो समाचार पत्र जनता की बात लेकर उठे वे अंग्रेजी अखबार नहीं थे। जो आज बड़े अखबार कहे जाते हैं वह तो उस समय भी अंग्रेजों की दासता करते थे। राष्ट्रीय एकता की या राष्ट्रीय अस्मिता की ध्वजा तो भाषाई समाचार पत्रों ने ही उठाई।

आज हिंदी अखबार की तुलना में अंग्रेजी अखबार की कटिंग महत्वपूर्ण होती है ऐसा क्यों?

अंग्रेजी समाचार पत्रों के साधन आज भी ज्यादा हैं। वह जिस प्रकार से समाचार का संकलन करते है, उस संकलन के परिणामस्वरूप उनके द्वारा दी गई खबर का दायरा ज्यादा बड़ा हो जाता है। वह कुछ अधिक सामग्री जुटाने में सफल हो

पाते है तो यह उनके साधनों की सफलता है समाचार पत्रों की सफलता नहीं है। उनके साथ जो जुड़ी हुई पूँजी है उसकी सफलता है चलाने वालों की नहीं। इसीलिये अंग्रेजी पत्रों में खबरों का बाहुल्य अधिक दिखाई देता है। हिंदी समाचार पत्रों के साधन कम हैं और इसी कारण से अंग्रेजी का समाचार लंबा छप सकता है। वही समाचार जब हिंदी के समाचार पत्र में आएगा तो उसे आधा करने की मजबूरी है क्योंकि अखबार ही छोटा है तो यह पत्रकार का कोई दोष नहीं है। पत्रकार तो अंग्रेजी के समान ही लेख देने की स्थिति रखता है पर उसके पास साधनों का अभाव है। अंग्रेजी अखबार अपना प्रभुत्व ज्यादा दिनों तक कायम नहीं रख पाएँगे। उनका स्थान भाषाई अखबार लेंगे। भाषाई अखबारों में ही हमें अधिकाधिक रूप से सामग्री देने के लिये बाध्य होना पड़ेगा। उदाहरण है 'इंडिया टुडे' का जब से उन्होंने भाषाई संस्करण शुरू किया है तब से अंग्रेजी की तुलना में भाषाई संस्करण ज्यादा बिकता है लेकिन आप देखते हैं कि बड़ा पत्र अंग्रेजी का ही है। क्योंकि उनकी मानसिकता है कि उन्होंने उसे अनुवाद की पत्रिका बना रखा है। पैसा हिंदी से ज्यादा कमा रहे हैं लेकिन दिमाग में अंग्रेजी ज्यादा हावी है इसीलिये वे अंग्रेजी के पक्षधर हैं। लेकिन कब तक पालपोस कर रखेंगे। अंततोगत्वा सफल वही रहेगा जिसकी जड़ें जमीन में हों। क्षेत्रीय भाषाई समाचार पत्रों की जड़ें जमीन में है, वे ही सफल रहेंगे। हिंदी अखबारों पर अंग्रेजी का दबाव लोगों की मानसिकता के कारण भी है।

संपादक के रूप में आपको कौन सी चुनौतियों और दबावों का सामना करना पड़ता है?

चुनौतियाँ सभी प्रकार की हैं। पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है तो हर स्तंभ की अपनी स्वतंत्र सत्ता बनी रहनी चाहिए। लेकिन जो सत्ता रहती है वह सत्ता अपने को सर्वोच्च मानती है इसीलिये उसका प्रयत्न हमेशा रहता है कि बाकी जो स्तंभ हैं वे उसकी तुलना में कमजोर रहें। यह सत्ता का संघर्ष है। हमारी अपनी स्वतंत्र सत्ता के पीछे नैतिक बल है। जितनी मात्रा में हम अपने नैतिक बल को बनाए रखेंगे हम उस दबाव का सामना करने में सक्षम हो पाएँगे। हमारी नैतिक सत्ता यदि कमजोर होगी तो हम दबावों के सामने झुक जाएँगे। प्रत्येक प्रकार की सत्ता चाहे वह धन की हो, शासन या प्रशासन की हो सब पत्रकारिता को दबाने का प्रयत्न करती हैं और उन सब दबावों के सामने खडे होकर हमें अपना काम करते रहना पड़ता है। जब आप उन दबावों का सामना करते हुए काम करते है तो पत्रकारिता का आदर्श भी कायम होता है। जैसे हर व्यक्ति अपने जीवन में कुछ मूल्य रखता है। उस प्रकार के मूल्यों की रक्षा करने का जो आत्मसंतोष है वह भी हमें प्राप्त होता है। लेकिन जब हम किसी दबाव के सामने झुक जाते है तो जिस प्रकार झुका हुआ आदमी अपने मन में पराजय का बोध करता है उसी तरह पराजित उसका समाचार पत्र भी रहता है।

अधीनस्थ सहयोगी के चयन के लिए आपकी क्या कसौटी है?

हर बार व्यक्तियों का चयन समग्र गुणवत्ता के आधार पर ही होता हो ऐसा

संभव नहीं है। कोई आवश्यक भी नहीं कि जो व्यक्ति हमारे पास आया वह सर्वगुण संपन्न हो। जो लोग आते हैं उनमें जो हमारी न्यूनतम आवश्यकता पूरी करता हो। उसे लिखना पढ़ना ठीक से आना चाहिये। उसके अन्तःकरण में कुछ करने की भावना होनी चाहिये। अगर यह उसके मन में है तो वह ठीक ढंग से कार्य करेगा क्योंकि पत्रकारिता एक साधारण व्यवसाय की तरह नहीं है। इसमें घड़ी के काँटों के हिसाब से काम नहीं चलाया जा सकता। जब आप सोते हैं तो भी आप समाचारों को सोचते हैं। समाचारों के साथ जीना, विचारों के साथ जीना और विचारों के साथ रहना यह उसकी प्रतिक्रिया बन जाती है। जो व्यक्ति पूरी तरह से इनमें डूब कर काम करने के लिये तैयार हो वही चुना जाता है।

स्वदेश को एक विशेष विचारधारा से जुड़ा हुआ माना जाता है। क्या आपको नहीं लगता कि इससे पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर प्रभाव पड़ता है?

किसी भी व्यक्ति के कुछ न कुछ विचार तो होते ही हैं। तो किसी विचार से जुड़े रहना यह कोई कमजोरी नहीं हो सकती। हमारे यहाँ जिन लोगों ने देश की आजादी के लिये संघर्ष किया क्या उनके कोई विचार नहीं थे? विचार विहीन होकर हम कुछ नहीं कर सकते। किसी भी देश का समाज का निर्माण एक सुनिश्चित विचार को लेकर चलने वाले व्यक्ति के माध्यम से ही हो सकता है। इस व्यवसाय में हमारे अपने विचार कुछ भी हो सकते हैं लेकिन व्यवसाय के जो सिद्धांत हैं मैं उनका पालन करता हूँ। किसी दल विशेष के साथ किसी व्यक्ति विशेष के साथ मेरी असहमति हो सकती है तो क्या मैं किसी व्यक्ति की आलोचना करने के लिये तैयार हूँ। लेकिन मैं जिस विचार को पसंद नहीं करता तो मैं उस विचार की आलोचना करने के लिये मुक्त नहीं हूँ क्या? बिल्कुल हूँ।

क्या इलैक्ट्रॉनिक मीडिया जनचेतना जगाने का कार्य कर रहा है या उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा दे रहा है?

इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका विशेष महत्व रखती है। इससे कभी भी इनकार नहीं किया जा सकता। इसके दुष्परिणाम भी हैं। हर ज्ञान के दो प्रकार से इस्तेमाल होते हैं। जैसे एटम बम है, एटम बम की जानकारी प्रकृति के नये रास्ते भी खोल सकती है और विध्वस भी कर सकती है। हमें समय की गति के साथ ही चलना पड़ेगा, जीवन मूल्यों को आधुनिकता और इन सब बातों को छोड़ कर हम नहीं चल सकते। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया से भयभीत होकर काम नहीं चल सकता। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा समाज के निर्माण को क्या दिशा दी जा सकती है। इसका विचार करना पड़ेगा। इसका लाभकारी पक्ष यह है कि स्टार टी.वी. से बच्चे कुछ लिखने पढ़ने लगे हैं। उनके माध्यम से शिक्षा को गांव-गांव में ले जाया जा सकता है। यह इसका सकारात्मक पक्ष है।

दुर्भाग्य से हमारे यहाँ इलैक्ट्रॉनिक मीडिया पर सरकार का इतना ज्यादा नियंत्रण है कि उसका जैसा उपयोग जनहितकारी हो सकता है वैसा सरकार के नियंत्रण के

कारण नहीं हो पा रहा है। अगर सरकार ने उससे अपना नियंत्रण ढीला किया तो उससे बहुत सी जानकारी हमें मिलेगी। मैं समझता हूँ कि इलैक्ट्रॉनिक मीडिया से भयभीत होने की आवश्यकता नही है।

आज देश में पत्रकारिता के कई पाठयक्रम चल रहे हैं। उन्हें आप कितने उपयोगी समझते हैं?

पत्रकारिता के प्रशिक्षण की व्यवस्था तो होनी ही चाहिये क्योंकि प्रशिक्षु पत्रकार निश्चित रूप से ज्यादा उपयोगी हो सकते है। अभी उनकी संख्या बहुत कम है। पत्रकारिता जनता के पास पहुँचने का एक माध्यम है और इस समय जो व्यक्ति जनता के पास जाना चाहेगा तो उसे पत्रकारिता मीडिया का ही इस्तेमाल करना होगा। जितना ज्यादा प्रसार हो सके उतना अच्छा है। शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त हो सके, इसकी पूरी योजना तैयार करनी चाहिये। विश्वविद्यालय ऐसे स्थानों पर चलने चाहिए जहाँ से व्यवहारिक प्रशिक्षण साथ-साथ दिया जा सके तो वह ज्यादा सफल हो पाएँगे। इससे यह होगा कि आप क्लास में महीना भर पढ़ेंगे वह आप एक दिन में व्यावहारिक रूप में जानकर ठीक से कार्य करने लगेंगे क्योंकि यह फील्ड ही व्यावहारिक है इसमें किताबी प्रशिक्षण विशेष महत्व नही रखता है। इसमें व्यावहारिकता ही प्रमुख है।

□

सत्र - 1992-93

समाज के चरित्र से उपजी है पीत पत्रकारिता

-राजेंद्र तिवारी

स्व0 राहुल बारपुते, स्व0 राजेन्द्र माथुर और प्रभाष जोशी जैसे प्रखर पत्रकार देने वाले 'नई दुनिया' के भोपाल संस्करण के प्रबंध संपादक श्री राजेन्द्र तिवारी ने पत्रकारिता के कई उतार चढ़ाव देखे-भोगे हैं। 'दैनिक नई दुनिया' के प्रकाशन वृक्ष को मूल से काटकर भी नए स्थान पर नई जड़ें देना उन्हीं के बस का था। उनसे डी.एन.जुयाल के साक्षात्कार के प्रमुख अंश:-

आप मूल रूप से इंजीनियर थे फिर पत्रकारिता में प्रवेश कैसे हुआ? क्या कोई विशेष उद्देश्य इस क्षेत्र में लाया?

ये सही है कि मैंने इंजीनियरिंग में डिग्री ली हुई है। नई दुनिया मेरे स्वर्गीय पिताजी ने प्रकाशित किया था। पहले से ही यह पत्र अपनी कुछ विशेषताओं के कारण मध्यप्रदेश में ही नहीं, बल्कि अन्य प्रांतों में भी लोकप्रिय रहा है। पिताजी की मृत्यु के पश्चात् एवं व्यावसायिक कारणों से भोपाल का प्रकाशन, जो 'दैनिक नई दुनिया' में परिवर्तित हो गया, का प्रबंध मुझे देखना पड़ा। जहां तक उद्देश्य का प्रश्न है करीब पाच दशक से हमारा अखबार जनचेतना और शिक्षा के अभियान से जुड़ा हुआ है। हमारी कोशिश रहती है कि जन समस्याओं को प्रमुखता से उठाया जाए।

क्या अखबार की कोई निश्चित विचारधारा होनी चाहिए?

अखबार प्रजातंत्र के चौथे स्तम्भ के विशेषण को तभी सार्थक कर सकता है जब उसकी एक ही विचारधारा हो और वह है 'जनहित' की विचारधारा।

हिंदी पत्रकारिता के आगे आप किन चुनौतियों को प्रमुख मानते हैं?

हिंदी पत्रकारिता में अभी भी अनुवाद की समस्या है। विशेषकर अंतरराष्ट्रीय समाचारों को विदेशी एजेंसियों से लेना पड़ता है और अभी भी अंग्रेजी की पत्रकारिता 'डोमिनेंट' कर रही है।

'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' का बढ़ता प्रभाव 'प्रिंट मीडिया' को कहां तक प्रभावित कर रहा है।?

'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' का असर अखबारों को बेअसर नहीं कर सका। भारत में इसका विस्तार विदेशों से बहुत बाद में हुआ। टेलीविजन पर समाचार निश्चित समय पर ही आते हैं जबकि अखबारों में खबरों का विश्लेषण होता है। पाठक जब

चाहे तब अखबार पढ़ सकता है। दूरदर्शन मनोरंजन तो कर सकता है किंतु नई समस्याओं को प्रतिबिंबित नहीं कर पाता। कहीं-कहीं तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया समाचार पत्रों के लिए सहयोगी भी होता है।

मौजूदा दबावों के चलते पत्रकारिता की नेतृत्वकारी भूमिका के बारे में आपके क्या विचार हैं?

हम किसी भी तरह के दबावों से प्रभावित नहीं होते। अभी हाल में 'रूसी पठान' वाला मुद्दा, जिसमें उसके संबंध राजनीतिज्ञों से उजागर हुए, सबसे पहले ***'नई दुनिया'*** में प्रकाशित हुआ। सत्ता का हस्तक्षेप तभी होता है जब अखबार से जुड़े लोग व्यक्तिगत लाभ के लिए सत्ता का सहयोग लेते हैं।

क्या विज्ञापनों से समाचार पत्र के प्रकाशन में हस्तक्षेप या दबाव नहीं बनाया जाता है?

जहा तक सरकारी विज्ञापनों का संबंध है वे एक नीति के तहत अखबारों को मिलते रहते हैं। फिर भी चुनाव का अधिकार तो सरकारी मशीनरी के पास ही रहता है। जहाँ तक विज्ञापन लेने का प्रश्न है आपको पता होना चाहिए कि अखबार के पेपर की कीमत ही समाचार पत्र की पाठकों से ली गयी कीमत से अधिक होती है। छपाई का खर्चा, रख-रखाव, वितरण आदि के खर्चे इसके अतिरिक्त हैं। अर्थात् इन खर्चों की भरपाई विज्ञापनों से ही की जाती है। लेकिन विज्ञापन भी अखबार के 35 से 40 प्रतिशत हिस्से में विज्ञापित किए जाते हैं। साथ ही साथ विज्ञापन के प्रकाशन से पूर्व विश्वसनीयता की परख जरूर होनी चाहिए। हम विज्ञापनदाता की अपनी शर्तों पर ही विज्ञापन नहीं देते हैं।

क्या यह सच है कि समाचार पत्र आजकल सांप्रदायिक होने लगे हैं?

कुछ समाचार पत्रों ने रामजन्म भूमि विवाद के बाद स्वयं को ऐसा प्रस्तुत किया है मानों वे एक पक्षीय हों। समाचार पत्रों को समाज में सद्‌भाव का ध्यान रखकर संतुलित भूमिका निभानी चाहिए। जैसे हम दंगों के समय समाचार देने में ये सावधानी रखते हैं कि दंगों में मरने या घायल होने वालों का नाम या संप्रदाय का उल्लेख न हो।

क्या आप समाचार पत्र उद्योग में औद्योगिक सम्बन्धों के लिए यूनियन के पक्षधर हैं?

मैं यूनियनों को कर्मचारी और प्रबंधन दोनों के बीच एक पारिवारिक रिश्ते की कड़ी मानता हूँ। इस क्षेत्र में हमें जापान को देखना चाहिए जहां प्रबंधन का काम कार्य-वितरण देखना है। जब कि उत्पादन में मजदूरों की सक्रिय भागीदारी रहती है। आजकल भारत में यूनियनों का विचार एक तरफ हो गया है। उन्हें उत्पादन या उद्योग की समस्याओं से कोई मतलब नहीं रह गया। यूनियनों को चाहिए कि वे मजदूरों के हितों के साथ-साथ संस्थान की समस्याओं को भी समझें।

पत्रकारिता में चारित्रिक गिरावट के बारे में आपका क्या आकलन है?

जहाँ तक पत्रकारिता जगत में चारित्रिक गिरावट का प्रश्न है तो यह गिरावट समाज के हर वर्ग में आई है। पत्रकार भी इसी समाज के बीच रहता है। 'यलो जर्नलिज्म' से पत्रकारों को बचना चाहिए। समाचारों को केवल सनसनीखेज बनाने के लिए तोड़ा-मरोड़ा जाएगा तो उनमें सत्य और तथ्य का स्तर गिरेगा। पत्रकारिता के उज्ज्वल भविष्य के लिए इन बातों को रोका जाना चाहिए।

सत्र - 1992-93

शस्त्र से अधिक ख़तरनाक हैं शब्द

-डॉ. रामस्वरूप विद्रोही

मध्य प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार डॉ. रामस्वरूप 'विद्रोही' अपनी कार्यशैली के लिए खासे चर्चित रहे हैं। उन्होंने ग्वालियर में रह कर ही अपनी शिक्षा पूरी की। विद्रोही जी दैनिक भास्कर के संस्थापक सम्पादकों में से एक रहे हैं। उन्होंने दैनिक भास्कर और राजस्थान पत्रिका के सम्पादक के रूप में कार्य किया। 1984 से डॉ. विद्रोही 'आचरण' के संपादक के रूप में कार्य कर रहे हैं। प्रस्तुत है उनसे **पुरवेंद्र कुमार** *का एक संवाद :-*

आप पत्रकारिता के क्षेत्र में कब से कार्य कर रहे हैं और इस पेशे को क्यों चुना?

पत्रकारिता के क्षेत्र में मुझे 34 वर्ष हो गये हैं। मैंने राजनीति के लिए पत्रकारिता को चुना। राजनैतिक विचारधारा के तहत दलित शोषित व्यक्तियों की आवाज को उठाया। इसके माध्यम से हम उनकी लड़ाई लड़ सकते है। जब मैंने महसूस किया कि मैं राजनीति में रहकर यह लड़ाई नहीं लड़ सकता तो मैंने पत्रकारिता को अपना लिया और राजनीति छोड़ दी।

आदर्श और व्यावहारिक पत्रकारिता में अंतर कैसे करेंगे?

सारे लोग समाज के बीच से निकल कर आते है। हमको यह नहीं मानना चाहिए कि हम बहुत बड़े समाज सुधारक है। हमें यह गलतफहमी अपने दिमाग से निकालनी है कि हम बहुत बड़ी क्रांति करने जा रहे है या हम समाज सुधारक है। हम समाज की एक इकाई मात्र है। हमें अपनी हैसियत को जानते हुये अपनी शक्ति और दायरे में हम जितने अच्छे काम कर सकते है उस पर ध्यान देना चाहिए। लोग बुराई कर रहे हैं। तो उस बुराई की भी मुख़ालफत होनी चाहिए। लेकिन हम इसमें ही बहस करते रहे कि आदर्श क्या और व्यवहार क्या है? हमें तो अपने आदर्श के तहत अपने व्यवहार को बनाकर चलना चाहिए। ये ही संतुलन इन दोनों के बीच में होना चाहिए।

अखबारों में पत्रकारों का आर्थिक शोषण हो रहा है? इस बारे में आप क्या कहेंगे?

हाँ, हो रहा है। यह तो व्यवस्था का दोष है और इस शोषण को बर्दाश्त करते हुए ही हम अपने वर्ग को शोषण रहित बनाने के लिए ही पहल कर सकते है। अगर यह लड़ाई व्यक्तिगत स्तर पर होती है तो निश्चित रूप से नुकसान संबंधित

उस व्यक्ति को होगा जो उस लड़ाई की अगुवाई कर रहा है। लेकिन परिस्थितियाँ बहुत तेजी से बदल रही हैं। यह तो सभी जगह होगा कि कहीं श्रम का सही मूल्य मिलेगा और कहीं कम मिलेगा। मिलकर प्रयास करने से ही शोषण से मुक्ति मिलेगी।

सत्य के प्रति आपकी क्या प्रतिबद्धताएं हैं?

सत्य का सदा अनुसंधान करना चाहिए क्योंकि समय के हिसाब से सत्य की परिभाषाएँ, व्याख्याएँ बदल जाती हैं। एक सत्य महात्मा बुद्ध के समय में था वह आज नहीं हो सकता। इनके परवर्ती या पूर्ववर्ती लोगों के बीच में अपना सत्य रहा होगा। हर जिज्ञासु को हमेशा सत्य का अनुसधान करना चाहिए।

आप दबाव में किस प्रकार कार्य करते हैं?

दबाव तो कई तरह के होते हैं। यह हमारा कौशल है और एक लेखक का होना भी चाहिये क्योंकि शब्द, शस्त्र से अधिक खतरनाक होता है। शस्त्र का घाव तो भर जाता है लेकिन शब्द का घाव नहीं भरता। शब्द को 'ब्रह्म' भी कहा गया है। इसलिए हमारी लेखनी में ऐसा कौशल हो कि सारे दबावों, तनावों के बीच में से कोई ऐसा रास्ता निकालें कि तलवार पर चलते हुये भी अपनी बात कह सकें।

आप विज्ञप्तियों पर कितने आधारित हैं?

स्थानीय हिसाब से विज्ञप्तियों को स्थान देना ही पड़ता है क्योंकि उनके साथ समाज जुड़ा होता है। अब मैं एक व्यक्ति की बात कहता हूँ। अब मैं एक व्यक्ति की बात कहता हूँ, एक दो या चार पत्रकार शहर की हर गली या मोहल्ले तक नहीं पहुंच सकते। यह संभव भी नहीं है और व्यवहारिक भी नहीं। उस क्षेत्र के लोग अपनी चैतन्यता दिखाते हैं और अपनी बात विज्ञप्तियों द्वारा हम तक पहुंचाते हैं। वे किसी पार्टी के दफ्तर के बजाए किसी अखबार के दफ्तर में आते हैं। उनके जीवन से जुड़ी समस्याएं उजागर करना हमारा दायित्व है।

लोग कहते हैं आप पहले विद्रोही किस्म के थे लेकिन अब आपकी धार कुंठित हो गई है?

धार कुंठित नहीं हुई। जो इस तरह का आरोप लगाते है, वह ठीक नहीं है। हमारे अनुभव यह रहे कि अधिक कठोरता के साथ कार्य करने से हम जितने लोगों के साथ काम कर सकते है, उससे भी वंचित हो जाते हैं। हमारा एक दृष्टिकोण यह भी हो गया है कि समाज कुर्सी और जगह को ही महत्व देता है। व्यक्ति हमारे लिये कुछ भी नहीं। अगर मैं एक अखबार का संपादक नहीं हूँ तो क्या मैं सर्वहारा समाज के लिए कुछ कर सकूँगा, जो मुझसे कुछ आशा लगाए हुए हैं। अगर मैं पूरी तरह विद्रोही रहूंगा तो निश्चित रूप से अलग-थलग पड़ जाऊँगा और कुंठाओं, पागलपन का शिकार हो जाऊंगा। ऐसा नहीं मानना चाहिए कि हमारी धार भौथरा गई या हम काम नहीं कर रहे हैं। यह तो एक 'एडजैस्टमैंट' है, जो कार्य को आगे बढ़ाने के लिए जरूरी है।

युवा पत्रकारों के लिये आपका कोई संदेश?

निष्ठा, कठोर परिश्रम से कार्य करें इसको पैसों की तराजू पर न तौलें। हालाँकि महत्वाकाँक्षा जरूर होनी चाहिए। किन्हीं कारणों से वह लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पा रहा है तो भी उसे धैर्य रखना चाहिए। उसके परिश्रम का प्रतिभा का, समाज मूल्यांकन करता है फिर उसे इतना देता है कि उसको समेटा भी नहीं जा सकता। हमें यह सोचे बिना कि हमें मिल कितना रहा है, अपना कार्य करना चाहिए। संपूर्ण संपर्क के बिना किसी क्षेत्र में सफलता नहीं मिल सकती। आप एक पान की दुकान भी नहीं चला सकते। पत्रकारिता में सफलता के लिए तो संपर्क और भी जरूरी है। □

सत्र 1993-94

आज तेज गति की पत्रकारिता है

-रामशरण जोशी

*रामशरण जोशी काफी समय से मध्य प्रदेश के प्रतिष्ठित दैनिक 'नयी दुनिया' से जुड़े हुए हैं और काफी अनुभवी पत्रकार हैं। श्री जोशी ने 'कटघरे' और 'चुनौतियों का चक्रव्यूह' जैसी कई पुस्तकें भी लिखी हैं। प्रस्तुत है उनसे **राजीव वर्मा** की बातचीत कुछ अंश :-*

जोशी जी, वर्तमान पत्रकारिता की चुनौतियाँ क्या-क्या हैं?

हिंदी पत्रकारिता के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी विश्वसनीयता बनाये रखने की है। पिछले कुछ वर्षों से ये विश्वसनीयता लगातार आशंकाओं के घेरे में खड़ी है। दूसरी बड़ी चुनौती हिंदी में 'पेशेवर' की भावना पैदा करने की है क्योंकि जहाँ अंग्रेजी प्रतिष्ठानों में व्यावसायिकतावाद को प्रोत्साहित किया जाता है वहीं हिंदी प्रतिष्ठानों में उसके प्रति उदासीनता कर ली जाती है। परिणामत: एक स्तरीय पत्र की दृष्टि से हिदी, अंग्रेजी की तुलना में कुछ कमजोर दिखाई देती है। इसी से जुड़ी तीसरी चुनौती हिंदी के पत्र-पत्रिकाओं के उपांगीकरण की है। पिछले कुछ वर्षों के अनुभव हैं कि अंग्रेजी प्रतिष्ठानों से निकलने वाली हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं का दुमछल्ला बना कर रखा जाता है। कुछ महानगरीय प्रेस समूह उपांगीकरण की संस्कृति के ज्वलन्त मिसाल हैं। इन प्रतिष्ठानों से निकलने वाले नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, दैनिक हिंदुस्तान जैसे हिंदी दैनिकों को अंग्रेजी दैनिकों की तुलना में दोयम दर्जे का महत्व दिया जाता है।

आज की पत्रकारिता और 20 साल पूर्व की पत्रकारिता में क्या अन्तर आया है?

1967 में मैंने पत्रकारिता में प्रवेश किया। तब से अब तक सबसे बड़ा बदलाव रफ्तार का है। तब धीमी गति की पत्रकारिता होती थी, आज तीव्र गति की पत्रकारिता दिखाई देती है। तब श्वेत-श्याम दैनिक निकला करते थे, अब रंगीन पत्र निकलते हैं। तब पैदल या साइकिल पर रिपोर्टिंग होती थी, आज वातानुकूलित कारों आदि में रिपोर्टिंग की जाती है। लेकिन सबसे बड़ा बदलाव यह आया है कि उस समय के पत्रकार का कहीं न कहीं वैचारिक परिवेश होता था। वह किसी न किसी रूप में मिशनरी भावना से उत्प्रेरित रहता था। आज हम अपनी विशुद्ध कलम का श्रम बेचने वाले बन चुके हैं।

हिंदी पत्रकारिता संकट के दौर से गुजर रही है, इस संकट को आप

किस रूप में अनुभव करते हैं? पत्रकारिता के संकट के लिए कौन लोग जिम्मेदार हैं- पत्रकार, समाज या मालिक?

देखिए, हर दौर में अपनी चुनौतियाँ और संकट रहते आए हैं। जैसा कि मैंने शुरू में ही कहा था कि आज सबसे बड़ा संकट विश्वसनीयता और साख का है। इसके लिए सत्ता-प्रतिष्ठान, व्यावसायिक-प्रतिष्ठान और पत्रकार सामुदायिक रूप से जिम्मेदार है। फिर भी सबसे बड़ी जिम्मेदारी प्रेस-मालिकों की है। इसके बाद पत्रकार समुदाय की है।

वर्तमान समाज और राजनीति हिंसा, घृणा और भ्रष्टाचार के जिस दौर से गुजर रही है उससे पत्रकारिता किस तरह से प्रभावित हुई है?

पत्रकारिता दोहरी भूमिका निभा रही है। जहाँ वह समाज को रास्ता दिखाने की कोशिश करती है, वहीं वह समाज का आईना भी है। जैसा समाज है वही पत्रकार के शब्द दर्पण में प्रतिबिंबित होता है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि पत्रकारिता भी समकालीन व्यवस्था की 'बाई-प्रोडक्ट' है। वह अलगांव में नहीं हो सकती। अत: भ्रष्टाचार, अपराधीकरण इन तरीके की प्रवृतियों से पत्रकारिता बिल्कुल ही अप्रभावित रहेगी, यह सोचना आत्म-छलावा है।

यह आज सब कुछ गड्ड-मड्ड हो गया है। तो भी बिल्कुल निराश होने जैसी स्थिति भी नहीं है। समाचारपत्रों ने ही प्रतिभूति, चारा, यूरिया, हवाला, दूरसंचार जैसे घोटालों को उजागर किया है। अत: यह कहा जा सकता है कि वक्त आने पर पत्रकार अपनी जिम्मेदारी भी निभाता है।

हिन्दी पत्रकारिता की स्थिति क्या ऐसी ही रहेगी या इसमें सुधार की संभावना आपको दिखती है? इसमें नए पत्रकारों की क्या भूमिका होनी चाहिए?

मैं आशावादी हूँ। यकीन है कि वर्तमान चुनौतियां पत्रकारिता को कुंदन के रूप में निखारेंगी। और नयी पीढ़ी के पत्रकार इस चुनौती को स्वीकार करेंगे। ये सही है कि भटकाने वाला माहौल पहले की तुलना में आज अधिक है, पर यह भी मानता हूँ कि युवा पत्रकार विपथगामी नहीं होंगे। आने वाले समय में अपनी यथार्थपरक भूमिका निभाएँगे। समाज के सरोकारों के प्रति उदासीन न बनें। समकालीन चुनौतियों का डट कर मुकाबला करें व अपनी विश्वसनीयता अक्षुण रखें। यही मैं भावी पत्रकारों को कहूँगा।

सत्र 1996-97 □

बाजारू साहित्य टिकाऊ नहीं है

-विजयदत्त श्रीधर

पत्रकारिता जगत में अनूठे भोपाल स्थित संग्रहालय के संस्थापक-निदेशक और नवभारत दैनिक के समाचार संपादक रह चुके विजयदत्त श्रीधर, 'मध्य प्रदेश के समाचार पत्र', 'मध्यप्रदेश में पत्रकारिता का इतिहास' जैसी पुस्तकों के लेखक भी हैं। नव पत्रकारों को सही दिशा देने के लिए आप के संपादकत्व में 'आंचलिक पत्रकार' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। प्रस्तुत है उनसे ***सुशील उपाध्याय*** *की बातचीत के प्रमुख अंश:-*

इस संग्रहालय की स्थापना का विचार आपके मन में किस प्रकार आया?

देखिए, जीवन का एक उद्देश्य होता है। हम इंसान के रूप में पृथ्वी पर आये हैं। इसलिए कुछ अच्छा काम करके यहाँ से जाने में ही सार्थकता है। केवल पैदा होना और मर जाना ही सब कुछ नहीं है। लेखन के साथ-साथ पुरानी पत्र-पत्रिकाओं को एकत्र करने का शौक मुझे विरासत में मिला और फिर हमारा आँचलिक पत्रकार संघ भी इस बारे में कार्य कर रहा था। स्व. रामेश्वर गुरू के संपर्क में मैं काफी समय से था। उन्हीं की प्रेरणा और उनके द्वारा प्रदत्त साहित्य से संग्रहालय की स्थापना का विचार बना।

संग्रहालय की स्थापना में मुख्य सहयोगी कौन लोग रहे?

पं. रामेश्वर गुरु के अलावा हिन्दी के पाणिनी पं. कामता प्रसाद गुरू, जबलपुर के अवध बिहारी गुप्ता, माखन लाल चतुर्वेदी जी के छोटे भाई, जिन्होंने 'कर्मवीर' का पूरा का पूरा सेट उपलब्ध कराया। इनके अलावा सरस्वती के संपादक देवीदयाल खत्री, रतन कुमार एवं यशवंत जी ने हमें पूरा सहयोग दिया और अपने पास सुरक्षित साहित्य निधि हमें बेहिचक सौंप दी।

क्या संग्रहालय के लिए साहित्य क्रय भी किया गया है?

नहीं, क्रय नहीं किया गया है। न ही हम क्रय करने के पक्ष में हैं। केवल उपहार में प्राप्त है। यह अलग बात है कि इसको लाने और रख-रखाव में कुछ खर्च किया गया है। वास्तव में क्रय करने की स्थिति में हम हैं भी नहीं क्योंकि हमें केवल एक लाख रुपये की वार्षिक सहायता मिलती है। जबकि संग्रहालय में कार्य कर रहे कर्मचारियों का वेतन इससे कहीं अधिक बैठता है। हमने व्यक्तिगत

रूप से मिलकर भी पुराने साहित्य को एकत्र करने का प्रयास किया है। क्योंकि कागज की एक उम्र होती है। इसलिए जिनके पास ऐसा साहित्य था वे भी किसी ऐसे संस्थान को देने के पक्ष में थे जहाँ इसका सही उपयोग हो सके और सुरक्षित रहे। क्योंकि इस साहित्य का भौतिक मूल्य कुछ भी नहीं है। दूसरी बात यह पश्चिम नही है, भारत है। यहाँ इस साहित्य की कीमत रद्दी से भी कम है। ऊँचे दामों पर इसकी नीलामी असंभव है। लोगों ने सामग्री को इसलिए भी दिया क्योंकि वे समझ रहे थे कि इसके नष्ट होने पर इतिहास का कितना बड़ा नुकसान हो सकता है।

संग्रहालय में मुख्यत: किन-किन भाषाओं की पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं?

नौ वर्ष पुराने इस संग्रहालय में हिन्दी की 100 वर्ष पुरानी एक मात्र जीवित पत्रिका 'मध्यप्रदेश संदेश' का पूरा संकलन उपलब्ध है। भाषाओं के लिहाज से देखे तो भारत की लगभग सभी भाषाओं की पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध है लेकिन मुख्यत: हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी बांगला, उर्दू, गुजराती का संकलन है। अच्युत राव का 'मराठी संदेश' पूरे महाराष्ट्र में कहीं नहीं मिलेगा लेकिन वह हमारे पास उपलब्ध है। वैसे संग्रहालय में अधिकांश मूल प्रतियाँ हैं। लेकिन मूल प्रति के अभाव में फोटोकॉपी की व्यवस्था की गई है। प्रसिद्ध पत्रकार माधव राव गढ़ी ने इस संग्रहालय के विषय में कहा था कि 'यह सोने के पत्रों का संग्रहालय है'।

आप इस समय हिन्दी पत्रकारिता के संमुख कौन सी चुनौतियाँ मानते हैं?

दो चुनौतियां प्रमुख रूप से हैं, एक तो हिंदी के पाठकों में स्वाभिमान की कमी और अपनी भाषा के प्रति गौरव की अनुभूति न होना। दूसरी चुनौती है खरीद कर पढ़ने के स्थान पर माँग कर पढ़ने की आदत, जिसे राजेंद्र माथुर जी 'बाजार बाधा' कहा करते थे। हिंदी का पाठक पान, बीड़ी, सिगरेट, शराब और यहाँ तक की वेश्या पर खर्च करेगा लेकिन साहित्य पर कुछ खर्च नहीं करेगा। साहित्य खरीदने पर जिस गौरव की अनुभूति होती है उसका उसे अहसास नहीं है।

क्या आप ऐसा नहीं सोचते की हिन्दी पाठक की आर्थिक हालत यह अनुमति नहीं देती की वह महँगा साहित्य खरीद कर पढ़े?

कुटैव के लिए हिन्दी पाठक के पास पैसा है। घर में यदि श्वेत-श्याम टी. वी. है तो वह रंगीन होना चाहिए। वाहन दुपहिया है तो कार होनी चाहिए। लेकिन साहित्य के महँगे होने का रोना रोया जा रहा है। एक मजदूर को चालीस-पचास रुपये मजदूरी मिलती है। जबकि सामान्यत: एक साहित्यिक पत्रिका दस रुपये की हो जाने पर महँगी लगती है। हम अपने भीतर की हीन ग्रंथि को संतुष्ट करने के लिए बड़े शौक से महँगा बाजारू साहित्य खरीदकर पढ़ते हैं। उस समय कमजोर आर्थिक हालत कहाँ चली जाती है।

आपके विचार से बाजारू साहित्य के बढ़ते प्रभाव को कैसे रोका जाए?

धीरे-धीरे इसके प्रभाव को रोकने की चेतना हमारे अन्दर पैदा होगी। परिस्थितियों से दबाव बनते है, समूह बनते है। गाँधी जी ने नमक के मुद्दे पर भी इसी प्रकार का दबाव समूह बनाया था। बाजारू साहित्य टिकाऊ नहीं है। हमारा सबका कर्त्तव्य है कि जो जहाँ पर है, उसे वहीं पर दबाव समूह बनाना चाहिए। लेखक, पत्रकार, प्राध्यापक और समाजसेवी इस कार्य को अच्छी प्रकार से कर सकते हैं। बाजारू साहित्य पढ़ने-पढ़ाने की मानसिकता को तोड़ने के लिए कुछ न कुछ तो प्रयास करना ही होगा।

पत्रकारिता जगत में, विशेषकर हिंदी पत्रकारिता जगत में आयी चारित्रिक गिरावट के विषय में आप क्या सोचते हैं?

वह तो सभी जगह आई है। पत्रकारिता का जितना बड़ा दायरा होगा उसमें उतनी ही कमियां होंगी। पत्रकार भी आदमी ही है, कोई देवदूत नहीं। चारित्रिक गिरावट असभव नहीं है।

अखबार या पत्रकार को किसी विचारधारा विशेष से जुड़ना चाहिए या नहीं?

जुड़ना चाहिए, बिल्कुल जुड़ना चाहिए। लेकिन समाचार संप्रेषण में उसकी विचारधारा हावी न हो। यदि विचारधारा विशेष का प्रचार ही करना है तो उससे संबंधित लेख लिखे जा सकते हैं। ये न हो कि हम समाचार अयोध्या का दे रहे हों और उसमें साम्यवादी विचारों को घुसेड़ने का प्रयास करने लगे।

आपके विचार से पत्रकार के लिए संघबद्ध होना कितना आवश्यक है?

बहुत आवश्यक है। अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए उसे निश्चित रूप से यूनियन से जुड़ना चाहिए। लेकिन नेतागिरी के लिए अनावश्यक रूप से संघबद्ध होना मैं उचित नहीं मानता। रही हारने, जीतने और विरोध की बात तो वह सब लोकतंत्र में आवश्यक है।

हिन्दी पत्रकारिता पर इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का क्या प्रभाव पड़ेगा?

हिन्दी पत्रकारिता पर इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का कोई प्रभाव नहीं पड़ने वाला। क्योंकि छपा हुआ शब्द अधिक प्रभावशाली है। बहुत आसानी के साथ उसे रिकार्ड में रखा जा सकता है। लेकिन इलैक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रदत्त सामग्री को सुरक्षित रखना कठिन और खर्चीला काम है। दूसरी तरफ इस सामग्री का उपयोग एक निश्चित समय के लिए ही हो सकता है।

भाषा और वर्तनी के मामले में हिन्दी पत्रकार की स्थिति के बारे में आप क्या सोचते हैं?

इस प्रकार की कमजोरियाँ तो सभी जगह हैं। हिन्दी में थोड़ी ज्यादा है। कारण स्पष्ट है कि हमारे संवाद प्रेषक कम पढ़े लिखे है। या फिर अन्य कार्यों की वजह से निरंतर अध्ययन जारी नहीं रख पाते। इस कारण उनके पास शब्द भंडार, वाक्य

विन्यास, शैली और मुहावरे आदि के प्रयोग का अभाव है। लेकिन इन सब बातों के साथ हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि पत्रकारिता शुद्ध साहित्य नहीं है। पत्रकारिता और पांडित्य का रिश्ता अधिक गहरा नहीं है।

क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि हिन्दी पत्रकारिता में रचनात्मकता के स्थान पर छिद्रांवेषण का महत्व बढ़ गया है?

हिन्दी में ही क्यों यह तो प्रत्येक स्थान पर बढ़ा है। पत्रकारिता में सही सूचना देना, समाचार का सही दिशा में निरूपण ही तो रचनात्मकता है। केवल साहित्य सृजन करना ही रचनात्मकता नहीं है। पत्रकार भी समाज का ही अंग है। जब समाज में क्षरण होगा तो पत्रकार भी अलग नहीं रह सकता।

आपकी नजर में एक आदर्श पत्रकार के लिए कौन से मानदंड आवश्यक हैं?

कोई मानदंड आवश्यक नहीं है। अपनी सोच और सामर्थ्य से समाज का हित करते रहना, ईमानदारी के साथ अपनी जवाब-देही का निर्वाह ही आवश्यक मानदंड है।

संपादकीय विभाग और प्रबंधकों के मध्य चलने वाले तनावों का अंतिम समाधान क्या है?

इसका कोई भी अंतिम समाधान नहीं है। क्योंकि प्रबंधकों की नजर में विज्ञापन और प्रसार विभाग कमाऊ पूत है। जबकि संपादकीय विभाग हमेशा अनावश्यक खर्च करता रहता है, ऐसा उनका मानना है। ये अंतर आदिकाल से है और अनंतकाल तक चलता रहेगा। तो फिर आपसी तनाव भी निरंतर चलते रहेंगें।

हिन्दी पत्रकारिता में महिलाओं की नगण्य स्थिति के बारे में आप क्या सोचते हैं?

पत्रकारिता में अब महिलाओं की संख्या बढ़ रही है। आप मध्य प्रदेश की किसी भी अखबार के संपादकीय कार्यालय में जाकर देखिए। बड़ी संख्या में महिलाएँ नजर आएँगी। इसलिए आपका यह सोचना गलत है कि हिन्दी पत्रकारिता में महिलाओं की संख्या कम है।

अंग्रेजी का वर्चस्व तोड़ने के लिये हिन्दी पत्रकारिता की कार्यशैली किस प्रकार की होनी चाहिए?

अंग्रेजी का वर्चस्व है ही कहाँ। मात्र दो या तीन प्रतिशत लोगों द्वारा समझी जाने वाली भाषा का वर्चस्व नहीं हो सकता। इस प्रकार का भ्रामक प्रचार फैलाना तो काली चमड़ी वाले अंग्रेजों का काम है क्यौंकि आज भी ये लोग शोषक और शोषित का अंतर बनाए रखना चाहते है। यदि इस प्रकार के प्रभाव से बचना है तो हमें अपने संवाददाता से समाचार उस भाषा में मँगाना होगा, जिसे वह सबसे अच्छे ढंग से जानता हो इसके बाद उसका अनुवाद हिंदी में कर सकते है।

अंग्रेजी का विरोध आप क्यों करते हैं? क्या आप नहीं सोचते कि

अंग्रेजी के ऊपर हमारी निर्भरता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है?

अंग्रेजी का विरोध मैंने कभी नहीं किया। लेकिन अंग्रेजों जैसी मानसिकता और अपनी मातृभाषा को हीनता की दृष्टि से देखने का मैं विरोधी हूँ। अंग्रेजी का प्रचार-प्रसार अच्छी बात है लेकिन उसी सीमा तक जब तक यह हमारी मातृभाषा की सहयोगी बन कर रहे। उस पर हावी न हो जाए। किन लोगों की निर्भरता अंग्रेजी पर बढ़ती जा रही है उन्ही उच्च प्रशासनिक अधिकारियों की ना! जो आज भी नागरिक को नागरिक नहीं प्रजा मानते हैं। भारत का आम आदमी हिन्दी का विरोध नहीं करता। वह चाहे कश्मीर का हो या तमिलनाडु का। विरोध करना केवल राजनीतिक खेल है। यदि दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ थोड़ा-सा भी प्रयास किया जाए, तो एक बार में ही अंग्रेजी हाशिएँ पर नज़र आएगी। आखिर केरल सरकार को पत्र अंग्रेजी में क्यों लिखे। हम निश्चय करें कि हम हिंदी में पत्र लिखेगें उसका मलयालम में अनुवाद उसके साथ लगाएँगे। आखिर चीन, फ्रांस, जर्मनी, क्यूबा, या फिर सोवियत संघ ने बिना अंग्रेजी के कैसे उन्नति कर ली। अंग्रेजी विकास की गारंटी तो नहीं। अंग्रेजी हमारी गुलाम मानसिकता का प्रतीक है। सच कहूँ तो हिंदी लज्जाशील गृहणी है, जबकी अंग्रेजी वेश्या है।

हिन्दी पत्रकारिता के भविष्य के बारे में आपका क्या आंकलन है?

भविष्य बड़ा अच्छा है। हिन्दी पत्रकारिता भी विस्फोट के कगार पर है। उपेक्षा का भाव घटेगा। पाठकों की संख्या आश्चर्यजनक ढंग से बढ़ेगी। क्योंकि सबसे बड़ा अनपढ़ तबका हिन्दी बोलने वालों का ही है।

पत्रकारिता जगत में प्रवेश करने वाले युवाओं के लिए आप क्या कहना चाहेगें?

मैं ये कहना चाहूँगा कि अपनी जिज्ञासा को इतना जगाएं कि पाठकों के साथ आपका तारतम्य जुड़ जाए। पाठकों की भूख का अहसास आप कर सकें। अपने आपको बदलने के लिए हमेशा तैयार रहें। जिस प्रकार का व्यवहार हम दूसरों के प्रति कर रहे है वैसा ही हमारे साथ भी होगा यह याद रखें किसी प्रकार की जिद नहीं होनी चाहिए। हम अगर संपादक है, तो जरूरी नहीं कि एक प्रूफ रीडर हमारी गलती नहीं निकाल सकता। सदैव हरेक से कुछ न कुछ सीखने का प्रयास करते रहना चाहिए।

□

सत्र - 1992-93

सांस्कृतिक आज़ादी अभी आनी है

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक

*डॉ. वेदप्रताप वैदिक देश के उन चंद विद्वान पत्रकारों में से एक है, जो दशकों से भारतीय भाषाओं की लड़ाई भी लड़ रहे हैं। डॉ. वैदिक करीब तीन दशक से सक्रिय पत्रकारिता से जुड़े हुए हैं। वे पी.टी.आई. भाषा के संपादक रहे और अब चंद्रप्रभा प्रकाशन की जिम्मेदारी उनके हाथों में है। शुक्रताल में एक पत्रकारिता प्रशिक्षण शिविर में शामिल डॉ. वेदप्रताप वैदिक से **मुदित कुमार** की बातचीत :-*

आपको पत्रकारिता में आने के लिए किसने प्रेरित किया, कोई विशेष घटना या कोई अन्य कारण?

मैं बहुत छोटी उम्र से पत्रकारिता में हूँ। सात आठ साल की उम्र से बराबर लिख रहा हूँ। पाठशाला में था तब वहाँ लेख लिखा करता था। पत्रकारिता में क्यों आए इस पर कभी सोचा नहीं, बस आ गए। कोई अगर मुझे कहे कि आप पत्रकार क्यों है, तो भई, पत्रकारिता एक साधन है हमारे लिए। मूल काम तो समाज को बदलना है, देश की चहुँदिश उन्नति करना है। पत्रकारिता एक आयाम है, जितना मैं लिखता हूँ उससे ज्यादा तो बोलता हूँ। तो लोग मुझे क्या कहेंगे? पत्रकार या वक्ता? पत्रकारिता साध्य नहीं है, जैसे कई लोगों का साध्य होता है, और वे समझते है, हमने पत्रकारिता कर ली, पैसे कमा लिए, तनख्वाह ले ली, हो गया काम। मेरे लिए ऐसा नहीं है।

आज हिन्दी की पत्रकारिता को अनुवाद की पत्रकारिता में तब्दील किया जा रहा है। इस संदर्भ में आप क्या कहना चाहेंगे?

वास्तव में भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता को इस सत्य को स्वीकार करने में संकोच नहीं करना चाहिए। इसका मूल कारण यह है कि भारत अभी भी गुलाम है। भारत सांस्कृतिक दृष्टि से, वैचारिक दृष्टि से शुद्ध गुलाम देश है, इसलिए हिंदी अखबारों और हिंदी पत्रकारिता का कोई अस्तित्व नहीं है। इस देश में जो लोग नीति निर्माण करते है, इस देश को चला रहे है, उनके लिए तो अंग्रेजी पत्रकारिता ही सब कुछ है। हिंदी पत्रकारिता तो उच्छिष्ट है, जूठन है, दुमछल्ला है और इस दुमछल्लेपन के खिलाफ लड़ाई में एकदम अधमरे रहने वाले हिंदी के पत्रकार है। ये कभी अपनी लड़ाई लड़ते ही नहीं है और साहित्यकार तो निकृष्ट है, उन्हें अपने औजार के बारे में ही कोई चेतना नहीं है। हिन्दी भाषा में लिखते तो है लेकिन

उसकी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष करना उनके स्वभाव में नहीं है। वे अपना सारा निजी काम अंग्रेजी में करते हैं। यही हालत पत्रकारों की है, वह नौकरी पाने के लिए तो दौड़ता है लेकिन उसकी भाषा अंग्रेजी से बेहतर स्थान पाए इसके लिए संघर्ष नहीं करता। लगभग सारे पत्रकार अपना निजी काम अंग्रेजी में करते हैं। मैं अपना सारा काम हिंदी में करता हूँ, जबकि मैं अंग्रेजी के गढ़ पी.टी.आई. में काम करता हूँ।

पत्रकार शब्द की परिभाषा क्या है? पत्रकारिता के क्षेत्र में अयोग्य व्यक्तियों का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है, इस पर किस तरह नियंत्रण किया जा सकता है?

अयोग्य व्यक्तियों पर नियन्त्रण तो अपने आप ही आएगा। यह सब कुछ समय के बाद होगा। पत्रकार वही है जो पत्रकारिता से जुड़ा है, इसकी कोई विस्तृत परिभाषा मान्य नहीं है। अखबार के दफ्तर में जो चपरासी होता है वह भी पत्रकार है। अगर वह अपना काम न करे, लिखा हुआ मसाला छापेखाने तक न पहुंचाए तो अखबार ही नहीं छपेगा। अत: जो हॉकर अखबार बेचता है वह भी पत्रकार है, जो लोग लिखते हैं, अखबारों के सवाददाता हैं तथा अन्य लिखने वाले, वह सब भी पत्रकार हैं।

आपने हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के सम्मान के लिए जो संघर्ष चला रखा है उसमें कहाँ तक सफलता मिली है?

सफलता के लिए तो सघर्ष किया ही नहीं था। संघर्ष तो संघर्ष के लिए किया, इसलिए कि यह आवश्यक था। मैं तो यह समझता हूँ कि हिदी का रथ बहुत आगे बढ़ रहा है और बिना किसी को थकाए बहुत यात्राए कर रहा है। आज हिंदी के अखबार बहुत मजबूत हो गए हैं। हिंदी के साथ जुड़ी हुई शक्ति है गाँव के लोग, देश के पिछड़े लोग, छोटी जातियों के लोग आदि, इनमें जागृति की लहर पिछले सालों में बहुत तेजी से उठी है। मैं समझता हूँ हम सवर्ण लोग, शहरों में रहने वाले संपन्न लोग, जिन्होंने इस मुल्क पर कब्जा कर रखा है, इस लहर को रोक नहीं पाएंगे। यह जागृति हमारे सारे बंधन, जिन्हें हमने अपने विशेषाधिकारों के लिए लगा रखे हैं, को ध्वस्त करेंगी। यह अलग बात है कि इसमें पांच साल लगे या पंद्रह साल। जैसे देश आजाद हुआ था - राजनीतिक दृष्टि से तो देश सांस्कृतिक दृष्टि से भी आजाद होगा। इसे गुलाम बनाकर अब रखा नहीं जा सकता है और इसमें यह जो भारतीय समाज की आतरिक शक्तियों का विस्फोट हुआ, आरक्षण भी इसका एक कारण रहा, राजनेताओं का भ्रष्टाचार भो इसका कारण रहा है। इनसे जो उथल-पुथल भारतीय समाज में हुई वह भारतीय भाषाओं के आंदोलन के रथ को काफी आगे बढ़ाएगी।

आपने प्रूफ रीडर की हैसियत से पत्रकार जीवन शुरू किया था। आज आप "भाषा" के सम्पादक हैं, आपकी इस सफलता का राज क्या है?

मैं फिर कहूंगा कि सफलता के लिए मैंने कोई कार्य नहीं किया। सफलता मेरा कभी लक्ष्य रहा ही नहीं। हमेशा काम करते रहना और जो भी काम करो उसमें पूरा मन लगाना यही मेरा लक्ष्य रहा है। इसलिए प्रूफ रीडर से संपादक बन गए, नहीं बनते तब भी ठीक था। मेरी दृष्टि से प्रूफ रीडर और संपादक में कोई अंतर नहीं है। बुनियादी दृष्टि से दोनों एक ही चीज हैं, जैसे फसल काटना और खेत जोतना।

आपने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शोध किया है, सोवियत संघ का विघटन हो चुका है, अब ऐसा कौन सा देश उभर कर आएगा जो अमेरिका की चुनौती स्वीकार कर उसे उत्तर दे सके।

कई देश हैं, जैसे यूरोपीय देश हैं, वह भी अमेरिका की कठपुतली की तरह कार्य नहीं करेंगे। उसके अलावा जापान वगैरह आर्थिक शक्ति के केंद्र के तौर पर उभर कर आएंगे। वैसे दुनिया कभी एक-ध्रुवीय रहती नहीं है। शक्ति संतुलन ऐसा रहता है कि कई ध्रुव बन जाते है, तो मुझे लगता है कि सोवियत संघ के जाने के बाद नए कई ध्रुव उभरेंगे। यूरोप उनमें से एक होगा, जापान एक होगा, खाड़ी के देश भी एक हो सकते है। इस तरह से एक ध्रुव चीन भी हो सकता है। अगर भारत और चीन मिलकर काम करें तो वह बहुत बड़ा शक्ति ध्रुव हो सकता है।

पत्रकारिता से जुड़ी आपके जीवन की ऐसी कोई घटना जिसे आप कभी भुला नहीं पाए?

बहुत है, अनंत है, जैसा गालिब ने कहा है-

"हजारों ख्वाहिशें ऐसी,
कि हर ख्वाहिश पर दम निकले।"

तो हजारों घटनाएं है जो भूलती ही नहीं है।

आज राष्ट्रीय अखबार चाहे वह हिंदी के हों या अंग्रेजी के उनके समक्ष क्षेत्रीय अखबार एक चुनौती पेश कर रहे है, इस संबंध में आपका क्या विचार है?

आप एकदम ठीक कह रहे है कि अंग्रेजी के पत्रों का जो दबदबा था उसको हिन्दी के प्रदेशों ने बिल्कुल साफ कर दिया है। दक्षिण भारत में, पूर्वी भारत में या पश्चिमी भारत में स्थानीय अखबार इतने बलिष्ठ हो गए है कि उन्होंने अंग्रेजी अखबारों को खदेड़ दिया है। दुनिया में विदेशी भाषा के अखबार किसी राजधानी से इतने नहीं निकलते जितने कि दिल्ली से निकलते हैं। इसलिए अब सबसे बड़ा हमला दिल्ली पर बोला जाना चाहिए। मेरी राय यह है कि दिल्ली में जबर्दस्त मोर्चा लगाया जाना चाहिए। लाखों हिंदी भाषियों को, हजारों पत्रकारों को वहाँ पहुंचना चाहिए, धरना देना चाहिए और अंग्रेजी अखबारों और अंग्रेजी एजेंसियों को बंद करवाना चाहिए।

हिंदी पत्रकारिता का भविष्य क्या है?

अत्यन्त उज्ज्वल है। हिंदी पत्रकारिता का ही भविष्य है, अंग्रेजी पत्रकारिता का भविष्य अंधकार में है, कोई भविष्य नहीं है।

आपने लगभग 50 देशों की यात्राएं की हैं- आपको भारत की पत्रकारिता और दूसरे देशों की पत्रकारिता में क्या फर्क महसूस हुआ?

मुझे लगता है कि भारत की पत्रकारिता सारी दुनिया की पत्रकारिता से अधिक सक्षम और वृहद है। खासतौर से तब जब भारत में साक्षरता अपेक्षाकृत कम है। यह तो नहीं कहूंगा कि बहुत कम है, क्योंकि दुनिया में कई ऐसे देश भी हैं जहाँ साक्षरता 10-15 प्रतिशत तक ही है। तो इस मायने में भारत में काफी साक्षरता है। उस हिसाब से इस देश की पत्रकारिता में बहुत गुण हैं- निर्भीकता, निष्पक्षता, पक्षधरता सब कुछ है। बहुत ही जबर्दस्त, बड़ी गुणशाली और बहुत ही शक्तिशाली है भारत की पत्रकारिता।

पत्रकारिता में आने वाली पीढ़ी के लिए आपका क्या संदेश है?

खूब काम करना चाहिए जो काम आपके जिम्मे है। उसे कौशलपूर्वक निभा लेना यही संदेश है, यही गीता में कहा गया है-

"योग: कर्मसु कौशलम्"

अर्थात् योगी को अपने काम को कौशलपूर्वक करना चाहिए। खूब मेहनत से, खूब चित्त लगा के, पूरी ईमानदारी से, जो कोई भी काम आपको मिले उसे करें। □

सत्र - 1991-92

मैंने अपने पिता के खिलाफ भी छापा है

-शलभ भदौरिया

मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ के अध्यक्ष शलभ भदौरिया अक्सर चर्चाओं का केंद्र रहे है। पूर्व विधायक बलात्कार कांड की रिपोर्टिंग को लेकर देशभर में उनका नाम सुना गया। उन पर अपराधी प्रवृति का होने के आरोप भी लगे। प्रस्तुत है, उनसे एक संवाद ***विजय शंकर शुक्ल का:-***

आप मध्य प्रदेश के श्रमजीवी पत्रकारों के हितों के लिए निरंतर संघर्ष करते रहे हैं। इसकी प्रेरणा आपको कहाँ से मिली।

मैं एक ऐसे परिवार से हूँ, जिसमें मेरे चाचा माधो सिंह डाकू थे। मेरे पिता जी मेरी माँ को बगैर कारण डंडों से पीटते रहते थे। हमारे इलाके में वैसे भी महिलाओं की कोई इज्जत नहीं है। उदाहरण के लिए बड़ा भाई बैठा हो, छोटा भाई पानी मांगें और भाभी ने पानी लाने में जरा सी देर की तो भाई के सामने ही छोटा भाई भाभी को पीट सकता है। इसे समाज तो बुरा नहीं मानता किंतु इन सब बातों का मैंने विरोध किया। अत: मुझे अन्याय-अत्याचार से लड़ने की प्रेरणा अपने घर से मिली।

आपको अपराधी प्रवृत्ति का पत्रकार कहा जाता है। लोग यह भी कहते है कि आपने माफिया के बल पर ही श्रमजीवी पत्रकार संघ के अध्यक्ष का चुनाव जीता है?

आजकल यह बहुत आसान बात हो गयी है कि जिसके आगे आप न जीत पाओ उसे अपराधी प्रवृत्ति का बता दो। जो लोग हमसे चुनाव हारे है वे स्वयं अपराध प्रवृत्ति के हैं। मैं पत्रकारिता को अपराध के बल पर नहीं चलाता न मैं किसी माफिया का नेता हूँ। मैं तो छोटे-छोटे श्रमजीवी पत्रकारों का नेता हूँ। हाँ, श्रमजीवी पत्रकारों का जब कोई उत्पीड़न करता है तब मैं हाथ-पाँव चलाने में भी विश्वास रखता हूँ। क्योंकि पुलिस आमतौर से ऐसे मामलों में कोई सहयोग नहीं करती है।

भोपाल के दैनिक 'नई दुनिया' में पिछले दिनों जो हड़ताल हुई उसको लेकर कहा जाता है कि आपने अपने स्वार्थों के चलते यह हड़ताल करवाई है?

देखिए, 'नई दुनिया' अखबार, जो राजेंद्र तिवारी चलाते हे, वह पेशे से इंजीनियर और व्यवसायी हैं। उनको अखबार और पत्रकारिता से कुछ नहीं लेना देना है। उनके प्रेस में श्रमजीवी पत्रकारों का शोषण होता है। वहाँ के कर्मचारियों ने हड़ताल के

लिए मेरा सहयोग माँगा। श्रमजीवी पत्रकार संघ के अध्यक्ष होने के नाते मैंने सहयोग दिया। नई दुनिया अखबार कई दिनों तक प्रकाशित नहीं हो पाया। परिणाम यह हुआ कि उसका सरकुलेशन जो चालीस हजार था वह घट कर 16 हजार हो गया। किंतु उन्हें हमारी मांगें माननी पड़ी। मेरे रहते मध्य प्रदेश के श्रमजीवी पत्रकारों का कोई भी अखबार मालिक शोषण नहीं कर सकता। अगर करेगा तो उसका अखबार नहीं निकलेगा। अब चाहे मुझे वह जो भी बताता फिरे, उससे मुझे क्या?

आप अपने पत्रकार जीवन की कोई ऐसी घटना बताएँ जिसके लिए आपने जोखिम उठाया हो?

मैंने तो पग-पग पर पत्रकारिता के लिए मूल्य चुकाया है। (अपनी बाँह दिखाते हुए) मेरी बाँह देखिए, इसे गुंडों ने बिल्कुल बेकार कर दिया है। आपने अखबारों में गणपत धुर्वे विधायक के कमरे में बलात्कार का केस पढ़ा होगा। उसका भंडाफोड़ मैंने किया है। बात दरअसल यह है कि मेरे आदमी हर जगह काम करते हैं। इसका लाभ यह है कि भोपाल में कोई भी घटना हो उसकी खबर सबसे पहले मुझे लगेगी।

गणपत धुर्वे का मामला भी ऐसा ही था। उन दिनों मध्यप्रदेश विधान सभा का सत्र चल रहा था। उसी समय एक आदिवासी लड़की धुर्वे के कमरे में लाई गई। जिसके साथ लगातार चार दिनों से सामूहिक बलात्कार किया जा रहा था। मुझे खबर मिली। तब मैंने पाइप के रास्ते से चढ़ कर देखा। फोटो लिया। कमरा खोलकर लड़की बरामद की। अपने घर लाया, 22 दिन तक अपने घर रखा। उसका बयान, उसका फोटो अपने अखबार में छापा। मैं उन दिनों में **'अपनी दुनिया' अखबार** का प्रधान संपादक था जो कि छोटा अखबार है और विधानसभा सत्र के दौरान केवल दो या तीन सौ प्रतियों में बिकता था। किंतु इस कांड के दौरान उसकी चार-पांच हजार प्रतियाँ बिकने लगी क्योंकि गणपत धुर्वे के बलात्कार का सही ब्यौरा इसी अखबार में छपता था। बड़े-बड़े अखबार भी अपनी रिपोर्टिंग उसी के आधार पर करते। पुलिस लगातार 22 दिन तक लड़की का पता नहीं लगा पायी। बाद में इस कांड को लेकर जनता ने विधान सभा पर प्रदर्शन किया। धुर्वे कांग्रेस पार्टी से निकाला गया और गिरफ्तार हुआ।

इस कांड में आपको कोई मुश्किल उठानी पड़ी?

क्यों नहीं? पुलिस धमकी देती थी कि केस उठा लो, चुप रहो जब मैं चुप नहीं रहा तो एम.एल.ए. रेस्ट हाउस के सामने गुंडों ने मेरे ऊपर हमला किया। मेरी बांह तोड़ दी। पुलिस में मैंने रिपोर्ट दर्ज कराई, पुलिस ने कोई कार्यवाई नहीं की। फिर मैंने उन गुंडों से अपनी तरीके से लड़ाई लड़ी। अन्त में धुर्वे को भी विधानसभा की सदस्यता छोड़नी पड़ी।

कभी कोई ऐसा अवसर आपके सामने आया जब आपको लगा हो कि जो कुछ आप लोगों को बता रहे थे, वह सच नहीं था?

हाँ धुर्वे कांड में ही मुझे यह भी अनुभव हुआ। घटना से एक साल बाद मैं

जान पाया कि वह बलात्कार स्वयं धुर्वे ने नहीं किया था। अपितु उसके चुनाव में जिस पूंजीपति ने पैसा लगाया था उस पूंजीपति और उसके आदमियों ने धुर्वे के कमरे में बलात्कार किया था। धुर्वे उनकी संगत और उसका निवास स्थान होने के कारण उस लपेट में आया और उसको अपनी विधायकी से हाथ धोना पड़ा।

आज की पत्रकारिता पर आप क्या टिप्पणी करना चाहेंगे?

आज की पत्रकारिता, पत्रकारिता के लिए नहीं हो रही है, व्यवसाय के लिए हो रही है। मैं मानता हूँ कि पत्रकारिता, पत्रकारिता के लिए होनी चाहिए। व्यवसाय या जिसको पेट चलाना कहते है उसे आप कैसे भी चला सकते है। आखिर चंबल के डाकू भी चला ही रहे हैं। अगर आपने पत्रकारिता को अपने ऐश्वर्य या दूसरों को ठगने का साधन बना लिया तो फिर आपमें और चम्बल के डाकू में मेरी समझ से कोई फर्क नहीं है।

समय-समय पर जो वेज बोर्ड पत्रकारों के लिए बैठते रहते हैं उसमें आपने कोई उल्लेखनीय सुझाव दिया हो या कार्य किया हो?

जब बछावत आयोग बैठा तो श्री बछावत मंदसौर के रहने वाले थे। मेरे परिचित थे उनको मैंने कुछ सुझाव दिये जिन्हें उन्होंने माना भी और श्रमजीवी पत्रकारों के वेतन निर्धारण के लिए मानक बना। मेरा पहला सुझाव था कि पहले तो एक अखबार अगर कई जगह से एक ही व्यक्ति निकाल रहा हो तो उसका मालिक एक माना जाए। दूसरे, समस्त संस्करणों की शुद्ध आमदनियों पर नहीं अपितु कुल आमदनी को आधार बनाकर मजदूरी की दरें तय की जाए। मुझे खुशी है कि मेरा सुझाव माना गया।

आपने पत्रकारिता कहाँ से शुरू की?

1971 में दैनिक जागरण से। आपको एक दिलचस्प बात बताएँ मैं दैनिक जागरण की डेस्क पर था। मेरे पिता जी जुआ खेलते पकड़े गये। मैंने अखबार में बाकायदा उनका नाम प्रकाशित किया और यह भी लिखा कि उल्लेखनीय है कि इनका पुत्र एक प्रतिष्ठित अखबार का उप सम्पादक है।

सत्र - 1992-93

कन्नड़ और हिन्दी मेरी दो आँखें हैं

-डॉ.चि.ना. केशवमूर्ति

आज जबकि अध्यापन कार्य केवल व्यवसाय बनकर रह गया है। अध्यापक आदर्शों से विमुख होकर समाज के अन्य वर्गों की भांति भौतिकवादी एवं विषयोन्मुख हो रहा है। ऐसे संक्रांति काल में मैसूर विश्व विद्यालय मैसूर के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.चि.ना. केशवमूर्ति आदर्शों की पुनर्स्थापना के लिए प्रयासरत हैं। इस मनीषी ने सुदूर दक्षिण में हिन्दी का अलख जगाने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। अपने बारे में वे क्या कहते हैं, उन्हीं के शब्दों में बता रहे हैं सुरेन्द्र कुमार कपिल :-

केशवमूर्तिजी, अपने जीवन के बारे में कुछ बताइए?

मैं तो हिन्दी का साधारण सा उपासक हूँ। मेरा जन्म 13 जून, 1937 को मैसूर जिले के हुनसूर तालुक के गांव चिलकुंडा में हुआ। कन्नड़ मेरी मातृभाषा है। तीन वर्ष की आयु में ही मैं अनाथ हो गया, फिर चाचा ने आश्रय दिया। उनके यहाँ 12 वर्ष की आयु तक पशु चराए, खेती में हाथ बँटाया और पूरी तरह निरक्षर रहा। फिर मेरे एक मामा को मुझ पर दया आ गई तो उन्होंने शिक्षा की व्यवस्था की। मैंने केवल दो वर्ष में सात कक्षाएं उत्तीर्ण की और बोर्ड की परीक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त किया। फिर परिस्थितियाँ मुझे अनाथालय में ले गई वहीं बाकी शिक्षा-दीक्षा हुई। फिर सुमित्राम्मा नामक अल्पशिक्षित युवती से विवाह हुआ जिसने अपने अथक प्रयत्न से बाद में एम.ए., पीएच.डी. तक शिक्षा प्राप्त की। मेरे दो पुत्र श्री नारायण और केशवचंद्र उत्पन्न हुए जो संप्रति क्रमशः फ्लाइंग अफसर और कम्प्यूटर विभाग में रीडर है। 13 वर्ष पूर्व पत्नी का देहांत हो गया। मैंने इस नौकरी से पूर्व डाकतार विभाग में लिपिक, जनगणना विभाग में टाइपिस्ट, यातायात अधिकारी, ऑडिटर, हिंदी अध्यापक और फिर रीडर के रूप में कार्य किया है। मैं अपने बेटों को देश सेवा में देखना चाहता हूँ। मेरा मंतव्य समझकर मेरा बेटा अमेरिका से भारत आ गया और अब इसी विश्वविद्यालय में कार्यरत है।

शैक्षिक प्रशासन और छात्र हित में समन्वय रखने में क्या कोई कठिनाई होती है?

क्यों नहीं, प्रशासन मेरा उन्मुक्त और छात्रों के हितार्थ अधिक कार्य करना पसंद नहीं करता क्योंकि इससे छात्र अन्य लोगों से मेरी तुलना करते है तो उन्हें बुरा लगता है। किंतु मैं परवाह नहीं करता। मेरे लिए सत्कार्य एवं छात्र-हित ही

सर्वोपरि है।

आप की मातृभाषा कन्नड़ है। फिर हिंदी के प्रति इतना प्रेम कैसे?

कन्नड़ और हिन्दी मेरी दो आँखें है। हाँ, कन्नड़ मेरी प्राथमिकता जरूर है, किंतु हिन्दी के प्रति इससे मेरे दायित्व में कहीं कोई कमी नहीं आती। दक्षिण भारत में हिन्दी का विरोध सर्वथा अनुचित है। लेकिन उत्तर भारत के कतिपय विद्वान हिन्दी को केवल अपनी बपौती मानते है। भाषा किसी की बपौती नहीं है। दक्षिण भारत में प्रयुक्त हिन्दी को वे दूसरे दर्जे की हिन्दी मानते है जो मुझे स्वीकार्य नहीं है। भाषा को बलपूर्वक थोपे जाने से उसका सही प्रचार-प्रसार नहीं हो सकता। भाषा एक माध्यम भी है, अपने आप को अभिव्यक्ति करने का। मुझे गर्व है कि मैं हिंदी का एक सेवक हूँ। भाषा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति, राष्ट्रीय भावना का विकास, देश प्रेम एकता और समग्रता की भावना पैदा करना है और इन सब कार्यों को हिन्दी के माध्यम से ही किया जा सकता है।

आप इतने वर्षों से हिन्दी प्रचार-प्रसार का कार्य करते रहे हैं। इस दौरान कुछ लेखन वगैरह भी किया?

इस लोक सेवा यज्ञ में भाग लेते रहने के कारण व्यक्तिगत रूप से चिंतन का अवसर नहीं मिला। मैं जो कुछ हूँ आपके सामने हूँ। पुस्तक और व्यक्तित्व में बड़ा अंतर होता है। छात्रों को भेजी जाने वाली पत्राचार पाठय-सामग्री का अधिकांश अंश मैंने लिखा है। इसके अतिरिक्त कुछ लिखने का समय मैं निकाल नहीं पाता।

अपनी रुचियों के बारे में कुछ बताएंगे?

हाँ, क्यों नहीं! मुझे काम करने में ही आनंद मिलता है। अतिथि सत्कार और परोपकार मुझे प्रिय है। प्रकृति से मुझे गहरा लगाव है। मैंने मैसूर से 40 किमी दूर एक नंदनवन बनाया है। यह भूमि 30 वर्ष पूर्व मैंने 100 रुपये में खरीदी थी। इसमें लगभग सभी प्रकार के पेड़-पौधे है। जैसे दालचीनी, हर प्रकार की मिर्च, तेजपात, लौंग, इलायची, पान, नारियल, सुपारी, कोको, काजू, बादाम, अगूर आदि। इसके अलावा यहाँ तीन सौ से भी अधिक किस्म के गुलाब के पौधे है। मेरी इच्छा होती है कि मैं प्रकृति में ही खो जाऊं।

सत्र - 1991-92

वैज्ञानिकों की सामाजिक पहचान जरूरी है

-पद्मविभूषण डॉ.जयकृष्ण

एशिया में इंजीनियरिंग शिक्षा की सिरमौर संस्था रुड़की विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति तथा शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार से सम्मानित डॉ. जयकृष्ण उन वैज्ञानिकों में से एक है जिन्हें देश में भूकंप अभियांत्रिकी का पिता माना जाता है। वे 85 वर्ष की आयु में भी वैज्ञानिक गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए है। 1990 में टिहरी बांध की भूकपीय सुरक्षा की जांच के लिए नियुक्ति उच्च स्तरीय पुनर्समीक्षा समिति जब एकमत नहीं हो सकी तो अंतिम समीक्षा का दायित्व डॉ. जयकृष्ण को सौंपा गया था। प्रस्तुत है डॉ. जयकृष्ण से ***मो. शकील*** *की बातचीत :-*

डॉ. जयकृष्ण आप अपने बचपन व पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में कुछ बताइए।

जिला मुज़फ्फरनगर के गालिबपुर गाव में एक कृषक परिवार में मेरा जन्म 1912 में हुआ। उस समय मेरे परिवार में अंग्रेजी शिक्षा को अच्छा नही माना जाता था, लेकिन मैने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की। रुडकी थॉमसन कालेज (अब विश्वविद्यालय) से इंजीनियरिंग करने के बाद मैंने लंदन से पीएच डी की। 1945 में सरकार ने कर्मचारियों को विदेश जाकर पढ़ने की छूट दी थी। इसी कारण मै 1954 में लंदन जा सका। रुड़की से मै पहला आदमी था जो पीएच.डी. करने लंदन गया।

आपने भूकंप अभियांत्रिकी को ही क्यों चुना?

भूकप संबंधी अनेक ऐसी बातें थी, जो मैं पहले भी छात्रों को पढ़ाता था, लेकिन स्वयं ठीक ढग से समझ नही पाता था। भूकंप विज्ञान संबंधी चीजों को सही ढंग से समझने के लिए मैंने इसी विषय को चुनने का फैसला किया।

उस समय देश में भूकंप अभियांत्रिकी किस दशा में थी?

चूंकि भूकंप हमेशा से आते रहे है, इसलिए उस समय भी लोग भवन, पुल आदि का निर्माण सुदृढ़ तो करना चाहते थे लेकिन यह सब होता अनुमान के आधार पर ही था। अभियात्रिकी का इसमें कोई दखल नहीं था। लोगों को मालूम ही नही था कि इस तरह की कोई अभियात्रिकी भी हो सकती है। जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया भी उस समय केवल भूकप से हुए नुकसान का अध्ययन करने का काम करता था।

रुड़की विश्वविद्यालय में आपने किन-किन पदों पर काम किया?

मैं पहले रुड़की विश्वविद्यालय में लेक्चरर बना। बाद में रीडर, प्रोफेसर और डायरेक्टर रहा। अंत में विश्वविद्यालय के कुलपति पद से सेवानिवृत्त हुआ।

आपके अब तक कितने शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं? कोई विशेष शोधपत्र बताएं?

अब तक मेरे सौ से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। 1965 में न्यूजीलैंड में मैंने जो शोधपत्र पढ़ा था, उसे मैं विशेष मानता हूँ। इसमें बताया गया है कि किस तकनीक को अपनाकर ईंटों के मकानों को कम खर्चे में भूकंपरोधी बनाया जा सकता है। ऐसे कुछ मकान लातूर (महाराष्ट्र) में बनाए गए थे, जो पिछले भूकंप में ध्वस्त नहीं हुए। इसी तकनीक को आज पूरी दुनिया अपना रही है।

आपको देश में भूकंप अभियांत्रिकी का पिता क्यों माना जाता है?

दरअसल, भूकंप अभियांत्रिकी शब्द सबसे पहले मैंने प्रयोग किया। अभियांत्रिकी में स्ट्रक्चरल डॉयनामिक्स और सॉयल डॉयनामिक्स शब्दों का प्रयोग मेरे द्वारा ही किया गया। मैं इन चीजों को सामान्य ढंग से लेता हूँ। क्योंकि मैंने जो कुछ भी किया, वह अपना फर्ज पूरा करने के लिए किया।

आपको कौन-कौन से पुरस्कार मिल चुके हैं?

जापान सरकार द्वारा 1988 में मुझे सम्मानित किया गया। इसे मैं अपने जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार मानता हूँ। यह पुरस्कार मेरे अतिरिक्त केवल एक अमेरिकी वैज्ञानिक को मिला है। इसके अलावा मुझे शांति स्वरूप भटनागर, पद्मविभूषण, नेशनल डिजायन अवार्ड, रेलवे बोर्ड अवार्ड तथा मुद्‌गल अवार्ड मिल चुके हैं।

आप समझते हैं कि देश ने आपके कार्य का सही मूल्यांकन किया है?

मैंने कभी स्वयं अपना मूल्यांकन नहीं किया। न ही कभी यह बात मेरे ज़ेहन में आई कि मेरे कार्यों का सही मूल्यांकन हुआ या नहीं।

फिलहाल देश की भूकंप अभियांत्रिकी किस दशा में है?

इस क्षेत्र में देश ने काफी तरक्की की है। आज तमाम बड़े निर्माण भूकंपरोधी तकनीक के आधार पर किए जा रहे हैं। इससे जान-माल के नुकसान के खतरे काफी कम हो गए हैं। भूकंपीय क्षेत्रों की खोजबीन का सिलसिला भी जारी है।

भूकंप अभियांत्रिकी का इस्तेमाल बड़े सरकारी निर्माणों तक सीमित है, ऐसा क्यों?

सच ये है कि कोई भी अभियांत्रिकी आम आदमी तक नहीं पहुँच पाई है। इसका मुख्य कारण है कि देश का गरीब होना। आम आदमी के सामने रोजी-रोटी का मसला अहम है। उसकी जिंदगी में अभियांत्रिकी का कोई रोल नहीं है।

देश में वैज्ञानिकों की सामाजिक पहचान न बन पाने के क्या कारण रहे?

यह राजनीति आधारित देश है। यहां राजनीतिज्ञों के अलावा किसी की कोई पहचान नहीं बनती। विशिष्ट क्षेत्रों में सफल हुए लोगों को मरने के बाद सम्मान

हासिल होता है। देश में वैज्ञानिकों को आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं है। युवा प्रतिभाओं को विदेशों में भविष्य अधिक सुरक्षित नज़र आता है। यह सब आर्थिक हितों के असुरक्षित होने और सामाजिक पहचान न बन पाने के कारण ही हो रहा है। युवा वैज्ञानिकों को जब तक सभी सुविधाएं मुहैया नहीं कराई जाती, विज्ञान जगत में विशिष्ट सफलताओं की प्राप्ति दूर की कौड़ी बनी रहेगी।

सत्र - 1995-96

□

हिन्दी अखबार की रद्दी तक सस्ती है

-डॉ. देवेन्द्र दीपक

साहित्य और पत्रकारिता के मध्य का रिश्ता कोई नया नहीं है। दोनों एक दूसरे के पूरक है। अब तक के लंबे सफर में दोनों में ही अनेक परिवर्तन आये है जिनका प्रभाव परस्पर एक-दूसरे पर पड़ना स्वाभाविक है। इन परिवर्तनों तथा इनके कारणों को जानने के लिये प्रस्तुत है मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी के संचालक डॉ. देवेन्द्र दीपक से ***नीरज मित्तल*** *की बातचीत के कुछ अंश :-*

साहित्य और पत्रकारिता के बीच के संबंध को आप किस दृष्टि से देखते है?

मोटे तौर पर तो हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य एक दूसरे से जुड़े हुए है, कई सफल साहित्यकार पत्रकार भी रहे और कई सफल पत्रकार साहित्यकार भी है। परंतु पत्रकार जो लिखता है वह उसका तुरंत निष्पादन करता है। जबकि साहित्यकार के लिये ऐसा करना कोई जरूरी नहीं है। साहित्यकार वर्तमान तथा भविष्य को लेकर लिखता है जबकि पत्रकार का भविष्य से बहुत कम परंतु अतीत से गहरा संबंध होता है। पत्रकार का लेखन चित्रात्मक आवश्यक है, वर्णनात्मक कम। जबकि साहित्यकार वर्णनात्मक लिखने के लिए स्वतंत्र है। पत्रकार सर्वसाधारण को अपनी रचना के लिये प्रयोग करता है।

क्षेत्र, काल और विषय की व्यापकता की दृष्टि से साहित्यकार और पत्रकार में क्या अंतर है?

साहित्यकार किसी एक क्षेत्र से बंधा हुआ नहीं होता एवं उसका प्रसारण भी किसी क्षेत्र विशेष से बंधा हुआ नहीं होता। जबकि पत्रकार का क्षेत्र भी प्राय: निश्चित होता है व प्रसार भी। साहित्य की प्रासंगिकता किसी निश्चित काल पर निर्भर करती है। साहित्यकार को प्राय: देश-काल और पात्र की कल्पना करनी होती है जबकि पत्रकार के सम्मुख ये तीनों सामने रहते हैं और उसी पर लिखना होता है।

साहित्य और पत्रकारिता के विकास में दोनों में से किसका योगदान किसके प्रति अधिक है?

हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास कोई बहुत पुराना नहीं है जबकि साहित्य के लेखन की परंपरा का अपना एक इतिहास है। हिन्दी पत्रकारिता का विकास पराधीनता के समय अधिक हुआ। उस समय साहित्यकारों ने अपनी लेखनी का प्रयोग जनता

की आवाज को उठाने के लिए तथा विदेशी शासन के विरुद्ध किया। जिस प्रकार हिन्दी पत्रकारिता पर हिन्दी साहित्य का प्रभाव दिखाई पडता है उसी प्रकार हिन्दी गद्य के विकास का मूल हिन्दी पत्रकारिता ही है।

आज पत्रकारिता और स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व की पत्रकारिता में क्या अंतर है?

मुख्य अंतर तो यही है कि पहले साहित्य-इतिहास-राजनीति और अर्थशास्त्र आदि पत्रकारिता के मुख्य विषय थे जबकि आज प्रत्येक क्षेत्र में अनेक विधाएं उत्पन्न हो गई है जिनके अलग-अलग विशेषज्ञ हैं। जैसे व्यापार, खेल, मनोरंजन, ग्रामीण क्षेत्र, आचलिक, शहर, प्रांत आदि सबके अलग-अलग प्रभारी नियुक्त होते हैं। दूसरा मुख्य अंतर यह आया है कि पहले पत्रकारिता एक मिशन के रूप में थी जबकि आज यह पूर्णरूप से एक व्यवसाय बन चुकी है। आजादी के पूर्व की पीढ़ी, सस्कृति की पीढ़ी थी। आजादी के बाद की पीढ़ी भवन सस्कृति पीढ़ी है। पत्रकारिता में आए परिवर्तन का मुख्य कारण धन प्राप्त करने की पैशाचिक लालसा है। व्यावसायिकता कोई बुरी बात नहीं है परतु इसके साथ-साथ पत्रकारिता के आदर्श और मानदडों का भी पालन करना चाहिए।

पीत पत्रकारिता के विषय में आप क्या कहना चाहेंगे?

आज पत्र और पत्रकार अपने-अपने प्रभाव और प्रसार के अनुसार अधिक से अधिक 'ब्लैकमेल' कर रहे है। यह केवल पत्रकारिता के क्षेत्र में ही नहीं अपितु अन्य क्षेत्रों में भी है। जहाँ एक ओर पीत पत्रकारिता का नाम लिया जाता है वहीं पीत साहित्य भी प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो रहा है। समाज के अन्य क्षेत्रों में जिस प्रकार गोटियां फिट करने का प्रचलन है उसका प्रभाव साहित्य और पत्रकारिता पर भी पड़ा है।

प्रतिबद्ध पत्रकारिता के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

आचार जगत की छूआछूत काफी हद तक समाप्त हो चुकी है परंतु विचार जगत की छूआछूत अभी कायम है जो उससे अधिक घातक है। साहित्य और पत्रकारिता में जो प्रतिबद्धता उभर कर आई है वह निश्चित रूप से खतरनाक है और इसके हमले का मुकाबला करना होगा।

इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का हिन्दी साहित्य पर और पत्रकारिता पर क्या प्रभाव पड़ा है?

व्यापक प्रभाव पडा है। प्रिंट मीडिया का क्षेत्र, साक्षरता पर निर्भर करता है, जबकि इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का क्षेत्र व्यापक है और उसका प्रसारण भी आसान है। परंतु इस सब के बावजूद प्रिट मीडिया सस्ता और सर्वसुलभ है एव इलैक्ट्रोनिक मीडिया की भाँति इस पर सरकारी नियंत्रण न होने के कारण इसकी विश्वसनीयता भी अधिक है।

हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य पर अंग्रेजी के प्रभाव के संबंध में आप

क्या कहेंगे?

इस प्रकार के प्रभाव तो पड़ते हैं। इसके पीछे इतिहास में अनेक कारण हैं। परंतु अपनी अस्मिता को बचा कर रखना हमारा दायित्व है। मस्तिष्क को खुला रखें। परंतु ध्यान रहे जो उपयोगी है उसे ग्रहण करें तथा अनुपयोगी को छोड़ दें। हमारी ग्राह्यता उत्तम होनी चाहिए। हिन्दी पत्रकारिता का क्षेत्र सीमित है और न ही यह अधिक पुरानी विधा है जबकि अंग्रेजी प्राय: संपूर्ण विश्व में व्याप्त है। हिन्दी के अखबार की रद्दी तक अंग्रेजी अखबारों की अपेक्षा कम भाव में बिकती है। तो हिन्दी को हम दोयम श्रेणी का स्वयं मानते हैं। यहाँ तक कि अंग्रेजी व हिन्दी में काम करने वालों के वेतन व अर्जन में भी भारी अंतर है।

हिन्दी पत्रकारिता के भविष्य में आपके क्या विचार हैं?

केवल हिन्दी का भविष्य बहुत उज्ज्वल नहीं है जबकि हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य उज्ज्वल है यदि आप हिन्दी के साथ अन्य भाषा का भी ज्ञान रखते हैं अर्थात् गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी साहित्य परोसने के लिये उस क्षेत्र की भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। आजादी से पहले पत्रकारिता में तीन प्रकार की पीढ़ियाँ काम कर रही थीं। एक वह है जो हिन्दी के साथ संस्कृत के भी विद्वान् थे, दूसरी वह जो पारसी के साथ उर्दू की भी ज्ञाता थी। तीसरी वह जो हिन्दी के साथ अंग्रेजी की विद्वान थी। परंतु आज जो पीढ़ी हिन्दी में काम कर रही है वह स्वयं हिन्दी की भी सही ज्ञाता नहीं है। हिन्दी पत्रकारिता के शिक्षा को यदि व्यवसाय से जोड़कर रखा जाय तो हिन्दी पत्रकारिता का क्षेत्र व्यापक और उसका प्रचार-प्रसार भी अधिक हो सकता है।

सत्र - 1992-93

☐

कूएँ में कूदकर निर्भय बना हूँ

-निर्भय हाथरसी

कविता की दुनिया में देवीदास शर्मा 'निर्भय हाथरसी' का नाम जाना पहचाना है। काव्य क्षेत्र में व्यग्य की प्रतिष्ठा निर्भय जी की उपलब्धि है। प्रस्तुत है उनसे ***विवेक शर्मा की*** *बातचीत के कुछ अश :-*

आपको लोग निर्भय हाथरसी के नाम से ज्यादा जानते हैं। आपका यह नाम कैसे पड़ा?

युवावस्था में एक बार भ्रमण के दौरान मुझे प्यास लगी तो मै हलवाई की दुकान पर गया और उससे पानी मागा। उसने कहा कि भगवान ने तुम्हें हाथ पैर दिए हैं कुएं से पानी खींचो और पीओ। मैंने कुयें में बाल्टी डाली लेकिन रस्सी टूट गई और मैं कुए में कूद पडा। तभी से लोग मुझे निर्भय हाथरसी के नाम से जानते हैं।

आपकी दृष्टि में कविता की परिभाषा क्या है।

वास्तव में कविता की कोई एक परिभाषा नहीं है। कविता को हम इस तरह भी देख सकते है। 'क' का अर्थ है - कल्पना, ''वि'' का अर्थ है - विचार, 'ता' का अर्थ है - तालमेल। अर्थात कल्पना और विचारों का तालमेल ही कविता है।

वर्तमान राजनीतिक हालातों के विषय में आप कुछ कहेंगे?

आज राजनीति की स्थिति बहुत खराब है। राजनीति ताश के पत्तों की तरह हो गई है। वह इक्का से लेकर बादशाह तक के बीच घूम रही है।

आप माता विजयाराजे सिंधिया के जन्मोत्सव के सिलसिले में हरिद्वार आये हैं। क्या आप भारतीय जनता पार्टी से जुड़े हुए हैं।

नहीं भाजपा से मेरा कोई जुड़ाव नहीं है। मैं तो बस राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ का कार्यकर्ता हूँ। भाजपा में आडंबर करने वाले लोग भरे हुए हैं।

क्या आप मानते हैं कि बाबरी मस्जिद का पुनर्निर्माण होगा।

नहीं बाबरी मस्जिद का पुनर्निर्माण नहीं होगा क्योंकि .....

''प्यारा यदि राम हो तो, राम की शरण आओ,
अंत में विराम होगा, राम के ही ध्यान में।
मरी हुई बाबरी तो जीवित न होगी कभी,
क्योंकि पुनर्जन्म होता नहीं इस्लाम में।

क्या आप मानते हैं कि भारतीय जनता पार्टी ने हिन्दुओं को जागृत

किया है?

नही यह श्रेय मै मुलायम सिह यादव को देता हू उनकी प्रशंसा मे एक कविता निम्न है :-

"कैकयी ना होती अगर राक्षसी संहार हेतु,
राम से सपूत को वन भिजवाता कौन?
होता ना विभीषण तो भाई से विरोध कर,
नीति और अनीति का अतर बताता कौन?
होता न प्रहलाद तो पिता का वध करवा के,
राम नाम का महत्व समझाता कौन?
ज्ञान यदि हो तो फिर सोच कर बताइये,
कि होते ना मुलायम तो हिंदू को जगाता कौन?

आपको अपनी लिखी कौन सी कविता सर्वाधिक पसंद रही है।

यह सवाल थोडा जटिल है क्योंकि मेरे लिए तो सारी कविता ही प्रिय है।

□

सत्र 1993-94

संघर्ष ही मेरी ऊर्जा है

-बालकवि बैरागी

बालकवि बैरागी आठवीं लोक सभा में कांग्रेस (इ) के सांसद रहे हैं। साथ ही श्री हिन्दी काव्य मंच के लाड़ले ओजस्वी कवि बैरागी हिन्दी कविता के एक स्थापित हस्ताक्षर हैं। भिक्षावृत्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि से शुरू करके मंत्री, सांसद की राजनीतिक तथा एक कवि की साहित्यिक यात्रा में बैरागी का जीवन संघर्षमय रहा है। प्रस्तुत है उनसे ***सम्राट सुधा*** *का एक संवाद :-*

बैरागी जी, अपनी जीवन यात्रा के विषय में बताइए?

यह एक लंबा सिलसिला है। 61 वर्ष के जीवन को संक्षेप में कहना ही कठिन है। मेरी यह मान्यता है कि किसी भी व्यक्ति का संघर्ष कम नहीं होता है। यदि आप किसी व्यक्ति के संघर्ष को कम मानेगें तो यह तय है कि आप छोटे हो जाएँगे। मेरे जीवन के बारे में एक वाक्य पर्याप्त होगा कि मेरा जीवन और मेरे परिवार का जीवन एक लंबे अर्से तक भिक्षा-अन्न पर पला है। मेरे पुरखों को अपना धधा भिक्षावृत्ति लिखवाना पड़ता था। मेरे पिता को जन्म से ही पोलियो हो गया था। बाद में वे अनाथ हो गये। मेरे जीवन निर्माण में मेरी माँ का बहुत बड़ा स्थान है। माँ तीन वर्ष पहले चली गई। मैं अपने अतीत को भूल न जाऊँ इसलिए मैं आज भी कपडे माँग कर पहनता हूँ। मेरे संघर्ष आज कम तो हुए है परन्तु खत्म नहीं हुए। यह सघर्ष ही मेरी ऊर्जा है। मेरा अतीत दुखों से भरा हुआ था, मेरा वर्तमान संघर्षपूर्ण है। मैं कह सकता हूँ कि मेरा भविष्य बहुत अच्छा है। प्रभु की कृपा है कि उसने मुझे कलम दी, मेरे पास शब्दों की थोड़ी बहुत संपदा है। इसी से मैं सुखी और संतुष्ट हूँ।

बैरागी जी आप राजनीति और साहित्य से समान रूप से कैसे जुड़े हुए है। एक साथ यह कैसे संभव हो सका?

यह प्रश्न मेरे सामने बार-बार आता है। मैं साहित्य से राजनीति में नही आया हूँ और न मैं राजनीति से साहित्य में गया हूँ। मेरा राजनीतिक जन्म ही कांग्रेस के मंच पर हुआ और उस जैसी पार्टी का कार्य करते हुए यह मेरे जीवन का 47वां साल है। उस समय मैं साढ़े तेरह-चौदह वर्ष का था कि हमारे क्षेत्र के कुछ बड़े तपस्वी नेताओं ने मुझे तिरंगा पकड़ा दिया था। तब मुझे नहीं पता था कि इसका मतलब क्या है? मेरी कविता का पहला प्रस्फुटन स्कूल में हुआ, जब चौथे दर्जे का

आठ-नौ वर्ष का विद्यार्थी था। मैंने साहित्य और अपनी राजनीति के मध्य एक बारीक सी लक्ष्मण रेखा खींच ली और इसका अतिक्रमण मैंने नहीं किया। एक बात में रेखांकित करके कहना चाहता हूँ कि 47 वर्ष के राजनीतिक जीवन में मुझे कांग्रेस ने कभी भी यह नहीं कहा कि ऐसा लिखो, ऐसा मत लिखो। कांग्रेस या राजनीति ने मुझे 'डिक्टेट' नहीं किया और न ही निर्देशित किया। यह हो सकता है कि इसमें मेरी अपनी चेतना का भी योगदान रहा हो। साहित्य को राजनीति से दूर रहना चाहिए, मैं इसे नहीं मानता। मैं अभी भी कहता हूँ कि राजनीति में संवेदनशील व्यक्तियों को आना चाहिए। करुणा, बुद्धि और विवेक संपन्न लोग यदि राजनीति से जुड़ेंगे तो राजनीति में रस और आकर्षण बना रहेगा। मेरी मान्यता है कि वैचारिक क्षेत्र की राजनीति से यदि साहित्यकार जुड़ेंगे तो राजनीति अधिक ग्रहणशील होगी।

आज राजनीति को अर्थ तंत्र का शिकंजा कसता जा रहा है और विचार-संपन्नता दोयम स्तर पर है। तब जिन विचारों के संपोषण की बात आप कर रहे हैं, क्या वह संभव है?

वैचारिक क्षेत्र में काम करने वाला व्यक्ति आगे है या पीछे, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वह जहाँ भी है, उसकी आभा वही बनी रहेगी। और अंततः लोग आशा से उसी की ओर देखते हैं। अर्थ की राजनीति करने वाले हेय ही रहेंगे। लेकिन जब हम समृद्धि, संपन्नता और अर्थ के क्षेत्र में विकसित होना चाहते हैं तो अर्थ का आकर्षण नहीं छोड़ सकेंगे। वस्तुतः जिस चीज से लोग डरे हुए हैं और जिसे राजनीति समझ लेते हैं क्योंकि राजनीति में काम करने वाले लोग उसे इस तरह आगे कर देते हैं मानों यही राजनीति हो वह राजनीति नहीं है वरन् राजनीति का छलावा मात्र है। ऐसे लोगों को जो सत्ता का दुरुपयोग करते हैं यदि राजनेता या राजनीतिक माना जाए तो यह गलत होगा। राजनीति वह है जो जीवन को उदात्त बनाए, देश को चरित्र दे और पीढ़ियों को सुरक्षित और सरक्षित करने का आश्वासन दे। राजनीति का मूल स्वर आशा का है। जो लोग निराशा की बातें करते हैं उन्हें राजनेता नहीं मानना चाहिए। देश की आयु में 50 वर्ष कोई बड़ी बात नहीं होते लेकिन सिंहावलोकन का मोड़ जल्दी आ गया। मुझे प्रसन्नता है कि नई पीढ़ी इसके लिए चिंतातुर है। इसमें से आप 'चिन्ता रखिए', 'आतुरता' खत्म कर दीजिए। हमारे पास स्वर्णिम अतीत है और हम आशा करते हैं कि भविष्य भी अच्छा रहेगा।

समाज में 'सोच का संकट' पैदा हुआ है, आदर्श मूल्य उपेक्षित हुए है इस बारे में आप क्या सोचते है?

ठीक बात है। वास्तव में आज जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं बचा है जहाँ गिरावट न आई हो। इसका एक बड़ा कारण है, जिस पर हमारी दृष्टि नहीं जाती है। हम समग्र विकास एक साथ नहीं पा सकते। आंशिक स्तर पर हमारे पार्श्व में विज्ञान का जबर्दस्त विकास हुआ है। विज्ञान जब तेजी से विकसित हुआ तो लोगों ने इसे ही विकास मान लिया और अपनी मौलिक प्रतिभा को नहीं पहचान कर वे इसमें शामिल हो गए। वास्तव में लोगों ने सोचना बंद नहीं किया वरन उनकी सोच

ठिठक गई। मेरा विश्वास है कि यह ठिठकाव पाँच-दस साल का ही है और अन्ततः इस शून्यकाल को भी पार कर लिया जाएगा।

यहाँ प्रतिभाएँ, मेधाएँ और विचार कम नहीं है। इस देश में तो सोच की चिंता करनी ही नहीं चाहिए, जिसके पास उपनिषद् और आध्यात्म है। राजनीतिक स्तर पर लुभावनी बातें करना बंद कर देना चाहिए। राजनेताओं को यह काम अपने हाथ से छोड़कर शंकराचार्यों तथा बाबरी मस्जिद के उलेमाओं पर छोड़ देना चाहिए। यही इसका समाधान है।

पंजाब तथा कश्मीर समस्या का कारण तथा निवारण आप क्या सोचते हैं?

मैं पंजाब में थोड़ा बहुत घूमा हूँ। वहाँ की जनता यह नहीं चाहती कि वह भारत से अलग हो जाए। इस देश को तोड़ने का अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र, जो पिछले 200 वर्षों से चल रहा है, उसका यह एक हिस्सा है। अंग्रेजों की उपस्थिति हमारे यहाँ 190 वर्ष तक रही अंग्रेजों के आने के बाद भारत निरंतर छोटा हुआ है। यहां तक कि वे जाते-जाते पाकिस्तान बनाकर चले गए। नेपाल, भूटान, बर्मा, अफगानिस्तान, श्रीलंका, पहले ही अलग कर दिए गए थे। औसतन 50-60 वर्षों में इस देश का कोई न कोई टुकड़ा अलग होता रहा है। लेकिन आजादी के बाद भारत टूटा नहीं वरन् बढ़ा है। अंतरराष्ट्रीय साजिश-खोरों को इससे लगा कि उनकी 'थीसिस' पिछड़ रही है। इसलिए उन्होंने पंजाब को हाथ में लिया। सब जानते हैं कि इसमें पाकिस्तान का हाथ है। और पाकिस्तान की पीठ पर अमेरिका, सी.आई.ए. का हाथ है। इन षड्यंत्रकारियों का प्रयत्न है कि भारत में घृणा और संदेह पैदा किया जाए। इसी के तहत आज भारत का मुसलमान अपने को दोयम दर्जे का नागरिक मानने लगा है। गोरखालैंड की बात उठी वह भी सभल गई। काश्मीर समस्या के पनपने का मुख्य कारण यह है कि पाकिस्तान मन से आज भी इस विभाजन को स्वीकार नहीं करता। इसलिए पाकिस्तान ने काश्मीर को भारत के जिस्म से निरंतर खून बहाने वाला एक स्थान बनाए रखा। भारत काश्मीर समस्या समाप्त कर देना चाहता है, परन्तु वे नहीं चाहते। जब वे काश्मीर में कुछ नहीं कर पाते तो वे पंजाब में करते हैं। अब वे लिट्टे तक को सहायता दे रहे हैं जो उनकी सीमा से हजारों किलोमीटर दूर है। ये साजिशखोर जब भारत को भूगोल के मोर्चे पर छोटा नहीं कर पा रहे हैं तो भाषा के मुद्दे पर छोटा कर रहे हैं और इस लड़ाई को हम लोग लड़ भी रहे हैं।

राजीव जी की हत्या को आप किस परिप्रेक्ष्य में देखते हैं?

सरेआम षड्यंत्र है, सरेआम! हमारे भूतपूर्व और भविष्य के प्रधानमंत्री को विदेशियों ने मार डाला। आपने क्या कर लिया? राजीव जी को जिन्होंने मारा वे लंका के लोग थे। वह लड़की भी लंका की ही थी। क्या ये विदेशियों का आक्रमण नहीं है हम पर है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि यह होने के बावजूद हम मुकदमों के आधार पर काम कर रहे है। अगर कोई दूसरा देश होता तो अब

तक युद्ध हो गया होता।

राजनीति और पत्रकारिता एक दूसरे को कैसे प्रभावित करती है?

पत्रकारिता को राजनीति से वही पत्रकार जोड़ रहे है जो अपने पत्र के खुद मालिक है। कोई स्वतंत्र पत्रकार अपने पत्र को राजनीति से कैसे जोड सकेगा? भारत के किसी भी समाचारपत्र को ले लीजिए। मालिकों ने उसे राजनीति से जोड रखा है। आज पत्रकारिता का अभीष्ट बदल गया है। पहले पत्रकारिता का अभीष्ट था-देश को आजाद कराना, लेकिन मैं ईमानदारी और निष्ठा से कहना चाहूँगा कि आज भारतीय पत्रकारिता के लक्ष्य बदल गये है, यद्यपि आदर्श अभी भी वे ही हैं। ये लक्ष्य बदलना कोई नही बात नही है और इससे घबराना भी नही चाहिए। आपको खुद तय करना होगा कि आपके जीवन में आदर्श क्या है और लक्ष्य क्या होने चाहिए? यदि लक्ष्यों को बदलेंगे नही तो व्यक्ति की महत्वाकाँक्षा मर जाएगी, गतिशीलता नष्ट हो जाएगी। आज आजादी को बनाए रखना पत्रकारिता का आदर्श है जो बने रहना चाहिए।

जो पारिवारिक-सामाजिक आदर्श और मूल्य एक पीढ़ी को दिए जाते है उन्हें लेकर समाज में सामंजस्य स्थापित करना प्रायः मुश्किल क्यों हो जाता है।

बुनियादी तौर पर यह गलत है कि आदर्श हमें दिए गए। जो चीज मेरे लिए आदर्श है वह दूसरों के लिए अनादर्श हो सकती है।

तो इसकी कसौटी क्या है?

कोई कसौटी नहीं। यदि कुछ कह सकते हैं तो यही कि जो आपके जीवन को निरंतर उदात्त बनाए रखे, निरतर संघर्षशील रखे और जो जीवन यात्रा में लगातार आशावान बनाए रखे। फिर भी इसकी कोई सर्वमान्य कसौटी नहीं है और न ही सर्वमान्य कसौटी बनाई जा सकती। विषम परिस्थितियों में यदि आदर्श माना गया व्यक्तित्व आपको प्रेरित नही करता और समझौता करने के लिए बाध्य करता है तो उस व्यक्तित्व को छोड़ देना चाहिए।

नई पीढ़ी के लिए आप क्या कहेंगे?

विनम्र बनकर जीवन जिओ। विनम्रता से सुदृढ कोई चट्टान नहीं होती। जिज्ञासा को मरने मत दो, सीखने की प्रवृत्ति को जीवित रखो। सीखने की प्रवृत्ति यदि नष्ट हो गई तो उसी दिन नष्ट हो जाओगे। शारीरिक जीवन नष्ट होना छोटी बात है लेकिन वैचारिक जीवन नष्ट होना बहुत बड़ी बात है। मैं कहा करता हूँ कि **'बड़ा आदमी होना अच्छी बात है, लेकिन अच्छा आदमी होना बड़ी बात है।'** नई पीढ़ी को तय करना होगा कि इसमें से उसे क्या चाहिए।

□

सत्र - 1991-92

इस्लाम को कट्टरता से जोड़ना साजिश है

-मौलाना मौहम्मद मुस्तफा

मौलाना मुस्तफा देवबंद की विश्वप्रसिद्ध इस्लामी शिक्षण संस्था दारुन उलूम के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री हैं। मौलाना का मानना है कि इस्लाम धर्म कट्टर नहीं है और न ही असहिष्णु। वे इस्लाम को कट्टरता और आतंकवाद के साथ जोड़कर देखने को साजिश का हिस्सा बताते हैं। प्रस्तुत है उनसे ***निसार अहमद*** *की एक बातचीत .-*

मौलाना साहब, पुराने और आज के दौर छात्रों में कितना अंतर है?

बहुत फर्क आ गया है। पहले छात्र अपने उस्तादों से डरते थे और अब अध्यापकों को डरना पड़ता है हमारे दौर में पढ़ाई का मकसद तालीम हासिल करना होता था जबकि आज के छात्रों का मकसद महज डिग्री हासिल करना रह गया है। उस्ताद बस नाम के रह गए हैं।

मौलाना साहब, अन्य धर्मों के प्रति इस्लाम धर्म का दृष्टिकोण क्या है?

मजहबे इस्लाम इस मामले में बड़ा सहिष्णु है। हमारा मजहब कहता है कि दूसरों का और उनके धर्म का आदर करना चाहिए। पड़ोसियों के साथ अच्छा वर्ताव करना चाहिए चाहे वह किसी भी धर्म का क्यों न हो।

अक्सर यह इल्जाम लगाया जाता है कि इस्लाम तलवार के जोर पर फैला है, यह कहाँ तक सच है?

यह सरासर बेबुनियाद और झूठा इल्जाम है। इस्लाम तलवार के जोर पर नहीं बल्कि मुहब्बत और सहृदयता से फैला है। इस्लाम की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि इस्लाम में ऊँच-नीच, अमीर गरीब और जाति भेद के अंतर को खत्म करके सबको एक साथ एक जगह और एक मंच पर बैठाया है। इस्लाम का आधार स्तंभ ईमान है और ईमान का ताल्लुक दिल से होता है। अगर तलवार के जोर पर किसी को कलमा पढ़ने पर मजबूर भी किया जाए तो उसके दिल में ईमान का जज्बा पैदा नहीं होगा। जो बात प्यार से दिल में बैठाई जा सकती है वह जोर जबरदस्ती से नहीं बैठाई जा सकती। जहाँ तक तलवार के जोर की बात है तो हमारे बुजुर्गों ने इस्लाम व मुसलमान और अधिकार व मानवता की रक्षा के लिए जंग लड़ी है। कुराने पाक में भी इस बात का जिक्र नहीं है कि किसी को जबरदस्ती इस्लाम कबूल करने पर मजबूर किया जाए।

अक्सर यह देखने में आता है कि भारत पाकिस्तान के दरमियान होने वाले खेलों में कुछ भारतीय मुसलमान पाकिस्तान का पक्ष लेते हैं और पाकिस्तान के जीतने पर खुशियाँ मनाते हैं।

यह भावना बिल्कुल गलत है। मजहबे इस्लाम में अपने मुल्क से मुहब्बत करने और मुल्क की एकता अखंडता और सुरक्षा के लिये बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने की शिक्षा दी गई है।

आरोप है कि पाकिस्तान इस्लाम के नाम पर कश्मीर और पंजाब में आतंकवाद फैला रहा है, इस मसले पर आप क्या कहना चाहेंगे?

अगर पाकिस्तान ऐसा कर रहा है तो सरासर गलत है। हमारी सरकार को चाहिए कि वह पाकिस्तान से दो टूक बात करके फैसला करे। इस्लाम मज़हब में इस बात की कहीं गुजाइश नहीं है कि एक मुल्क दूसरे मुल्क में बदअमनी फैलाने का घिनौना काम करे। यह निहायत शर्मिंदगी का काम है। इस्लाम पड़ोसियों से अच्छे बर्ताव का सबक सिखाता है। पाकिस्तान का यह रवैया इस्लामी उसूलों के खिलाफ है। आज तक पाकिस्तान ने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे भारतीय मुसलमानों का भला हो। उसने हमेशा ओछी हरकतें करके भारतीय मुसलमानों को परेशान किया है। उसे यह समझना चाहिए कि कश्मीर भारत का है और भारत का ही रहेगा।

पिछले दिनों बाबरी मस्जिद गिराए जाने पर बंगलादेश ने जो रुख अख़्तियार किया था क्या वह उचित था?

नहीं, वह बिल्कुल उचित नहीं था। वहाँ जो कुछ हुआ है, वह हमारे अंदरूनी मामलों में दखल है। हम इस मसले को खुद सुलझा लेंगे। हमें इस विवाद के समाधान हेतु किसी दूसरे मुल्क की हिमायत गवारा नहीं है।

मस्जिद निर्माण की क्या स्थिति होनी चाहिए? अगर वहाँ पहले से किसी अन्य धर्म की इबादतगाह रही हो तो? और बाबरी मस्जिद विवाद का हल कैसे संभव है?

मस्जिद निर्माण के लिये जमीन निर्विवाद होनी चाहिए। अगर इस बात के सशक्त प्रमाण हों कि मस्जिद निर्माण से पूर्व वहाँ अन्य धर्म की इबादतगाह थी और इसे ध्वस्त करके मस्जिद बनाई गई है तो वह मस्जिद नहीं होगी। ऐसी मस्जिद में नमाज़ नहीं होगी। आपस में बैठ कर बातचीत के द्वारा हर मसले का हल किया जा सकता है। दोनों वर्गों को ईमानदारी से इस नाज़ुक मसले पर गौर करके फैसला करना चाहिए या फिर अदालत का फैसला दोनों मान्य हों। □

सत्र - 1992-93

संस्कृत पत्रकारिता में काम हो रहा है

-डॉ.रामकृष्ण शर्मा

*भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मत्रालय में लगातार दस वर्ष से सहायक शिक्षा परामर्श दाता के रूप में कार्यरत डा.रामकृष्ण शर्मा ने संस्कृत के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 21वीं शताब्दी के प्रवेश द्वार पर खड़े भारत को प्राचीन गौरव की याद दिलाने के लिए देश भर में अनेक स्थानों पर उन्होंने संस्कृत वाक् प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया। संस्कृत के प्रति निष्ठा उन्होंने अपनी कृति 'बंगलादेशोऽयम्', 'विडंबना' और 'कण्वाश्रम' में प्रकट की है। डॉ शर्मा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक है। वाक् प्रतियोगिता के विषय मे उनसे **विद्यानिधि** की एक बातचीत :-*

अखिल भारतीय संस्कृत वाक् प्रतियोगिता कब प्रारंभ हुई और इसका मुख्य उद्देश्य क्या है?

यह उज्जैन में पहली बार 1963 में प्रारम्भ हुई। इसका मुख्य उद्देश्य समस्त भारत में परपरागत रूप से सस्कृत पढने वाले छात्रों की प्रतिभा का मूल्याकन एव उन्हें प्रोत्साहन देना है।

इस प्रतियोगिता में उत्तर भारतीय छात्रों की असफलता का क्या कारण है?

उत्तर भारत में छात्रों में आस्था, आचार, परिश्रम आदि का ह्रास हो रहा है। इनमें पद और पैसे की चाहना बढ़ रही है। यह सब सरस्वती समाराधना के लिए हानिकारक है। दक्षिण भारतीय लोगों में अभी भी विद्योपार्जन एव सदाचार के प्रति आस्था है। वहाँ गुरु शिष्य परम्परा विद्यमान है। यही कारण है कि वहाँ के छात्रों का शास्त्रों में प्रवेश हो जाता है। आपने देखा होगा कि बड़े-बड़े आयोजनों में दाक्षिणात्य पडित ही यज्ञवेदी को सुशोभित करते है।

क्या इस प्रतियोगिता से सम्पूर्ण भारत के संस्कृत विद्यालय जुड़ पाते हैं?

जिस प्रकार साढे पॉच सौ सासद सपूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व करते है वैसे ही इस प्रतियोगिता में प्रत्येक प्रान्त से आठ छात्र आते है अर्थात 200 प्रतियोगी सबका प्रतिनिधित्व करते है।

उत्तर प्रदेश से एक ही प्रतिनिधि था?

हमारा काम प्रचार करना है। यदि कोई नहीं आए तो हम क्या करें?

मंत्रालय प्रतियोगिता के लिए कितना व्यय करता है?

कोई सीमा नहीं है।

संस्कृत प्रकृति की सुरम्य गोद में ही सुरक्षित है। जबकि प्रदेश सरकार 15 करोड़ रुपये देकर संस्कृत स्थलों को पर्यटन स्थल बनाना चाहती है। इस बारे में आपका विचार?

मैं सरकारी नौकर हूं, इस बारे में क्या कहूं।

हरिद्वार का विकास तीर्थस्थल की दृष्टि से उचित है या पर्यटन की दृष्टि से?

तीर्थस्थल की दृष्टि से। क्योंकि अब तीर्थ यात्री नहीं जा भी आते हैं व पिकनिक मनाने आते हैं। मध्यवर्गीय लोग साधुओं और आश्रमों से न जुड़कर होटल की संस्कृति में पलने वाले हो गये हैं।

शिक्षा मंत्रालय का शिक्षा प्रभाग संस्कृत के प्रचार के लिए 'आदिशंकराचार्य' की भांति कोई फिल्म निर्माण कर रहा है?

मंत्रालय स्वयं यह काम नहीं करता बल्कि स्वयं सेवी संस्था 'आदिशंकराचार्य' की भाँति विचार प्रसारित करने के लिए फिल्म बनाना चाहे तो हम उस पर सहानुभूति पूर्वक विचार कर सकते है। वैसे संस्कृत में बहुत से नाटकों का मंचन होता रहता है, बहुत सी फिल्में भी बनी हैं।

क्या संस्कृत के प्रचार के लिए आधुनिक कहानियाँ या उपन्यास प्रकाशित हो रहे हैं?

इसके प्रकाशन के लिए 20 लाख रुपये प्रतिवर्ष खर्च हो रहे हैं। बहुत सी अन्वेषणात्मक पत्रिकाएँ दैनिक पत्र व उपन्यास भी प्रकाशित हो रहे हैं जैसे नव प्रभातम्, अवितव्यसु, शाडीवस, पारिजात, संस्कृति आदर्श, भारतोदय आदि।

क्या संस्कृत भाषा के माध्यम से पत्रकारिता की जा सकती है? इस ओर आज तक कोई कदम?

संस्कृत में पत्रकारिता पर काम हो रहा है और कई सज्जन इस पर शोध कार्य भी कर चुके है। गत वर्ष अक्टूबर मास में दिल्ली संस्कृत अकादमी में एक अखिल भारतीय संस्कृत पत्रकार सम्मेलन आयोजित किया जिसमें अनेक प्रदेश के पत्रकार आए थे।

डॉ. सम्पूर्णानन्द, आचार्य नरेन्द्र देव और मालवीय जी की भाँति संस्कृत-निष्ठ व्यक्ति राजनीति में क्यों नहीं आते हैं?

क्योंकि राजनीति अब इस स्तर की नहीं रही।

आकाशवाणी पर संस्कृत समाचार बुलेटिन का समय पांच मिनट से अधिक होना चाहिए?

यह व्यक्तिनिष्ठ बाते है। देश में कितने आदमी सुनते है सस्कृत समाचार बुलेटिन?

कुछ प्रतियोगी आपसे नाराज हैं। उनका कहना है कि विभिन्न प्रदेशों से आए दलपतियों को ही निरीक्षक बनाया गया जबकि हरिद्वार में संस्कृत के बहुत विद्वान हैं?

ये प्रतियोगी वे है जिन्हें सफलता नहीं मिली और हरिद्वार में लगभग सभी विद्वानों से प्रार्थना की। किन्तु सस्कृत के इस कार्य के लिए कोई आना ही नही चाहता तो बताइये मै क्या कर सकता था?

सत्र - 1991-92

मन और आत्मा को प्रभावित करते है यज्ञ

-आचार्य रामनाथ वेदालंकार

सन् 1936 से 1976 तक गुरुकुल कांगड़ी में संस्कृत उपाध्याय, आचार्य एवं उपकुलपति, कुलसचिव आदि महत्वपूर्ण पदों पर रहे वेदमनीषी आचार्य रामनाथ वेदालंकार बाद में तीन वर्ष तक पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में 'दयानंद शोधपीठ' के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष भी रहे। शोधग्रंथ के अलावा आचार्यजी के 'वेदमंजरी', 'वेदभाष्यकारों की वेदार्थ प्रक्रियाएं' आदि अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। वे वेदों के ख्यातिप्राप्त विद्वान् हैं। इस साक्षात्कार में पाच यज्ञों में से एक देवयज्ञ के बारे में आचार्य जी से ***रमेश विद्यालंकार*** *ने बातचीत की :-*

आपको गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन करने की इच्छा स्वयं हुई या पिताजी की इच्छा से गुरुकुल में प्रवेश लिया। अध्ययन के उपरान्त आपका वेदों की तरफ झुकाव कैसे हुआ?

मेरे पिताजी गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर आया करते थे। जब मैं आठ वर्ष का था, उस वर्ष भी पिताजी गुरुकुल काँगड़ी के उत्सव पर आए। उसी समय पिताजी को मुझे गुरुकुल भेजने की प्रेरणा हुई। प्रवेश उत्सव के समय ही होता था, इसलिए उस वर्ष प्रवेश सभव नही हुआ। अत: एक वर्ष अध्ययन के लिए काशी भेज दिया। अगले वर्ष गुरुकुल काँगड़ी से फार्म मगाकर, भरकर भेज दिया कितु मेरी आयु उस समय नौ वर्ष की हो गयी थी इसलिए मुख्याधिष्ठाता श्री विश्वंभरनाथ ने प्रवेश देने से मना कर दिया तथापि मेरे पिताजी मुझे प्रवेश के लिए गुरुकुल के उत्सव पर ले गये। मेरे पिताजी की श्रद्धा एवं उत्कट इच्छा देखकर मेरा प्रवेश कर लिया गया। गुरुकुल में अध्ययन करते हुए वेदों की तरफ रुझान होना स्वाभाविक था। इसके अलावा दो ही विकल्प थे- वेदों को अपनाओं या आयुर्वेद में चले जाओ। इनमें से मैने वेदों को अपनाना उचित समझा।

देवयज्ञ (हवन) के बारे में कुछ बताइए।

हवन नित्य कर्म है। इसे सुबह-शाम दोनों समय करने का शास्त्रों में विधान है। आपत्ति काल में एक समय किया जा सकता है, लेकिन आहुतियां सुबह-शाम दोनों समयों की दे देनी चाहिए।

आचमन कब किया जाए इस विषय पर विवाद है। कुछ विद्वान् मानते हैं कि आचमन स्तुति मंत्रों से पूर्व ही कर लेना चाहिए जबकि कुछ विद्वानों

का मानना है कि आचमन अग्न्याधान से पूर्व करना चाहिए। इस विषय में आपका क्या विचार है?

स्वामी जी ने 'संस्कारविधि' में संस्कारों को करते समय अग्न्याधान से पूर्व आचमन करने का विधान किया है। अग्न्याधान से पूर्व आचमन करने का विधान संस्कारों के लिए किया है। सामान्य यज्ञों के लिए नहीं। मेरा विचार है कि आचमन ईश्वरस्तुति के मंत्रों से पूर्व ही कर लेना चाहिए।

समिधादान में चार मंत्रों से तीन समिधाओं की आहुतियां दी जाती हैं। दूसरी समिधा की आहुति समिधाग्निं..... एवं सुसमिद्धाय ...... इन दो मंत्रों से क्यों दी जाती है?

प्राचीन शास्त्रों में तीन मंत्रों से ही तीन समिधाओं की आहुतियां दी जाती थीं। अयन्त इद्म...... मंत्र स्वामी दयानद जी ने रख कर इससे समिधाहुति देने का विधान किया है। अगले दो मंत्रों के भाव मिलकर ही वे भावपूर्ण हो पाते हैं जिसकी कामना यजमान करता है। इसलिए इन दो मंत्रों से एक समिधा की आहुति दी जाती है। अंतिम मंत्र से तृतीय आहुति दी जाती है।

पूर्व एवं पश्चिम में जलसेचन करते हुए दक्षिण से उत्तर की ओर जलसेचन एवं उत्तर दिशा में जलसेचन करते हुए पश्चिम से पूर्व की ओर जलसेचन क्यों किया जाता है?

पूर्व दिशा और उत्तर दिशा ज्ञान एवं अग्रगामिता की सूचक है। इसलिए पूर्व एव पश्चिम में जलसेचन करते हुए दक्षिण से उत्तर की तरफ जलसेचन किया जाता है। पूर्व दिशा को उत्तर दिशा से भी अधिक अग्रगामिता का सूचक माना गया है इसलिए उत्तर दिशा में जलसेचन करते हुए पश्चिम से पूर्व की तरफ जल सेचन किया जाता है।

सभी मंत्रों से घृताहुति यज्ञ की अग्नि में मध्य में दी जाती है। 'आघारावाहुति: अग्नये स्वाहा' उत्तर दिशा में तथा 'सोमाय स्वाहा' दक्षिण दिशा में क्यों दी जाती है?

इन मत्रों से उत्तर एव दक्षिण दिशा में आहुति देने से एक अग्निमंच का बनना माना जाता है इसलिए ये आहुतियाँ उत्तर एव दक्षिण दिशा में दी जाती हैं।

सायंकालीन आहुतियों में तृतीय आहुति तथा प्रजापत्याहुति मौन क्यों दी जाती है?

प्रात:कालीन 'ओं ज्योति सूर्य: सूर्यो ज्योति: स्वाहा' इस आधार पर सायंकाल के लिए 'ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा' बना लिया है। वास्तव में यह मत्रांश वेद में नहीं है। इसलिए इस आहुति को मौन दिया जाता है। ब्राह्मण ग्रन्थ में कहा गया है कि 'अनिरुक्तो वै प्रजापति:' प्रजापति अनिर्वचनीय है इसलिए प्रजापत्याहुति मौन दी जाती है।

हवन का प्रमुख उद्देश्य वातावरण की शुद्धि करना है। यदि वातावरण

को किसी अन्य माध्यम से सुगन्धित बना दिया जाए तो हवन की क्या आवश्यकता है?

वातावरण को सुगन्धित करना ही यज्ञ का उद्देश्य नहीं है। जिन मंत्रों से हम आहुति देते हैं उनके अर्थ अत्यधिक उच्चकोटि के है। हवन करने से वातावरण सुगन्धित होने के साथ मंत्रों के भावों का प्रभाव मन और आत्मा पर पड़ता है जिससे अनेक प्रकार के लाभ होते है। इसलिए हवन का स्थान कोई अन्य वस्तु नहीं ले सकती।

वेदों का कई विद्वान् भाष्य कर चुके हैं। आपको सामवेद भाष्य करने की प्रेरणा कैसे हुई। आपके भाष्य की क्या विशेषताएं हैं?

परोपकारिणी सभा की बहुत पहले से यह इच्छा थी कि स्वामी दयानंद के अनुसार कोई वेदों का भाष्य करे। मुझे सामवेद भाष्य करने की प्रेरणा स्वामी ओमानंद एवं रायसाहब चौधरी प्रतापसिंह से मिली। उनके कहने पर मैं सामवेद भाष्य करने में प्रवृत्त हुआ। मेरा भाष्य स्वामी दयानंद के अनुसार है। उनके भाष्य की जो विशेषताएं हैं उन्हीं विशेषताओं को मैंने अपने भाष्य में समाहित करने का प्रयास किया है।

क्या सामवेद भाष्य के बाद अन्य वेदों का भी भाष्य करने का विचार है?

अभी तक तो इस प्रकार की कोई योजना नहीं है। पं0 बुद्धदेव विद्यामार्तण्ड (स्वामी समर्पणानंद) ने अथर्ववेद के एक काण्ड के पद्रह सूक्तों का भाष्य किया है। स्वामी दीक्षानंद इसी कार्य को आगे बढ़ाने को प्रेरित कर रहे है। यदि संभव हुआ तो अथर्ववेद का भाष्य करने में प्रवृत्त होऊंगा।

सत्र - 1991-92 □

वेद गुरुकुल को नई ऊँचाइयाँ दे सकते हैं

-प्रो.रामप्रसाद वेदालंकार

*आर्य साहित्य के क्षेत्र में विशेष सेवाओं के लिए सम्मानित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति वेदरत्न आचार्य प्रो रामप्रसाद वेदालंकार की वेद व साहित्य के क्षेत्र में उनकी अलग पहचान है। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित आचार्य श्री से **सुभाषचंद्र भाटी** की बातचीत के कुछ अंश.-*

आचार्य जी, आप अपने बचपन के बारे में कुछ बताएँ?

मेरा जन्म 7 जनवरी 1936 को फटिया के जिला मरदान (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था। यह मेरा दुर्भाग्य था कि मेरा जन्म उस स्थान पर हुआ जहाँ मुझे हिन्दी व संस्कृत सीखने को नहीं मिली। उस क्षेत्र में हिन्दी नहीं बल्कि उर्दू फारसी तथा पश्तो बोली तथा पढ़ी जाती थी। पिता श्री गंगा बिशन ने बचपन से ही मेरा ध्यान अध्यात्म की ओर डाला। जब मैं चौथी कक्षा में था तो अपने मित्रों के साथ 3 मील दूर गीता सुनने जाया करता था। देश विभाजन के बाद मेरी हाईस्कूल तक की शिक्षा चन्दौसी में हुई। मेरी बाद की शिक्षा दयानंद उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में हुई।

आपने अध्यापन कार्य कहाँ-कहाँ किया?

दयानंद उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में शिक्षा ग्रहण करने के बाद वहीं अध्यापन कार्य किया। जुलाई सन् 1962 में मुझे हरिद्वार आने तथा वानप्रस्थ आश्रम में वेदों पर व्याख्यान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्हीं दिनों मैं सर्वप्रथम गुरुकुल आया तथा काफी प्रभावित हुआ। फिर मेरा प्रवेश गुरुकुल में एक छात्र के रूप में हुआ। मैंने वैदिक साहित्य में एम.ए. किया। सन् 1968 में मैं प्रवक्ता बना। फिर प्रोफेसर व आचार्य बना। मैं गुरुकुल में तीन बार कुलपति बना तथा अंत में मैंने उपकुलपति पद पर कार्य किया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जिन उद्देश्यों के लिए इसकी स्थापना की थी क्या वे पूरे हो रहे हैं?

आजकल लोगों का उद्देश्य केवल धन कमाना रह गया है। लोग वेद व दर्शन की तरफ ध्यान न देकर जेब काटने के लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों को मान्यता दे रहे हैं। लोगों को ये नहीं भूलना चाहिए कि वेद भारत का गौरव है। वह वेद ही है जो गुरुकुल की परंपरा को ऊँचाई तक पहुँचा सकता है। गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य वैदिक संस्कृति का प्रचार तथा वेदों का पठन-पाठन ही

था। लेकिन आज इन उद्देश्यों पर अमल नहीं हो रहा है।

गुरुकुल में सहशिक्षा के बारे में आपके क्या विचार है?

मैं हमेशा से सहशिक्षा का विरोधी रहा हूँ और रहूँगा। गुरुकुल जैसी पवित्र जगह पर सहशिक्षा होना अपवित्रता है। मैं तो गुरुकुल में ऐसे लोगों का रहना भी पसंद नहीं करता जो धूम्रपान, मांस-मछली का सेवन करते हों।

आपको गुरुकुल में कौन सा पद अच्छा लगा?

मुझे गुरुकुल में आचार्य का पद अच्छा लगा। यहाँ रहते हुए लोगों का अत्याधिक प्यार पाया। इस पद पर रहकर मैंने गुरुकुल की संस्कृति तथा वेद के विषय में काफी चीजें सीखी।

लेखन के क्षेत्र में आपकी क्या उपलब्धियाँ है?

मै अब तक 55 पुस्तकें लिख चुका हूँ। मुझे अपनी पुस्तकों की ख्याति के बारे में विदेशों से आने वाले पत्रों से पता चलता है इसके अलावा मेरी तीन वीडियो कैसेट्स तथा आडियो कैसट्स भी आ चुकी है।

आपकी प्रिय पुस्तक कौन सी है? क्या आप और भी पुस्तकें लिखना चाहते हैं?

मेरी प्रिय पुस्तक 'अनन्त की ओर' है। मैं चाहता हूँ कि प्रति वर्ष एक किताब लिखूँ। मैंने अब तक एक लाख 54 हजार रुपये साहित्य रचना पर खर्च किया है।

गुरुकुल से सेवा मुक्त होने के बाद आप क्या कर रहे हैं?

प्रारम्भ से ही वेद तथा वैदिक सस्कृति के पठन-पाठन में मेरी रुचि रही है। पिछले कई वर्षो से वैदिक साहित्य पर 60 पुस्तकों की रचना की है। रिटायर होने के बाद भी मैं इसी कार्य में लगा हुआ हूँ। इसके साथ समाज सुधार व भजन उपदेश इत्यादि में भी समय देना चाहता हूँ।

□

सत्र - 1993-94

मेरे उपन्यास मेरे नाम से नहीं छपे

-वेदप्रकाश शर्मा

मध्यवर्गीय पाठकों के बीच बड़ी संख्या में बिकने वाले उपन्यासों के लेखक के रूप में वेदप्रकाश शर्मा एक जाना-पहचाना नाम हैं। वे अब तक सवा सौ से अधिक उपन्यास लिख चुके हैं। उनके कई उपन्यासों पर फिल्म भी बन चुकी है। श्री शर्मा 'तुलसी कहानियां' के संपादन की जिम्मेदारी भी संभाल रहे हैं। उनका मानना है कि एकेडेमिक एजुकेशन से कोई व्यक्ति लेखक नहीं बन सकता। अलबत्ता अपनी प्रतिभा को जरूर निखार सकता है। प्रस्तुत है, श्री शर्मा से एक संवाद **राहुल कुमार** *का:-*

आपने अपनी पहली कृति कब और कहां लिखी?

मैं जब कक्षा नौ का छात्र था, तब मेरी पहली कृति "पैनों की जेल" नामक कहानी कॉलिज पत्रिका में छापी गई। इसे पढ़ कर पत्रिका के संपादक ने मुझे पत्रिका का 'छात्र संपादक' बना दिया। जब मैं दसवीं कक्षा का छात्र था, तो मैंने अपना पहला उपन्यास 'डायमंड किंग' लिखा जो मेरे अपने नाम से नहीं छप सका। ऐसे 24 उपन्यास प्रकाशित हुए जो मेरे नाम से नहीं छपे। इसलिए मैं अपना पहला उपन्यास '**दहकते जहर**' को मानता हूं। जो मेरा 25वां उपन्यास है, और मेरे नाम से छपा।

उपन्यास लेखन के लिये किसी प्रकार का प्रशिक्षण लेना आवश्यक है?

लेखन सिखाया नहीं जाता बल्कि यह ईश्वर प्रदत्त होता है। इसके लिये किसी विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण लेने की आवश्यकता नहीं होती हालांकि यह एक ऐसी अंत:प्रेरणा है जिसे प्रशिक्षण के माध्यम से निखार कर कलात्मक रूप में ढाला जाता है।

आपके उपन्यासों पर कितनी फिल्में बनी या बन रही हैं?

फिल्म वालों ने मेरे उपन्यास पढ़े, जिनमें उन्हें आकर्षण नजर आया इसलिए वे लोग मेरठ आए और उन्होंने मुझसे बात की। अब तक मेरे उपन्यासों पर दो फिल्में '**बहू की आवाज**' और 'अनाम' रिलीज हो चुकी है तथा '**कानून का बेटा**' और '**शीशे की अयोध्या**' फ्लोर पर है। एक फिल्म 'सभी दिवाने दौलत के' एशिया टी. वी. वाले भी बना रहे है।

क्या आपके उपन्यास पर फिल्म हू-बू-हू बनती है या कुछ परिवर्तन होता है? आपके उपन्यासों पर टी.वी. सीरियल बनें तो कैसा रहेगा?

फिल्म वाले उपन्यास से केवल आइडिया लेते हैं, जिसे वे अपनी कल्पना एवं योजना के अनुसार ढाल लेते हैं। मैं अपने किसी भी उपन्यास पर सीरियल बनवाना नही चाहूँगा क्योंकि इसमें मेरी रुचि नहीं है। यह नुकसान देय भी है। इसमें लेखक को कोई नहीं जानता, केवल पात्रों को ही दर्शक पहचानते हैं, और न ही इतना पारिश्रमिक मिलता है कि लेखक अपनी लेखनी को सार्थक मान ले।

टी.वी. के विदेशी चैनलों, दूरदर्शन के नए कार्यक्रमों से आपके उपन्यास लेखन पर कोई असर पड़ेगा?

नए मीडिया से काफी असर पड़ा है। करीब 40 प्रतिशत पाठक कम हो गए है। आम पाठक केवल अपने पसंदीदा उपन्यासकार को पढ़ते हैं, लेकिन कुछ पाठकों का रुझान पढ़ने के बजाय कल्पना को चित्रित रूप से देखने में अधिक रहता है। कुछ पाठकों को पढ़ना अच्छा लगता है। दूरदर्शनी मनोरंजन के कारण लोगों के पास समय की कमी हो गई इसलिए उपन्यास आदि पढ़ने के मामले में पहले जितने रुचिवान नहीं रहे।

अब तक आपके कितने उपन्यास छप चुके हैं?

अब तक मेरे 127 उपन्यास छप चुके है और नया उपन्यास 'लल्लू' का दूसरा भाग आ रहा है। इसके अलावा 'वो सारे खद्दर वाले' नाम से भी एक उपन्यास लिख रहा हूँ।

आपको अपने उपन्यासों के लिए विचार एवं सस्पैंस आदि की प्रेरणा कहाँ से मिलती है?

विचार तो जब हम किसी से बात करते है, तो एक छोटी सी बात पर ही पूरा उपन्यास तैयार हो जाता है। बात करने वालों को पता भी नहीं चलता। उदाहरण स्वरूप मुझे एक दोस्त ने बताया कि किसी थाने पर इतने रुपया महीना आते है। इसी आइडिया पर मैंने पूरा उपन्यास लिख डाला। ऐसे ही मेरा उपन्यास लाश कहां छिपाऊं लिखा गया, जिसका विचार यू आया कि होली के दिन मेरे एक दोस्त के घायल होने से खून के कुछ निशान मेरे नाखूनों में लगे रह गए, जो काफी प्रयास करने के बाद भी नहीं छूटे। तब मुझे लगा की खून को छिपाया नहीं जा सकता। और रही सस्पैंस की बात सो वह कहानियों के साथ-साथ आवश्यकता के अनुसार अपने आप पैदा हो जाती है जैसे जैसे कहानी आगे बढ़ती है सस्पैंस गहरा होता जाता है।

आपको अपना कौन सा उपन्यास ज्यादा पसंद है?

मेरी पसंद के तो मेरे सभी उपन्यास हैं। लेकिन कभी ऐसा भी होता है कि जो हमें पसंद नहीं होता है वह पाठकों को बहुत पसंद आता है। बिक्री के हिसाब से तो सबसे ज्यादा 'वर्दी वाला गुंडा' बिका लेकिन कहानी के हिसाब से 'सभी दीवाने दौलत के' मुझे अधिक पसंद हैं।

आजकल अश्लील एवं हिंसक साहित्य खूब बिक रहा है। क्या आपने

भी उपन्यासों में अश्लीलता या हिंसक प्रवृत्ति की कल्पना को स्थान दिया है?

मैंने सैक्स व हिंसा को कभी मान्यता नहीं दी है। मैं ऐसा कुछ भी नहीं लिखना चाहूँगा, जिसमें अश्लीलता का प्रयोग हो या मेरे पाठक एक दूसरे से छिपा कर पढ़ें। मैं तो चाहता हूं कि सारा परिवार एक साथ पढ़ सके ऐसा कुछ लिखूँ। व्यापारिक दृष्टि से अश्लील उपन्यास ज्यादा बिक रहे हैं, यह मान्यता सही नहीं है। क्योंकि आज भी मेरे उपन्यास सबसे ज्यादा बिकते है जिसमें अश्लीलता नहीं होती है।

प्रेस में कहानियाँ, लेख, फीचर आदि चोरी हो जाते हैं। यह समस्या कभी आपके सामने आयी है?

प्रेस में कभी चोरी नहीं होती, लेकिन कुछ प्रकाशक नाम का फायदा उठाकर पैसा कमाना चाहते है, जैसे मेरे उपन्यास 'लल्लू' के साथ हुआ। इसमें एक प्रकाशक ने मेरे नाम से व मेरे पॉकेट बुक्स के नाम से छपवा कर मेरा उपन्यास आने से पहले ही किसी और लेखक से लिखवा कर बाजार में भेज दिया, जिसे बाद में हमने पकड़ लिया। ऐसे मामलों में कानूनी कार्रवाई का सहारा लेना पड़ता है।

उपन्यास लिखना आपका पेशा है या शौक?

उपन्यास लिखना मेरा शौक भी है और पेशा भी। इसके अलावा मैं 'तुलसी कहानियां' का प्रधान सम्पादक हूं व बच्चों के लिये 'तुलसी कामिक्स' भी प्रकाशित करता हूं।

आप नये पत्रकारों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

पत्रकारों को सच्चाई को सामने लाना चाहिए, उन्हें किसी दबाव में नहीं आना चाहिए। अगर उन्हें पत्रकार ही बनना है तो फिर विभिन्न क्षेत्रों में दखल नहीं देनी चाहिए यदि सब जगह हस्तक्षेप करेंगे तो उनके सब कार्य अधूरे रह जाएँगे। इसलिए पत्रकारों का एक ही लक्ष्य होना चाहिए स्वच्छ पत्रकारिता...।

सत्र - 1993-94 ☐

देश का जनमत भाजपा के पक्ष में

-कैलाश जोशी

अयोध्या कांड के बाद भाजपा संपूर्ण देश के साथ मध्यप्रदेश में भी बचाव की मुद्रा में आ गई थी। लेकिन जबलपुर हाईकोर्ट के फैसले के बाद मध्य प्रदेश में वह फिर आक्रामक रुख में नजर आ रही है। इस फैसले से भाजपा को नई ताकत मिली है। भाजपा नेता दावा कर रहे हैं कि अबकी बार पार्टी मध्यप्रदेश के साथ केंद्र में भी सरकार बनाएगी। इसी क्रम में मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी ने ***विनय गोयल*** *की बातचीत की:-*

आपका राजनीति में प्रवेश कैसे हुआ?

मैं सन् 1948 से जनसंघ से जुड़ा हूँ। सक्रिय सदस्य रहा हूँ। मैं विपक्ष में रह कर भी पराजित नहीं हुआ। मैंने सदैव चुनाव जीता, मेरा अधिकांश कार्यकाल विपक्ष का ही रहा। दो बार मैं प्रतिपक्ष नेता भी रहा हूँ। एक बार सन् 1972 से 1975 के बीच तथा दूसरी बार 1985 से 1990 के बीच। 1980 से 1985 के बीच भारतीय जनता पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष भी रहा हूँ।

जैसे कि माना जाता है राजनीति में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है, इस स्थिति में खुद को कैसे संतुलित कर रखा है?

देखिए, बात यह है कि लोग लघुपथ अपनाते हैं जिसके कारण से यह सब बातें होती हैं। अगर हम सीधे सपाट काम करें तो कोई कठिनाई नहीं होती। लंबे समय की राजनीति का मेरा अनुभव यह है कि सौ में से सत्तर मतदाता ऐसे होते हैं जिनको कि पाँच वर्ष तक हम से कोई काम नहीं पड़ता। छवि, आचरण तथा व्यवहार को देखकर ही वह आपके बारे में मन बनाते हैं, शेष तीस लोगों में दस लोग ऐसे होते हैं जो सार्वजनिक कार्यों, जैसे गांवों में सड़क, बिजली तथा पानी आदि की समस्याओं को लेकर आते हैं। दस फीसदी लोग ऐसे होते हैं जो अपने निजी कार्यों को लेकर आते हैं, इन दस प्रतिशत लोगों के बारे में मेरा यह मानना है कि वे ही सब को बिगाड़ते हैं, विधायक को अपनी मुट्ठी में रखना चाहते हैं तथा लोभ लालच दिखाकर उल्टे सीधे कार्य कराना चाहते हैं। समय आने पर चुनाव में सहयोग न करने की धमकी भी देते हैं। उनसे आपको घबराने की जरूरत नहीं है, यदि हम जमीन से जुड़कर एक मिशन की तरह राजनीति को लें तो कोई परेशानी नहीं होती है।

गत दिनों भाजपा कार्यसमिति की हुई बैठक अंतर्विरोध सामने आए, जिनमें एक पक्ष ने विधान सभा को बहाल करने की मांग की तथा दूसरे पक्ष ने चुनाव कराए जाने की बात रखी, इस बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?

इसमें विभिन्न विचारधाराएं नहीं हैं। हमारे केंद्रीय नेताओं ने भी दो बातें कही हैं। दोनों प्रकार की बातें बोलना इसलिये भी आवश्यक है कि जब हम यह कहते है कि उच्च न्यायालय ने अपने निर्णय में राज्यपाल की उद्घोषणा को निरस्त कर दिया है, तो हम यह मांग कर सकते है कि हमारी सरकार को पुन: स्थापित किया जाए। परंतु जब हम देखते है कि सर्वोच्च न्यायालय में अपील द्वारा स्थगनादेश मिल गया है, तो हम यह कहना चाहेंगे कि फिर राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। तत्काल चुनाव कराए जाएँ। अत: दोनों प्रकार की बातें दोनों संदर्भों में हम लोग बोलते रहे है, इसमें कहीं कोई अंतर्विरोध नहीं है।

प्रदेश में तीसरी बार राष्ट्रपति शासन लगाया गया है, आपको वर्तमान के राष्ट्रपति शासन में पहले दो बार की अपेक्षा कैसा अनुभव कर रहे हैं?

देखिए, ऐसा है पहली बार 1977 में केंद्र में जनता सरकार के आने पर राष्ट्रपति शासन लगाया गया था, वह राष्ट्रपति शासन पूर्णत: जनादेश पर आधारित था। उसमें कानून व्यवस्था में खराबी या पुरानी सरकार की असफलता जैसे कोई कारण नहीं थे। वह विधानसभा उसी स्थिति में भग की गई थी, जब उसका पाँच वर्ष का कार्यकाल समाप्त हो गया था। तब चूँकि नया जनादेश मिला था और उस समय के राज्यपाल तथा उनके सलाहकारों के बीच कोई व्यावहारिक हस्तक्षेप नहीं थे तथा उन्होंने मर्यादाओं का उल्लघन भी नहीं किया था। इस राष्ट्रपति शासन की अवधि 54 दिनों की रही। दूसरी बार सन् 1980 में राष्ट्रपति शासन लगा। यह भी पूर्णत: जनादेश के आधार पर लगा लेकिन उस समय हमारी सरकार होने के कारण हमारा यह मत था कि चूँकि हमें जनता ने चुनकर पाँच वर्षों के लिये बैठाया था, इसलिये हमें अपना कार्यकाल पूरा करने का अवसर दिया जाना चाहिए था। हमारे किसी काम में किसी भी प्रकार का कोई दोष नहीं था। कानून व्यवस्था भी खराब नहीं थी, बात केवल जनादेश की थी। यह राष्ट्रपति शासन 109 दिन का था।

तीसरी बार अब जो राष्ट्रपति शासन लगाया है उसमें स्थिति ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण बनी कि प्रारंभ से ही विवाद पैदा हो गया। पहले तो दो वरिष्ठ अधिकारियों को हटाने के संबंध में ही मतभेद हो गए फिर राज्यपाल तथा उनके सलाहकार के बीच आपसी मतभेद हो गये। इस बार तो कांग्रेस के लोग शुरू से ही यह माँग कर रहे थे कि विधानसभा भग करो, कभी किसी मुद्दे पर तो कभी किसी मुद्दे पर। पिछले साल मॉग की गई कि भूख से हुई मौतों के कारण विधानसभा भंग की जाए। प्रध ानमंत्री भी यहाँ आए, उन्होंने भी कहा कि भूख से कोई मौत नहीं हुई है। हमारे ढाई वर्ष के कार्यकाल में कांग्रेसी कभी किसी बड़े घोटाले का आरोप हमारी सरकार पर नहीं लगा पाए। जबकि उनकी सरकार में हम छह महीनों में कोई न कोई आरोप

लगाते थे और वे आरोप ठोस आधार पर होते थे।

पिछले दिनों चुरहट लाटरी कांड में एक वरिष्ठ केंद्रीय मंत्री के साथ-साथ आपका नाम भी काफी उछला!

इस मामले को हम लगातार जांच की मांग के साथ विधान सभा में लगभग एक-डेढ़ वर्ष तक उठाते रहे, पर तत्कालीन मुख्यमंत्री ने कह दिया कि कहीं कोई घोटाला नहीं है। सब काम ठीक चल रहा है। हुआ यह था कि दिल्ली के एक फर्म को इन्होंने अपना एजेंट बना लिया था तथा उससे यह अनुबंध कर लिया था कि आप कितने भी ड्रा निकालें, लॉटरी निकालें आपने संस्था को एक करोड़ रुपया देना है। उनको एक ड्रा की अनुमति दी गई थी परंतु उन्होंने 12 ड्रा निकाले। सरकार का नोटिस चले जाने के बाद भी उन्होंने तीन ड्रा निकाले। हाईकोर्ट द्वारा की गई जांच में यह सिद्ध हुआ कि लगभग 20 करोड़ के टिकट छपवाए गए और उसमें से केवल चार करोड़ के पुरस्कार बाँटे गये। बाकी के रुपयों का कोई हिसाब नहीं है। उससे यह भी हुआ कि जिसके नाम इनाम खुला उसको इनाम मिला ही नहीं। मद्रास का एक कांस्टेबल था उसका एक लाख रुपये का इनाम निकला। दिए गये पते पर से पोस्टमैन ने उसका पत्र यह लिखकर वापिस भेज दिया कि यहाँ पर इस नाम का कोई दफ्तर नहीं है। वह मेरे पास भी आया। उसने इसके लिये जिम्मेदार अधिकारियों को भी पकड़ा। उन्होंने कहा कि देखो, टिकट के पीछे लिखा है कि अपने ही नाम का दावा 45 दिनों के अंदर कर दें, चूंकि तुमने कोई कार्यवाई नहीं की अत: तुम्हें अब इनाम नहीं मिल सकता। जो इनाम खुले हैं वह भी फर्जी नामों से खुले हैं। अर्जुन सिंह भी उसमें लिप्त हैं। मेरी जानकारी के अनुसार कैरवा बाँध पर इन्होंने जो महल बनाया है, उसको बनवाने में लॉटरी के पैसे का ही उपयोग किया गया। उसके बारे में मेरे द्वारा पूछे जाने पर भी उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

आने वाले चुनावों में आप राज्य तथा केंद्र में भाजपा का क्या भविष्य देखते हैं।

देखिए, जिन प्रदेशों में हमारी सरकारें थीं वहां तो हमारी सरकारें बनेंगी ही, साथ-साथ दो-तीन अन्य प्रदेशों में भी हमारी सरकार के बनने की संभावना प्रबल हो गई है। केंद्र में भी भाजपा की ही सरकार बनेगी। इस समय देश का जनमत बदला हुआ है तथा वह यह चाहता है कि देश को अपेक्षित दिशा मिले, अत: परिवर्तन आवश्यक है।

☐

सत्र - 1992-93

कांग्रेस ने आतंकवाद को बढ़ावा दिया

-कुशाभाऊ ठाकरे

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव कुशाभाऊ ठाकरे उन्हीं को सांप्रदायिक ठहराते हैं, जो भाजपा पर यह लांछन लगाते हैं। आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए वे कांग्रेस को दोषी ठहराते हैं। नई आर्थिक नीति से वे इत्तफाक नहीं रखते, उनका जोर स्वदेशी और उदारीकरण के समन्वय पर है। प्रस्तुत है उनसे संदीप कपूर का एक संवाद :-

अभी संपन्न हुए कांग्रेस के तिरुपति अधिवेशन में भारतीय जनता पार्टी पर सांप्रदायिक पार्टी होने का आरोप लगाया गया है, आप इस विषय पर क्या कहना चाहेंगे?

पहले वह अपनी करतूतें देखें। वह खुद सांप्रदायिक है।

उमाभारती जी का भाजपा के राष्ट्रीय अधिवेशन में गांधीनगर न जाने का क्या कारण है?

मैं इस विषय पर बात नहीं करना चाहता।

ऐसा कहा जा रहा है कि वह पटवा प्रसंग के कारण गांधीनगर नहीं गई?

मैं इस विषय पर किसी तरह की टिप्पणी नहीं करूंगा।

क्या भाजपा राष्ट्रपति के चुनाव में कांग्रेस के साथ तालमेल करेगी? जैसा कि आपने लोकसभा के अध्यक्ष पद के चुनाव में किया था?

अभी इस प्रश्न पर पार्टी में कोई विचार नहीं हुआ है।

जब से उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार आयी है, आतंकवाद बढ़ा है, आतंकवाद रोकने के लिए प्रदेश सरकार क्या कर रही है?

वैसे उत्तर प्रदेश में आतंकवाद इंपोर्ट हुआ है पंजाब से। जब पजाब के चुनाव हुए तो सारा पंजाब सेना को सौंप दिया गया, तो वहाँ के आतंकवादी भागकर पड़ौस के प्रांतों में चले गये। सरकार ने काफी नियंत्रित करने का प्रयत्न किया है। वास्तव में यह समस्या सारे देश की है। केंद्र को इस मामले में उत्तर प्रदेश सरकार की मदद करना आवश्यक है।

अभी मुलायम सिंह ने आपराधिक चरित्र वाले भाजपा विधायकों व मंत्रियों की लिस्ट निकाली है, आप उन विधायकों व मंत्रियों पर क्या

कार्रवाई करने जा रहे हैं?

वो सब गलत बातें हैं। मुलायम को पहले अपने गिरेबान में झांककर देखना चाहिए।

यदि राम मंदिर निर्माण के मुद्दे पर केंद्र सरकार ने उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार को बर्खास्त कर दिया तो आपका अगला कदम क्या होगा?

वे जो करते है करें, परंतु मंदिर बनेगा, यह बात पक्की है।

यदि केंद्र में भाजपा की सरकार आये तो वह पंजाब व काश्मीर समस्याओं का समाधान किस प्रकार करेगी?

हम तेजी से कदम उठाएंगे। असल में तो यह समस्या कांग्रेस की देन है। कांग्रेस ने कई प्रकार के झगड़े फैलाए। आतंकवादियों का समर्थन किया। अब मामला बहुत बढ़ गया है। उसको नियंत्रित करने में समय लगेगा। लेकिन कांग्रेस का इस समस्या की ओर देखने का दृष्टिकोण साफ न होने के कारण यह समस्या और बढ़ रही है। यदि हम केंद्र में होते तो जल्दी ठीक करते।

भाजपा की वर्तमान में आर्थिक नीति क्या है?

भाजपा ने गांधीनगर अधिवेशन में अपनी आर्थिक नीति बहुत स्पष्ट की है। दो बातें हम पहले से कहते आए है कि एक विदेशी कर्ज के आधार पर यहां की आर्थिक उन्नति नहीं हो सकी। उसका ही परिणाम है कि हम इतने कर्जदार हो गये है कि उसका ब्याज चुकाने के लिये और कर्ज लेना पड़ रहा है। हमें अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा, स्वावलबन और स्वदेशी का मार्ग अपनाना पड़ेगा तभी देश उन्नति करेगा। दूसरे कट्रोल की आर्थिक नीति नहीं चलेगी, खुलापन उसमें लाना पड़ेगा।

डॉ0 मुरली मनोहर जोशी की एकता यात्रा के विषय में कहा गया है कि यह यात्रा पूरी तरह विफल रही?

नहीं, यह यात्रा बहुत सफल रही। इससे काश्मीर का मामला पूरे देश के लोगों की समझ में आया। यह केवल कुछ अखबारों का प्रचार है कि यात्रा सफल नहीं रही। काश्मीर के मामले की वास्तविकता देश की जनता के सामने आ गई यही इस यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

सत्र - 1992-93

उत्तराखंड राज्य अवश्य बनना चाहिए

-नित्यानंद स्वामी

उत्तर प्रदेश विधायिका के उच्च सदन में विशेषधिकार समिति के अध्यक्ष, अधिष्ठता मंडल के चेयरमैन तथा विधान परिषद के उपसभापति रह चुके है। नित्यानंद स्वामी इन दिनों विधान परिषद् के सभापति है। अपने आपको राजनीतिज्ञ की बजाय सामाजिक कार्यकर्ता कहलाना पसंद करते है। वे खुद को राजनीतिक टिप्पणियों से भी दूर रखते है। उनसे ***गोस्वामी गगनदीप*** *की स्वामी जी से बातचीत के कुछ अंश :-*

आप पहले जनसंघ से विधायक रहे परंतु बाद में कांग्रेस में शामिल हो गए?

मेरे इस निर्णय के पीछे किसी भी दल की कमियां या खूबियां नहीं है। 1969 से 74 तक जनसंघ का विधायक रहने के बाद में राजनीति से दस वर्ष तक एकदम अलग रहा। 1984 में आप्रेशन ब्लू स्टार के बाद में इंदिरा गांधी के व्यक्तित्व व निर्णय क्षमताओं से प्रभावित होकर कांग्रेस में शामिल हो गया।

आपने इस बार विधान परिषद चुनाव निर्दलीय लड़ने का क्यों फैसला किया?

इस बार मैं निर्दलीय इसलिए लड़ रहा हूँ कि आज मैं लोगों के सम्मुख एक सामाजिक कार्यकर्ता की हैसियत से हूँ न कि एक राजनीतिज्ञ के रूप में। आज के हालातों के मद्देनजर में राजनीतिज्ञ कहलाना पसंद भी नहीं करूँगा। इस समय तो एक मात्र उद्देश्य है उत्तराखंड की जनता की सेवा करना।

किन उपलब्धियों के आधार पर आपको वोट पड़ेगा?

मैंने हमेशा पार्टीबाजी से ऊपर उठकर लोगों की सेवा की है। मैंने इतने कार्य कराए हैं कि उनका पूर्ण विवरण देना मुश्किल है। मेरे मुख्य कार्यो में केंद्रीय विद्यालयों का क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून में खुलवाना, डाक पत्थर व बड़कोट में महाविद्यालय की स्थापना, प्राइमरी टीचर्स को नए वेतनमान पर पेंशन की सुविधा, अंशकालिक चिकित्सकों की तदर्थ नियुक्तियां तथा टनकपुर में स्टेडियम का निर्माण कराने हेतु गंभीर प्रयास करना आदि शामिल है।

उत्तराखंड की जनता "राज्य नहीं तो चुनाव नहीं" के नारे के साथ चुनाव का विरोध कर रही है। ऐसे में आप चुनाव क्यों लड़ रहे है जबकि पहले आप उत्तराखंड के पक्ष में व मुलायम के विरोध में खड़े हुए थे?

किसी के विरोध की कोई बात नहीं है। मैं हमेशा जनता के साथ रहा हूँ। मैंने उत्तराखंड की जनता की आवाज ऊपर तक उठाई है। वास्तविकता यह है कि अधिकांश लोग चुनाव चाहते हैं, गिने-चुने लोग ही चुनाव का विरोध कर रहे हैं। पहले पंजाब व आसाम में भी राजनीतिक दलों ने चुनावों का विरोध किया था परंतु आज उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ है और वे चुनाव लड़ रहे हैं। चुनाव एक प्रजातांत्रिक प्रक्रिया है उसमें रुकावट नहीं डालनी चाहिए।

हरिद्वार को उत्तराखंड में शामिल किया जाना चाहिए या नहीं जबकि हरिद्वार के जिला बनने पर गढ़वाल के नेताओं ने गढ़वाल का क्षेत्र हरिद्वार में जाने से रोका था?

हरिद्वार के जिला बनने पर इसके सीमांकन में किसने क्या भूमिका अदा की इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं है। वैसे सीमांकन में किसी के कहने सुनने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह सब कमिश्नर तय करता है। उत्तराखंड का इसके सामाजिक व आर्थिक हितों को ध्यान में रखकर सीमांकन होना चाहिए। उसमें उत्तराखंड का एक पूर्ण स्वरूप आना चाहिए।

छोटे राज्यों के आप कहाँ तक पक्षधर हैं?

मैं यह नहीं कहता कि छोटे राज्य बनाने का एक नियम बनाना चाहिए। जहाँ तक उत्तराखंड का सवाल है इसके पीछे एक जनभावना है। इस जनभावना की कद्र करते हुए उत्तराखंड अवश्य बनाना चाहिए। साथ ही प्रत्येक क्षेत्र के लोगों को सुविधाएँ भी प्रदान करनी चाहिए।

आप स्नातक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। पढ़े लिखे बेरोजगार युवकों के लिए आपके प्रयास एवं योजनाएँ क्या हैं?

मैंने हमेशा स्थानीय युवकों को रोजगार व नौकरी देने पर बल दिया है। आगे भी स्थानीय युवाओं को नौकरी आदि में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसका मैं प्रयास करूँगा।

□

सत्र - 1995-96

चुनाव में जात नहीं योग्यता देखो

_-चौधरी महेंद्रसिंह टिकैत_

चौधरी महेंद्रसिंह टिकैत का किसान नेता के रूप में उदय 1987 में किसानों द्वारा किये गए आंदोलन से हुआ। पहले बिजली अव्यवस्था को लेकर शामली कर्मूखेडी बिजली घर पर उनके नेतृत्व में आदोलन मेरठ कमिश्नरी मुख्यालय व दिल्ली वोट क्लब पर धरने के साथ तथा बाद में भोपा में नईमा कांड, थोलरी काड तक व्यापक रूप से जबरदस्त आंदोलन चलाए। इस दौरान महेंद्रसिह टिकैत लगातार समाचार पत्रों की सुर्खियों में बने रहे। मुजफ्फरनगर के सिसौली कस्बे मे साधारण किसान के घर जन्मे टिकैत एक दशक से किमान हितों की लडाई लड रहे है। विभिन्न नेताओं और जिम्मेदार लोगों से टिकैत किसान हित संबंधी कई माँगे मनवा चुके है। प्रस्तुत है उनसे ***कंवरपाल*** *का एक संवाद :-*

आजकल आप कुछ कर नहीं रहे हैं, बहुत दिनों से किसी समस्या के संबंध में कोई आवाज नहीं उठाई?

आजकल किसानों के सामने बहुत सारे कार्य है। गेहू की कटाई चल रही है। इन सबसे निपटने के बाद ही कुछ करेंगे।

किस समस्या के बारे में?

किसानों को फसल के वाजिब दाम मिलें। आपने देख लिया होगा जब गेहूं किसान के घर रहता है तब 250 रुपये कुतल का भाव होता है और जब सरकारी कोठियों में चला जाता है तो उसका भाव दुगुना हो जाता है। सरकार ने 25 रुपये भाव बढाकर किसानों को मूर्ख बनाया है। अब यह सहन नहीं होगा।

सुना है कि आप चौ. देवीलाल से मिलकर कोई नई पार्टी बनाने जा रहे हैं?

नही एसा कोई इरादा नही है। चौ देवीलाल राजनीतिक व्यक्ति है जबकि हमारी यूनियन अराजनैतिक है। चौ देवीलाल से हमारा सबध तभी तक है जब तक वे किसानो की समस्याओं को सलझान क बार में प्रयास करते रहेंगे।

आजकल अखबारों में छप रहा है कि आपकी यूनियन का जनाधार कम हो रहा है?

लिखन का तो आप कुछ भी लिखें लकिन ऐसी बात नही है। वहुत जनाधार

है यूनियन का। आखिर यूनियन मेरी व्यक्तिगत तो है नहीं। सभी किसानों की है। जब तक किसान है तो यूनियन का जनाधार कैसे घटेगा।

आप पर आरोप है कि आप समस्या के समाधान के लिए किसी भी सरकार से सहयोग नहीं करते।

सरकार यदि यह चाहती है कि हम किसान हितों को नजर अंदाज करके उसके कहे अनुसार चलें तो यह संभव नहीं है। जब किसानों की समस्याएं खत्म नहीं होंगी, हम सरकार से सहयोग क्यों करेंगे? सरकार किसानों की मांगे पूरी करे, हम सहयोग के लिए तैयार है।

कर्नल भारद्वाज को यूनियन में शामिल करने का उद्देश्य कहीं कैप्टन भोपाल सिंह की कमी को पूरा करने के लिए तो नहीं था?

नहीं, ऐसा नहीं था।

दिल्ली वोट-क्लब रैली के बाद से किसान नेता शरद जोशी से आपकी मुलाकात हो पाई है या नहीं?

नहीं, उसके बाद उससे कोई मुलाकात नहीं हुई।

अयोध्या विवाद का आप क्या समाधान सोचते हैं?

यह कोई मसला ही नहीं है। अयोध्या के चारों तरफ काफी दूर तक मुसलमान है ही नहीं। हमने खुद जाकर देखा। यह समस्या तो सरकार ने पैदा की है। जिस दिन सरकार इस समस्या से अलग हो जाएगी समाधान हो जाएगा।

पंजाब में पिछले दिनों चुनाव कराए गए क्या इससे समस्या का समाधान होगा?

कहां, पजाब के चुनाव, 10 प्रतिशत वोट भी नहीं पड़े। इस तरह से चुनाव नहीं होते। इस तरह के चुनावों से पंजाब समस्या हल नहीं होगी। यदि मेरे पास अधिकार हो तो कुछ ही दिनों में इस समस्या को खत्म कर दूं।

आजकल उ.प्र. के कुछ भागों में भी आतंकवाद फैल रहा है....

(बीच में ही) जहां बेईमान और निकम्मी सरकार होगी वहां आतंकवाद ऐसे ही फैलेगा।

जब वीरबहादुर जी सिसौली आए थे तो आपने पानी भी गिलास में नहीं दिया।

अच्छा, यदि करवे से पानी पीने में इन लोगों को बेइज्जती महसूस होती है तो हम क्या करें। पिछले दिनों नारायण दत्त तिवारी जी के मंत्री नरेंद्र सिंह आए थे। हमने तो कोई गलत व्यवहार नहीं किया। अभी सुधीर बलियान आए थे। क्या उनसे कोई गलत व्यवहार हुआ?

देश में अगले महीने राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव होने जा रहे हैं। राष्ट्रपति के चुनाव में कुछ लोग अनुसूचित जाति के व्यक्ति को उम्मीदवार

बनाने की बात कर रहे हैं।

जाति का नहीं योग्य व्यक्ति का चुनाव होना चाहिए।

पत्रकारों का यूनियन पर आरोप है कि जब तक आपके पक्ष में लिखते रहते हैं तो आपके समर्थक खुश रहते हैं, जब विरोध में लिखा जाता है तो वह नाराज होकर प्रेस पर हमले करते हैं। क्या यह सही है?

अगर वे गलत लिखें तो बताओं, तुम ऐसा नहीं करोगे? विरोध में गलत लिखने से तो ऐसा ही होगा। पत्रकार भी तो हमें आतंकवादी लिखते हैं। अभी पिछले दिनों समाचार पत्रों ने झूठी रिपोर्ट छाप दी कि बुलंदशहर में पचायत ने गेहूं का मूल्य 300 रुपये प्रति कुंतल करने की मांग की है, जबकि ऐसी कोई पंचायत वहा हुई नहीं। हम चाहते है कि पत्रकार सही बात लिखें हमारी गलतियों को उजागर करें, बस।

सत्र - 1991-92

युवा राजनीति को सही दिशा दे सकता है

-राजेंद्र कुमार गुप्त

उत्तर प्रदेश भाजपा के वरिष्ठ व सक्रिय सदस्य राजेंद्र कुमार गुप्त ने जनसेवा के माध्यम से प्रदेश में अपनी प्रतिभा व व्यक्तित्व की छाप छोड़ी है। सीतापुर क्षेत्र से पांच बार जीत चुके राजेंद्र गुप्त भाजपा सरकार में मंत्री भी रह चुके है। श्री गुप्त की विद्वता और मृदु व्यवहार के उनके विरोधी भी प्रशंसक है। प्रस्तुत है श्री गुप्त से उन्हीं के निवास पर हुई ***संजय कुमार श्रीवास्तव*** *की बातचीत :-*

आपने एक शिक्षक के रूप में जीवन की शुरुआत की। उसके बाद आपको राजनीति में आने की प्रेरणा कैसे मिली?

मैं बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सदस्य था। संघ के माध्यम से सामाजिक कार्य करने की प्रेरणा मिली। मैं संघ का प्रदेश प्रभारी रहा और आपातकाल में जेल में भी गया। बाद में पार्टी के निवेदन पर चुनाव लड़ा और जनता के सहयोग से आज तक जनता की सेवा कर रहा हूँ। कोई व्यक्ति विशेष मेरा प्रेरणा स्रोत नही रहा। संघ और भाजपा के उद्देश्य व आदर्श ही मेरे प्रेरणा स्रोत रहे हैं।

मायावती सरकार को समर्थन देकर सत्ता में लाना और फिर समर्थन वापसी पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

मायावती सरकार से समर्थन जनता की आशाओं के अनुरूप वापस लिया गया। विपरीत आचरण शासन होने के कारण प्रदेश में सामाजिक व राजनीतिक अपराधीकरण बढ़ने लगा जबकि मुद्दे थे- सामाजिक अपराध रोके जाएँगे, ग्रामीण विकास को प्राथमिकता दी जाएगी। सबसे गंभीर बात ये थी कि देश के मान बिंदुओं पर घृणित आरोप लगाए जाने लगे। राष्ट्र के साथ खिलवाड़ किया जाने लगा, इसीलिए समर्थन वापस लेना पड़ा।

पिछले दिनों हुए स्थानीय निकाय व नगर निगमों के चुनाव में जो सफलता भाजपा को मिली है क्या इसका फायदा विधानसभा के चुनाव में पार्टी को मिलेगा?

जरूर मिलेगा, उससे भी अच्छी सफलता मिलेगी।

यदि आपकी पार्टी प्रदेश में सत्ता में आती है तो किन मुद्दों को प्राथमिकता के तौर पर लेगी?

भयमुक्त समाज की स्थापना, विकास को प्राथमिकता, शांति व्यवस्था कायम

हो, ग्राम विकास को प्राथमिकता तथा प्रदेश का सम्यक विकास। इसके अलावा राजनीतिक व सामाजिक अपराधीकरण को रोकना।

उत्तराखंड की मांग को आप कहाँ तक उचित मानते हैं?

पृथक उत्तराखंड राज्य की मांग एकदम सही है। यह राष्ट्रीय महत्व का प्रश्न है। उत्तराखंड ही क्या भाजपा तो देश के अन्य हिस्सों में भी छोटे राज्य बनाए जाने के पक्ष में है।

आप अपने राजनीतिक जीवन से संतुष्ट हैं?

मैंने जो भी कार्य किया है आत्म संतोष के लिए ही किया है। समाज सेवा का कार्य पूरी निष्ठा से कर रहा हूं। और इस सबसे मैं संतुष्ट भी हूं।

आपने राजनीति का एक लंबा सफर तय किया है। वर्तमान राजनीति और शुरुआती दौर में क्या अंतर आया है?

उस समय राष्ट्रभक्ति और समाज सेवा की भावना को प्राथमिकता देने वाले लोग थे जबकि आज अवसरवादी तथा स्वार्थी लोग राजनीति में आ रहे हैं।

राजनीति मे आने वाले युवा वर्ग के लिए आप क्या कहना चाहेंगे?

अब 18 वर्ष का युवक मत देने का अधिकारी है। अतः इस क्षेत्र में युवा वर्ग का ही वर्चस्व होना चाहिए। यही वर्ग राजनीति को सही दिशा दे सकता है। त्याग और देश-प्रेम की भावना से प्रेरित होकर आदर्शोन्मुख राजनीति से देश को उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ाना उन्हीं की जिम्मेदारी है। लेकिन पहले उन्हें अपनी शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

□

सत्र 1995-96

सभी दल भाजपा जितने सांप्रदायिक

-रामसिंह माण्डेबाँस

एक तरफ भारतीय जनता पार्टी ने डंकल प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने का विरोध किया तो वहीं इसके एक पूर्व सांसद रामसिंह माण्डेबॉस का कहना है कि डंकल प्रस्ताव देश के हित में है। मायावती द्वारा महात्मा गाँधी के प्रति की गई टिप्पणी को वे सही मानते हैं तो भाजपा उनकी नजर में आंशिक साम्प्रदायिक दल है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार यहाँ भी है। हरिद्वार के सांसद रह चुके रामसिंह माण्डेबॉस जो कांग्रेस से भाजपा में पहुँचकर अब उसे भी छोड़ चुके हैं। विभिन्न विषयों पर **देवेन्द्र गुप्ता** *की बातचीत के अंश :-*

आपके राजनीतिक जीवन की शुरूआत कैसे हुई?

मैं विद्यार्थी जीवन से ही राजनीति में सक्रिय रहा हूँ। आरंभ में सेवादल, यूथ कांग्रेस और कांग्रेस से जुड़ा रहा हूँ।

अपने मंत्रित्वकाल में प्रदेश के लिए क्या किया?

मेरे पास गृह विभाग था। गृह विभाग का सीधा संबंध कानून व्यवस्था से होता है। मेरे काल में कानून व्यवस्था की स्थिति पहले की अपेक्षा काफी अच्छी थी।

आपकी प्रतिबद्धताएँ क्रमशः कांग्रेस और भाजपा दोनों दलों के साथ रही हैं। दोनों में मूलतः क्या अन्तर है?

कांग्रेस कैडर पार्टी नहीं है। उसमें हर मत तथा हर विचारधारा के व्यक्ति हैं। जबकि भाजपा में एक तरह की विचारधारा के व्यक्ति अधिक हैं।

आप संघ तथा विहिप के कार्यक्रमों में बहुत कम दिखाई देते हैं?

मैं संघ तथा विहिप का सदस्य नहीं हूँ। मैं भाजपा का कार्यकर्ता हूँ। इसलिए मैं संघ या विहिप के कार्यक्रमों में नहीं जाता। धर्म संसद में भी इसलिए नहीं गया क्योंकि वह विहिप का कार्यक्रम था।

क्या सपा-बसपा अपना कार्यकाल पूरा कर लेंगी?

वे तो स्वयं ही अपना कार्यकाल पूरा नहीं करना चाहते। वे पाँच साल तो दूर एक साल भी पूरा नहीं कर पाएँगे क्योंकि दोनों पार्टी की विचारधाराएँ बिल्कुल अलग हैं।

कांग्रेस के पास विकास का मुद्दा है और भाजपा के पास धर्म का।

आप किसे जरूरी व बड़ा मानते हैं?

ऐसी बात नहीं है। हमारे पास भी विकास की नीति है लेकिन धर्म भी मुख्य है। भाजपा के पास जितना भी वोट बैंक आया है वह कांग्रेस से ही तो आया है। यदि धर्म मुख्य मुद्दा न होता तो भाजपा का जो स्वरूप आपके सामने है वह न होता। दूसरी बात विकास के लिए पैसा चाहिए, जब हमारे पास पैसा ही नहीं है तो हम विकास कहाँ से करेंगे।

आर्थिक उदारीकरण के बारे में आपके क्या विचार हैं?

यह एक सही कदम है लेकिन विदेशी कंपनियों को हमें अपनी शर्तों पर प्रवेश देना चाहिए, उनकी शर्तों पर नहीं। इसमें हम चीन का उदाहरण ले सकते हैं। हमें अपनी मिश्रित अर्थव्यवस्था के मॉडल पर बने रहना चाहिए। इससे ही देश का समग्र विकास होगा। विदेशी कंपनियों के आने से या अन्य उद्योगों के प्रभावित होने की बात निराधार है। देश के 99 प्रतिशत लोग हिन्दुस्तान की बनी दवाइयों का ही प्रयोग करते हैं। डंकल प्रस्ताव से श्रम कानूनों में सुधार होगा और इससे बाल मजदूरों की स्थिति सुधरेगी। मेरे विचार से डंकल प्रस्ताव पूरी तरह देशहित में हैं। हालांकि मेरी पार्टी इसका विरोध कर रही है।

हाल में ही मायावती द्वारा गाँधीजी के प्रति की गई टिप्पणी के बारे में आपका क्या कहना है?

मायावती ने महात्मा गाँधी के प्रति कोई गलत बात नहीं कही। उन्होंने जो कुछ कहा वह बिल्कुल सही है, क्योंकि महात्मा गाँधी ने एक वर्ग विशेष को ही हरिजन क्यों कहा। ब्राह्मण और वैश्यों को क्यों नही कहा।

भाजपा को एक साम्प्रदायिक पार्टी कहा व माना जाता है। इसके बारे में आपका क्या कहना है?

कौन सी पार्टी साप्रदायिक नहीं है मुस्लिम लीग, तेलगु देशम, सपा अथवा बसपा। किन्तु हिंदुत्ववाद को उठाने के कारण भाजपा पर यह आरोप ज्यादा लगाया जाता है। सांप्रदायिकता का जितना तत्व दूसरी पार्टियों में है, उतना ही भाजपा में भी है।

नवोदित पत्रकारों को आप क्या सुझाव देंगे?

आजकल पत्रकारिता को एक पेशे के रूप में अपनाना शुरू कर दिया गया है, जो ठीक नहीं है। हमें इसमें मिशनरी भावना से ही काम करना चाहिए। पत्रकार को अधिक अध्ययन करना चाहिए। उसे अधिक जागरूक रहने की आवश्यकता है।

सत्र - 1993-94 □

भाजपा की सोच में कहीं अंतर्द्वन्द्व नहीं

-वीरेन्द्र कुमार सखलेचा

मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता वीरेन्द्र कुमार सखलेचा का कहना है कि भाजपा की विचारधारा में कहीं अंतर्द्वंद्व नहीं है। अलबत्ता राजनीतिक विरोधियों ने इस तरह की अफवाहें फैलाने का कार्य किया है। पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेताओं से किसी तरह के मतभेदों से भी वे इनकार करते हैं। प्रस्तुत है उनमें **कुशलपाल सिंह** *चौहान का एक सवाद :-*

राजनीति में आपका प्रवेश कैसे हुआ?

थोड़ी रुचि तो विद्यार्थी जीवन में ही थी। वकालत करने के बाद इंदौर में 1953 में राजनीति में प्रवेश किया। लेकिन प्रैक्टिस की गरज से महू चला गया। महू से ज्यादा मुझे झाबर पसंद आया और वहा जाकर स्थापित हो गया। मैंने तत्कालीन जनसघ से 1957 में झाबर विधान क्षेत्र से चुनाव लड़ा और जीत गया। कांग्रेस की व्यापकता के बावजूद मध्य प्रदेश से कांग्रेस के 11 विधायक चुने गये थे। पार्टी के अध्यक्ष व विधानसभा में दल के नेता श्री विमल कुमार थे और मैं सचिव था तबसे सक्रिय राजनीति में हूँ।

भाजपा के संगठनात्मक चुनाव हो रहे हैं, क्या आप अध्यक्ष पद पर लड़ने के इच्छुक हैं?

संगठनात्मक चुनाव में भाग लेने की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। जैसा समय होगा वैसा निर्णय लिया जायेगा।

सुनने को मिला है कि आपमें और भाजपा के वर्तमान अध्यक्ष लखीराम अग्रवाल में वैचारिक व व्यावहारिक मतभेद हैं।

आपको सही जानकारी नहीं मिली है। हमारा श्री अग्रवाल से कोई मतभेद नहीं है।

उच्च न्यायालय के फैसले के संबंध में आपकी कार्यसमिति की बैठक में परस्पर दो बातें कहीं गयी हैं, एक ओर तो विधान सभा की बहाली की मांग की है तथा दूसरी चुनाव की, ऐसा क्यों? आपकी व्यक्तिगत राय क्या है?

बैठक में दो प्रकार की विचारधाराएं नहीं आईं, वह भ्रामक है। और चुनाव कराने का प्रश्न इसलिये नहीं होता कि राष्ट्रपति के उस आदेश को जिसके प्रभाव

से विधानसभा भंग हुई थी, मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने रद्द कर दिया है। इसलिये मेरी राय में विधानसभा अपने अस्तित्व में आ गई है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि सर्वोच्च न्यायालय भी यदि मध्यप्रदेश हाईकोर्ट के फैसले को बहाल रखती है तो विधानसभा अस्तित्व में रहेगी। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट के फैसले से सुप्रीम कोर्ट असहमत हो जाता है तो मात्र चुनाव ही विकल्प रहेगा। यह शंका भी व्यक्त की गई कि बहुत जल्दी सुप्रीम कोर्ट का निर्णय आना संभव नहीं है इसलिये तब तक राष्ट्रपति शासन की अवधि और छह महीने बढ़ानी पड़ेगी।

मध्यप्रदेश में पहले भी राष्ट्रपति शासन रहे हैं। पहले और वर्तमान राष्ट्रपति शासन में क्या अंतर महसूस करते हैं?

राष्ट्रपति शासन में एक ही बात सामान्य है कि राष्ट्रपति शासन दोनों बार ही पटवा जी की सरकार में लगा। 1980 में मेरे त्यागपत्र के बाद पटवा जी की 28 दिन की सरकार पर राष्ट्रपति शासन लागू हुआ और 1993 मे पटवा जी के ढाई वर्ष के शासन के बाद राष्ट्रपति शासन लागू हुआ। सन् 1980 में इतने व्यापक स्तर पर प्रशासन में हस्तक्षेप नहीं था लेकिन 1993 में प्रशासनिक हस्तक्षेप बहुत बढ़ गया है।

अभी भी मध्य प्रदेश अभावग्रस्त है, क्यों? आप लोगों ने भी राज्य का सर्वेक्षण किया है और आपकी पार्टी इस से निपटने के लिए क्या कर रही है?

नागपुर से लौटते समय प्रदेश का सबसे प्रभावित जिला सरगुजा और उसमें भी वाडर नगर है जहा अन्य वर्षों की अपेक्षा बहुत अधिक सूखा है। आम लोगों की दशा बहुत खराब है लेकिन सरकारी स्तर पर उससे निपटने का कोई कार्यक्रम नहीं दिखाई पड़ता। अलबत्ता हमारी पार्टी ने कुछ प्रयास किए है लेकिन अभी सार्थक परिणाम हासिल नहीं हो सके।

क्या प्रशासनिक अधिकारियों को ऐसा लगने लग गया है कि प्रदेश में भाजपा की सरकार वापस आएगी? इसलिये अधिकारियों का वर्ग भाजपा नेताओं के इर्द-गिर्द घूम रहा है?

नहीं, ऐसा नहीं है, भाजपा की तरफ प्रशासनिक अधिकारियों का झुकाव हो या न हो, हम चुनाव में विश्वास रखते है और जनता को सर्वोपरि मानते हैं। दूसरे, प्रशासनिक अधिकारी किसी पार्टी से नहीं जुड़े होते। उन्हें तो जिसकी सरकार आती है उन्हीं की नीतियों को क्रियान्वित करना होता है।

समाचार पत्रों से प्रदेश के वर्तमान राज्यपाल का बयान पढ़ने को मिला कि कार्यभार संभालने के बाद उन्हें खजाना खाली मिला, इस पर आपको क्या कहना है?

राज्यपाल का विचार सही नहीं है। यह कोई राजतंत्र तो है नहीं कि उन्हें खजाना खाली मिला हो। यह लोकतंत्र है और विधानसभा में वित्त विधेयक पास

कराकर खर्च की अनुमति ली जाती है। इसलिये खजाना खाली या भरा होने का प्रश्न ही नहीं है। शायद आपको याद हो कि राज्यपाल के इस वक्तव्य का तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री पटवा ने खंडन किया है।

आपकी पार्टी समय-समय पर परस्पर विरोधी नीतियों को उजागर करती रहती है ऐसा क्यों? मसलन जब आपकी सरकार थी तो तेंदूपत्ता मजदूरों को बोनस देने की मांग का विरोध किया जा रहा था, लेकिन जब आपकी सरकार नहीं है तब आप तेंदूपत्ता मजदूरों को बोनस देने की मांग कर रहे हैं?

भाजपा की नीतियों में कहीं अन्तर्द्वन्द्व नहीं है। तेंदूपत्ता नीति में परिवर्तन अर्जुन सिंह ने मध्यावधि चुनाव जीतने के लिये अपने मुख्यमंत्रित्व काल में लागू किया था जो निरर्थक सिद्ध हो चुकी है। इसीलिए पार्टी की नीतियों में यह कथित विरोधाभास दिखाई दिया।

पटवा जी की सरकार कमजोर क्यों मानी जाती रही ? क्या आप व्यक्तिगत रूप से उनकी कार्यप्रणाली से कितना संतुष्ट हैं?

क्षमा कीजिए मैं इस बारे में कोई भी टिप्पणी नहीं करूँगा और ना ही कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करूगा। पार्टी हित में ऐसी बातों को केवल फोरम में ही उठाता रहा हूँ।

पत्रकारों को सक्रिय राजनीति में भाग लेना चाहिये या नहीं?

मेरी राय में पत्रकारों को सक्रिय या निष्क्रिय राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए। क्योंकि किसी भी राजनीतिक दल से जुड़ जाने के बाद उनकी निष्ठा राजनीतिक बन जायेगी और समाज के सामने वास्तविक स्थिति रखने में वे असफल रहेंगे जो लोकतंत्र के लिये घातक सिद्ध होगा। पत्रकार राजनीति से अलग रह कर ही आम जनता के दुःख दर्द और शासन और प्रशासन की सफलता पर विफलता की रूपरेखा ईमानदारी से पेश कर सकता है।

सत्र - 1992-93

जनता की अदालत हर अदालत से बड़ी

-विद्याचरण शुक्ल

*मध्य प्रदेश के पहले मुख्य मंत्री पं.रविशंकर शुक्ल के पुत्र विद्याचरण को राजनीति विरासत में मिली है, जो उनकी वाक्पटुता से साफ झलकती है। करीब 35 वर्ष से लगातार राजनीति के केंद्र में रहे विद्याचरण शुक्ल से **दीपक नौटियाल** की बातचीत के कुछ अंश :-*

मध्य प्रदेश में आपके ताजातरीन दौरे कहीं चुनाव की तैयारी तो नहीं है?

नहीं, यह तो सांप्रदायिकता के खिलाफ मुहिम चलाने की कांग्रेसी योजना के तहत हो रहा है।

अर्जुन सिंह के इलाके में, उनके बिना घूमना अटपटा नहीं लगता?

भई, कोई किसी का क्षेत्र नहीं है। पूरा मध्यप्रदेश एक है। पार्टी हाईकमान ने निर्देश दिये हैं। कांग्रेस अध्यक्ष नरसिंह राव ने यह दौरा कार्यक्रम तय किया है। इसमें क्या अटपटा है। यह तो हमारी पार्टी की एकता का परिचायक है।

क्या अब अर्जुन सिंह से आपका विवाद खत्म हो गया है?

उनसे कभी हमारा कोई विवाद नहीं रहा।

पिछले महीने आपके बड़े भाई श्यामाचरण जी ने रूसी पठान वाला मामला उछालने का दोष अर्जुन सिंह पर मढ़कर उन्हें पार्टी से निकालने की मांग की थी?

यह आप भाई साहब से ही पूछें तो बेहतर होगा। मुझे इसकी जानकारी नहीं है।

और रूसी पठान से आपके ताल्लुकात वाली बात कहां तक सच है?

मेरा उससे कभी कोई सबंध नहीं रहा। कहीं सार्वजनिक कार्यक्रम में कोई मेरे बगल में खड़े होकर फोटो खिंचवा लेता है। छतरपुर में ही सौ-पचास छोटे-बड़े रूसी पठान घूम रहे होंगे। हजारों लोग मिलते है। मैं प्रत्येक को तो पहचानता नहीं हूं।

मध्यप्रदेश हाईकोर्ट के ताजातरीन फैसले पर आपकी क्या राय है?

अदालती फैसले पर तो मैं कोई टिप्पणी नहीं करूँगा। हाँ, यह जरूर कहूँगा कि इससे काँग्रेस पर कोई असर नहीं पड़ेगा। यह एक प्रकार का बुद्धिविलास है।

कोई अंतिम निर्णय तो है नहीं। ऊपर सुप्रीम कोर्ट है। फिर सबसे बड़ी तो जनता की अदालत है।

प्रदेश के मौजूदा प्रशासन से आप संतुष्ट हैं?

राष्ट्रपति शासन के दौरान संतुष्टि, असंतुष्टि का प्रश्न ही नहीं है। यह एक संक्रमण काल होता है। पुरानी और नई सरकार के बीच का। पिछली भाजपा सरकार ने जो विकृतियाँ पैदा कर दी थी विकास और राहत कार्यों की उपेक्षा की थी, अब उनमें सुधार हो रहा है।

आपके मत से मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव कब होना चाहिए?

चुनाव कब हो यह तो सरकार को तय करना है।

आपकी निजी राय क्या है?

मेरी निजी राय का कोई मतलब नहीं है। मैं तो पार्टी के निर्णय के साथ हूँ। हाँ, एक बात तय है कि प्रदेश में कांग्रेस की स्थिति बहुत अच्छी है। जब भी चुनाव होंगे सरकार हमारी होगी।

आज आप पार्टी के लिये इतनी बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हैं। फिर आपने कांग्रेस छोड़ी क्यों थी?

मैंने पार्टी छोड़ी नहीं थी, मुझे निष्कासित किया गया था।

फिर से आप कांग्रेस में क्यों आ गए?

जिन लोगों ने निकाला था, उन लोगों ने ही वापस ले लिया। मैं तो उन लोगों की चाल का शिकार हो गया था, जिनकी हरकतों के कारण मध्यप्रदेश में भाजपा का शासन आया।

वे कौन लोग हैं?

मैं किसी का नाम नहीं लूंगा।

क्या वी.पी.सिंह के लिये कह रहे हैं?

आप खुद ही अंदाजा लगाये, मैं किसी का नाम नहीं लूंगा।

सत्र - 1994-95

स्त्री शिक्षा गुरुकुल परिसर में संभव नहीं

-प्रो० शेरसिंह

एक समय था जब पूरे राष्ट्र में आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में एक नयी क्रांति ला दी थी और सामाजिक कुरीतियों का नाश करने का बिगुल बजाया था। आज आर्य समाज और उसके प्रभाव क्षेत्र को लेकर समय-समय पर उठते प्रश्नों पर आर्य समाज की सबसे बड़ी शिक्षण संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति तथा पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रो० शेरसिंह से ***विनय विद्यालंकार*** *की बातचीत के प्रमुख अंश :-*

आप आर्य समाज से किस प्रकार प्रभावित हुए?

सन् 1917-18 में मेरे पिताजी आर्य समाज से जुड़ गये थे इसलिए मुझे तो पितृ परंपरा से वैदिक विचारधारा मिली तथा आर्य समाज द्वारा किए गए स्वतत्रता के प्रयासों ने बचपन से ही प्रभावित किया।

आर्य समाजी शिक्षण संस्थाओं व अन्य संस्थाओं के स्तर को लेकर अब तक आपके क्या अनुभव रहे?

जब स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना की तो सभी त्यागी व्यक्ति इस समाज में आए। उनमें अपना सर्वस्व समाज सुधार के लिए समर्पित करने की भावना थी। स्वामी श्रद्धानंद ने अपनी सारी सम्पत्ति गुरुकुल कागड़ी की स्थापना में लगा दी। लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, प० गुरूदत्त विद्यार्थी जैसे लोगों ने अपना जीवन लगाकर राष्ट्रीय भावना को बढ़ावा दिया। जब अपने समय की तुलना आज के परिप्रेक्ष्य में करता हूँ तो पाता हूँ कि अब लोगों में त्याग और समर्पण की भावना घटी है। आर्य समाज में भी सम्पत्तियों के कारण विवाद बढ़ते गए और परिणाम यह हुआ कि हमारी शिक्षण संस्थाएं भी पतन की ओर चली गई।

आर्य समाज की दो प्रकार की शिक्षण संस्थाएं हैं-गुरुकुल व डी.ए.वी, इन दोनों के अंतर को स्पष्ट कीजिएगा।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानदजी तो प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा के परिपोषक थे इसलिए सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानंदजी ने जालंधर में गुरुकुल की स्थापना की तथा बाद में हरिद्वार में गुरुकुल काँगड़ी प्रारंभ किया। दूसरी ओर आधुनिक पद्धति से प्राचीन शिक्षा तथा आधुनिक विषयों की समन्वित शिक्षा के लिए पं. गुरुदत्त विद्यार्थी व महात्मा हंसराज आदि ने डी.ए.वी. स्कूलों की स्थापना की और अब तक की यात्रा पूरी करते-करते डी.ए.वी. कालेज मूल विचारधारा को भुलाकर

पूर्ण आधुनिक हो चुके हैं। स्वामी श्रद्धानंदजी के बाद गुरुकुलों की परंपरा चल गई। इसी क्रम में भारत के प्रत्येक राज्य में गुरुकुल खुले तथा प्राचीन परंपरा को निभा रहे है। हरियाणा जैसे छोटे राज्य में तो लगभग 10 कन्या गुरुकुल व 20-22 लड़कों के गुरुकुल है डी.ए.वी. स्कूलों की भी भरमार है। हम यह कह सकते है कि आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति की और स्त्री शिक्षा को महत्व दिया।

शिक्षा के अलावा कौन से मुख्य कार्य आर्यसमाज के मंच से चलाए गए?

आर्य समाज ने जीवन के किसी क्षेत्र को अछूता नहीं छोड़ा लेकिन मुख्य कार्यों में शिक्षा के अतिरिक्त, छुआ-छूत मिटाना, विधवा विवाह कराना, सती प्रथा को बंद कराना, नशाबंदी कराना, गौरक्षा आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किए। अब भी हम उन कुरीतियों से निरंतर लड़ रहे हैं। मुख्य रूप से शराबबंदी के लिए हमने पश्चिमी उत्तर-प्रदेश, हरियाणा तथा राजस्थान में अभियान छेड़ा हुआ है। यह आंदोलन हमने हरियाणा से 1984 में प्रारंभ किया था। अब वहाँ जनता में जागृति आयी है। 1992 में सरकार ने छह सौ शराब के ठेके नीलाम किए थे। लेकिन हमने 325 ठेकों को हटाने का प्रस्ताव वहाँ की जनता से कराए। परिणामस्वरूप सरकार को वे ठेके बंद करने पड़े। अब तो वहाँ की जनता ने पंचायतें करके यह निर्णय कर लिया है जो पहली बार शराब न पीने का नियम तोड़ेगा उससे सौ रुपये जुर्माना लिया जाएगा। जो दूसरी बार तोड़ेगा उससे 200 रुपये जुर्माना तथा तीसरी बार तोड़ने पर गाँव की महिलाए घाघरा पहनाकर उसे नचा देंगी।

केंद्रीय मंत्री रहते हुए आपने आर्यसमाज के सिद्धांतों को कहाँ तक प्रसारित करने का प्रयास किया?

मैं जब भारत सरकार में मंत्री रहा तो उस समय मेरे सामने मानव मात्र के लिए वे ही उपयोगी सिद्धांत रहते थे जो महर्षि दयानंद ने आर्यसमाज के माध्यम से दिये। जैसे - शिक्षा का क्षेत्र, ये तो स्वामी जी लिखते है कि शिक्षा का अधिकार सभी को समान है, चाहे वह किसी जाति या धर्म से हो। यह प्रयास मैंने भी किया कि सभी को समान शिक्षा मिल पाए। जब मैं योजना आयोग का सदस्य था तो मैंने शिक्षा के क्षेत्र में, विशेषकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कुछ सुझाव रखे थे। भारत सरकार छह हजार करोड़ की सब्सिडी उच्च शिक्षा को देती है यदि उच्च शिक्षा में मांटेसरी की तरह अधिक फीस ली जाए तो लाभ होंगें। इससे एक तो वही छात्र प्रवेश लेगा जो वास्तव में पढ़ना चाहता है, दूसरे लगभग 3000 करोड़ रुपया सरकार को प्राप्त हो जाएगा। अन्यथा स्थिति तो यह है कि उच्च शिक्षा मात्र उपाधियाँ प्राप्त करना रह गई है।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का जो प्राचीन परिसर गंगा तट पर है उसके विषय में आप क्या करने जा रहे हैं?

मैं विश्वविद्यालय की सीनेट में यह प्रस्ताव रख चुका हूँ कि वहाँ अब छोटी अवस्था के छात्र तो रह नहीं सकते इसलिए वहाँ आर्यसमाज का प्रचार करने के

लिए जीवन समर्पित करने वाले नवयुवकों का एक 'उपदेशक विद्यालय' खोल दिया जाए। इससे यह प्राचीन पुण्य भूमि पुन: स्वामी श्रद्धानंद जी के अधूरे कार्यों को पूर्ण करने में सफल हो पाएगी। हमने वहाँ गंगा के प्रवाह को रोकने के लिए पत्थरों के छोटे-छोटे बाँध बनवाकर भवन को कटने से बचाया है तथा यह प्रयास है कि वहाँ एक धारा पर बड़ा बाँध बनाया जाए इसके लिए हमने सरकार से सहायता माँगी है। प्रयास चल रहे हैं। फिलहाल यह भवन सुरक्षित करा दिया गया है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में स्त्री शिक्षा की वर्तमान स्थिति पर प्रबंध तंत्र क्या कदम उठा रहा है?

बड़ा आश्चर्य होता है कि आज वे लोग हम पर स्त्री शिक्षा विरोधी होने का आरोप लगा रहे है जिन्होंने स्त्री को पैर की जूती तक कहा। गुरुकुल परिसर में हम अपने सिद्धांतों के विरुद्ध स्त्री शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर सकते, देहरादून में हमारा अलग परिसर है। हरिद्वार में भी यदि स्थानीय जनता चाहती है कि स्त्रियों की उच्च शिक्षा हो तो वे हमें स्थान व भवन दें दें। हम पूरी तरह यू.जी.सी. से अध्यापन व्यवस्था करा देंगे। लेकिन परिसर के अदर यह कदापि संभव नहीं है।

सत्र - 1992-93 □

भाजपा को कोसना फैशन है

-सुंदरलाल पटवा

*मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा कहते हैं कि भाजपा को कोसना फैशन बन गया है। कांग्रेस सरकार को हर कहीं भाजपा का हाथ नजर आता है, मगर वह उसे कहीं साबित नहीं कर पाती। धारा 356 को कांग्रेस विरोधी दलों के खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रही है। भाजपा को दंगों का जिम्मेदार ठहराए जाने को पटवा साजिश मानते हैं। वर्तमान राजनीतिक स्थिति, अयोध्या कांड के बाद हुए दंगे और भाजपा के भविष्य के बारे में उनसे **प्रदीप अग्रवाल** की एक बातचीत :-*

भाजपा सरकारों की बर्खास्तगी को आप किस आधार पर अनुचित मानते हैं?

हमारे उचित-अनुचित मानने की बात छोड़िए अब तो स्वय न्यायालय ने ही इस बर्खास्तगी को अनुचित ठहरा दिया है। हाईकोर्ट ने राष्ट्रपति की अधिसूचना को रद्द करके पूर्व स्थिति बहाल करने का आदेश दिया गया है। हाईकोर्ट ने अपने फैसले में लिखा है कि धारा 356 को लागू करने के लिये जो आधार चाहिए वे इस धारा को लागू करते समय मौजूद नहीं थे। इस निर्णय से बर्खास्तगी अनुचित मानने का हमारा दावा स्वत: सिद्ध हो गया है।

पिछले दिनों कुछ अखबारों में यह खबर छपी थी कि हाईकोर्ट की जिस बैंच ने आपकी याचिका पर निर्णय लिया उसमें शामिल एक जज का पुत्र बिहार के एक लोकसभा क्षेत्र से चुनाव हार चुका है...

यह आरोप उज्जैन के राजेंद्र जैन ने लगाया था, जो कांग्रेस के नेता है, उनके खिलाफ उच्च न्यायालय ने अवमानना का नोटिस जारी किया है। इस निर्णय में एक नहीं, तीन जज थे। पहले तो दिल्ली में केवल यही प्रतिक्रिया थी कि कहीं ये जज भाजपा के शासन काल में तो नियुक्त नहीं हुए है? इन जजों में एक जज तो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के परिवार का है और पूरी तरह से कांग्रेस के प्रति आस्थावान है। पर जजों के बारे में यह आरोप लगाना गलत है। हमारे पक्ष में फैसला किया तो जज अच्छे है यदि फैसला विपरीत होता तो जज बेईमान थे, यह कहना तो निंदनीय है। जिसने यह आरोप लगाया है, यह उसका सरासर पागलपन है।

मध्यप्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश सरकारों की बर्खास्तगी धारा 356 के अंतर्गत की गई। इसके बाद आपने धारा 356 का जम कर विरोध

किया लेकिन 1989 में बर्खास्त की गई जम्मू-कश्मीर की सरकार के विषय में आप धारा 356 के समर्थक रहे ऐसा क्यों?

देखिए, कश्मीर की स्थिति आज भी ऐसी है कि वह बस सेना के बल पर ही भारत का अंग है। कांग्रेस के बार-बार धारा 356 का प्रयोग करने, सरकारें हटाने, फारूख अब्दुल्ला को कुर्सी पर बैठाना फिर देशद्रोही कह कर उसे हटाना, इन्हीं कारणों से काश्मीर के हालात खराब हुए हैं। भाजपा ने हालात के अनुसार कदम उठाए है और यदि भाजपा ने उस समय कह दिया कि धारा 356 वैध है तो इसका मतलब यह नहीं है कि भाजपा ने धारा 356 लागू करने का लाइसेंस दे दिया है।

सुना है आप पत्रकारों से मधुर संबंध रखने के खिलाफ हैं?

किसने कह दिया? मैंने तो ऐसा नहीं कहा, मैं तो सदैव पत्रकारों से अच्छे संबंध रखने का हिमायती हूँ। यह बात सही है कि मैं उन पत्रकारों को पसंद नहीं करता जो चाटुकारिता या खुशामद करें। पत्रकारों को चाहिए कि वे सही बात लिखें, चाहे कोई भी सरकार क्यों न हो।

अयोध्या कांड के बाद भड़के दंगों के विषय में आप क्या कहना चाहेंगे?

दंगे हुए नहीं, कराए गए है। यह उन लोगों ने कराए है जो राष्ट्रविरोधी हैं। मध्यप्रदेश में 500 छोटे-बड़े शहर है, उनमें से मात्र दो शहरों भोपाल और उज्जैन में दो दिन का कर्फ्यू रहा। परतु 498 शहरों में तो कहीं भी कुछ नहीं हुआ। इसके लिये भाजपा सरकार को क्रेडिट दिया जाना चाहिये। हमारे प्रदेश से ज्यादा दंगे तो महाराष्ट्र, कर्नाटक, आसाम और गुजरात में हुए हैं। पूरे हिमाचल में तो धारा 144 तक भी नहीं लगी है। उसके बाद भी सरकार को बर्खास्त करना यह तो सरासर अधिकारों का दुरुपयोग है। इन दंगों के दोषी भाजपा के विरोधी है, जो भाजपा सरकार को बर्खास्त कराना चाहते थे। यदि हम सरकार में रहते तो उन दंगाइयों को सामने भी ले आते।

राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाई जाने की स्थिति में क्या भाजपा की लोकप्रियता में कमी होगी?

नहीं, हम चारों राज्यों के साथ-साथ नये प्रदेशों में भी जीतेंगे। दिल्ली में भी हमारी सरकार बनेगी। लोकसभा की अवधि भी बहुत लंबी नहीं है। कांग्रेस अपने अन्तर्विरोधों से जूझ रही है। ज्यों-ज्यों भाजपा को दबाने की कोशिश की जायेगी त्यों-त्यों वह और अधिक शक्तिशाली होकर उभरेगी। कैसी विडंबना है कि जम्मू कश्मीर में चुनाव के लिये केंद्र सरकार प्रयास कर रही है, किंतु उ.प्र. हिमाचल, राजस्थान और मध्यप्रदेश में यह कह कर चुनाव टाल रही है कि हालात ठीक नहीं है। लगता है जिस दिन केंद्र सरकार को कोई इन प्रदेशों में जीतने की लिखित गारंटी देगा तभी हालात ठीक होंगे, यह लोकतंत्र के साथ बलात्कार है। कांग्रेस की मनमानी अब ज्यादा समय नहीं चलेगी।

आपकी दृष्टि में शिवसेना पर प्रतिबन्ध की माँग करना और मुस्लिम लीग को छोड़ देना कहाँ तक उचित है?

राजनैतिक दलों पर प्रतिबंध लगाना गलत है। यदि कोई गलत कार्य करता है तो उसे रोकने का उपाय किया जाना चाहिये। राजनीतिक लड़ाई राजनीति की तरह लड़ी जानी चाहिए अर्थात् विचार को विचार से ही हराया जा सकता है न कि लाठी और कानून से। प्रतिबंध का अर्थ तो यह है कि कांग्रेस ने वैचारिक और लोकतांत्रिक सत्ता पर अपनी हार मान ली है। भाजपा की रैलियों पर प्रतिबंध लगाना तो कांग्रेस की कमजोरियों का प्रतीक है।

बंबई में हुए दंगों के पीछे भाजपा का हाथ बताया जा रहा है, इस बारे में आपका क्या विचार है?

भाजपा दंगे करा लेती है और आप भाजपा की एक चिड़िया भी पकड़ कर उसे कटघरे में नहीं खड़ा कर सकते। अगर भाजपा इतने बड़े पैमाने पर दंगे करा लेती है और आप उस पर उंगली भी नहीं लगा सकते है तो कैसी सरकार है भाई? क्या यह देश को बचा पाएगी? इसे तो कल ही बर्खास्त हो जाना चाहिये। अब ऐसा है कि हमारे मित्र हैं शिवराज सिंह चौहान, वह भाषण में कहते हैं कि कांग्रेस को हर जगह भाजपा या संघ का हाथ नजर आता है, यदि कांग्रेसी नेता के यहाँ जुड़वा बच्चों ने जन्म लिया है तो कहते हैं कि इसमें भी भाजपा का हाथ है। भाजपा को हर बात के लिये कोसना एक फैशन बन गया है।

पत्रकारों की राजनैतिक प्रतिबद्धता को आप कहाँ तक उचित या अनुचित मानते हैं?

देखिए, हम लोकतंत्र में रहते है हम सब इस राजनीति के अंग हैं। और इसलिये हमारा राजनीतिक रुझान किसी भी पार्टी या विचार के प्रति होना स्वाभाविक है। इसमें कोई बुराई नहीं है। परंतु पत्रकारिता के क्षेत्र में हमारे विचार हमारे उत्तरदायित्व पर हावी नहीं होने चाहिए। हम न्यूज को अपने अनुसार लिख सकते हैं। किन्तु न्यूज में अपने आप तरोड़-मरोड़ कराना गलत है। पत्रकार को समाचारों से पूरी न्यायप्रियता बरतनी चाहिए। हमारा पत्रकार जगत् बहुत शक्तिशाली व स्वतंत्र है, उस अपनी ताकत और स्वतंत्रता को बनाए भी रखना चाहिए।

सत्र - 1992-93 □

घर घर पहुँचाया गुलशन कुमार ने

-अनुराधा पौडवाल

फिल्मी संगीत के क्षेत्र में नूरजहां, शमशाद बेगम, सुरैया के बाद कई वर्षों से चले आ रहे मंगेशकर बहनों के एकाधिकार को चुनौती देने वाली गायिकाओं में एक नाम है 'अनुराधा पौडवाल'। अनुराधा का समस्त परिवार संगीत को समर्पित है। वे अभी तक पर्दे के पीछे से गाती थी, परन्तु अब वे भजनों को प्रमुख तीर्थस्थलों पर स्वयं जाकर कैमरे के सामने भजन गाती हैं। टी-सीरीज की विडिओ कैसेट 'गंगा लहरी' के भजनों की शूटिंग के सिलसिले में जब वे हरिद्वार आई थीं। तो एक छोटी सी मुलाकात में अनुराधा पौडवाल ने ***संजीव गौतम*** *को बताया:-*

अनुराधा जी, आपने गायन के क्षेत्र में कब और किस फिल्म में कदम रखा? आपने यह क्षेत्र क्यों चुना?

मैंने 1973 में गायन के क्षेत्र में कदम रखा। मेरी पहली फिल्म 'अरमान' थी। बचपन से ही गायन में रुचि होने के कारण मैंने यह लाइन पसंद की।

आपको फिल्मी गायन, शास्त्रीय गायन या भक्तिपूर्ण गायन में से कौन अच्छा लगता है?

मुझे सभी तरह के गायन के लिए गाना अच्छा लगता है। जरूरी यह है कि उन गानों के बोल अच्छे होने चाहिए और शब्दों के अर्थ अच्छे निकलने चाहिए।

आजकल आप पर्दे पर आकर भी गा रही हैं तो आपको गाना अच्छा लगता है या अभिनय करना?

मेरा पर्दे पर आना अभिनय नहीं है बल्कि धार्मिक स्थलों पर भजन गाकर उन लोगों को इन स्थलों से जोड़ना है जो धार्मिक स्थलों तक नहीं जा पाते। मैं किसी कहानी के लिए गाते हुए कैमरे के सामने नहीं जाती हूँ। इसलिए यह अभिनय नहीं कहलाएगा।

आपको अब तक कितने पुरस्कार मिल चुके हैं?

मुझे तो याद नहीं है कि कितने पुरस्कार मिले हैं। लेकिन सबसे बडा पुरस्कार ईश्वर का आशीर्वाद और जनता का प्यार सदैव मेरे साथ रहता है। मुझे पुरस्कार के रूप में जनता का प्यार अच्छा लगता है।

आप अपनी सफलता का श्रेय किसे देना चाहेंगी?

सबसे पहले मै अपनी सफलता को श्रेय भगवान को देना चाहूंगी जिनके आशीर्वाद से मै आज यहाँ तक पहुँची हूँ। मेरे माता-पिता, पति, सास-ससुर सभी का मेरे प्रति सहयोगात्मक रवैया रहा है। अब जो मेरे भजन, मेरे गीत घर-घर में पहुँच रहे है और लोकप्रिय हो रहे है, जिस कारण जनता मुझे प्यार करती है, उसका श्रेय मै गुलशन कुमार जी को देना चाहूँगी। उन्होंने कम से कम कीमत में जनता तक उत्तम क्वालिटी की कैसेटों के माध्यम से भजनों और गीतों को पहुँचाने का प्रयास किया है। इनकी यह पॉलिसी मुझे अच्छी लगती है।

सत्र - 1991-92 □

मूर्तिशिल्प यथार्थ के अधिक नज़दीक है

-मुकुंद केतकर

*घर की दीवारों पर चित्र बनाने की शुरुआत से मूर्तिशिल्प में राज्य पुरस्कारों के मुकाम तक पहुंचे युवा शिल्पकार मुकुंद केतकर का जीवन शिल्प का पर्याय बन चुका है। उनके कथ्य, प्रतीक और माध्यम बेहद सहज हैं। उनके शिल्प में सत्य, शिव और सुंदर की त्रिवेणी का अद्‌भुत संगम है। कहीं बाँसुरी बजाता तन्हा वृद्ध तो कहीं किलकारी मारता शिशु या फिर अधलेटी नारी तो कहीं नीली आंखों वाला सिर, इन सबके बीच में तन्मयता से साधनारत युवा मूर्तिकार मुकुंद को देखना अपने आप में भरा पूरा अनुभव है, रचना के सृजन का अनुभव है। ग्वालियर में उनकी दो दिवसीय प्रदर्शनी के दौरान उनके शिल्प को लेकर **शिवप्रकाश वर्मा** की बातचीत :-*

आपकी कला यात्रा कब से प्रारंभ हुई?

बचपन से ही मुझे चित्रकारी पसंद थी। चॉक से बनी मेरी आकृतियों से घर की दीवारें भरी रहती थी। इनके कारण मुझे काफी प्रशंसा भी मिली और घर गंदा करने के कारण मां की डांट भी मिली। इसी शौक के कारण हाईस्कूल में फाइन आर्ट विषय चुना और आई.जी.डी. का डिप्लोमा उज्जैन से प्राप्त कर फाइन आर्ट कालेज में प्रवेश ले लिया। बचपन में माँ के बनाए गणेश, गुड़िया और मराठी किले मेरे प्रेरणा स्रोत रहे। हालाँकि किशोर वय में मुझे काफी हतोत्साहित किया गया परंतु मेरी लगन और निष्ठा को देखकर सबने धीरे-धीरे साथ देना शुरू कर दिया और अंततोगत्वा मूर्तिशिल्प ही मेरी जीविका और आत्मसतुष्टि का साधन बना। मैंने प्रकृति से बहुत कुछ सीखा और विनायक अनंत आप्टे ने मुझे तराशा और स्पंदित किया।

मूर्तिशिल्प को आजीविका के तौर पर अपनाने में क्या कठिनाई आई?

प्रारंभ में काफी संघर्ष के दिन थे। काफी पैसा मुझे कार्यशाला स्थापित करने में लगाना पड़ा, कई बार फाकाकशी के दौर से भी गुजरना पड़ा। वे दिन शिल्प जगत में मेरे अस्तित्व के स्थापित होने के दिन थे। बाद में एयर फोर्स में कला अध्यापक के रूप में नौकरी मिली तो कुछ बदलाव आया और अब मुझे लगातार काम मिल रहा है।

आपको मूर्तिशिल्प ही क्यों पसंद है।

इसमें काम करने की असीम संभावना है। विस्तृत क्षितिज और फलक है। अन्य कलाओं की अपेक्षा यह कालजयी भी हो सकती है। इसका उदाहरण अशोक

का लौह स्तंभ है। इस कला के तीन आयाम है इस कारण यह यथार्थ के नजदीक है। यह हर कोण से अलग और प्रभावी हो सकती है।

क्या आपका कोई शृंखलाबद्ध कार्य भी है?

हां, मुझे फतेहगढ़ सैनिक छावनी में 'युद्ध स्मृति शृंखला' का कार्य मिला, जिसमें खच्चरों पर सामान ले जाते सैनिकों की मानवाकृतियाँ बनानी थी। उसे मैंने प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनाया था।

मूर्ति गढ़ने में आप किस आधार माध्यम पर ज्यादा काम करते हैं और अब तक आपकी प्रदर्शनियाँ कहाँ-कहाँ हो चुकी हैं?

लगभग सभी पर जैसे क्ले, टेराकोटा, स्टोन एवं मैटल इत्यादि। मैटल कास्टिंग में ब्रास मुझे सबसे अधिक पसंद है। मैं भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और दिल्ली में कई प्रदर्शनियों कर चुका हूं।

आपको शिल्प जगत में किसने प्रभावित किया?

भारतीय वास्तुशिल्पियों में डी.पी.रॉयचौधरी, शांखो रायचौधरी तथा विदेशी वास्तुशिल्पियों में माइकल एंजिलो मेरे प्रिय रहे हैं।

जीवन के किस पक्ष पर आपका काम ज्यादा है?

समाज के बेसहारा तथा उपेक्षित वर्ग मेरे काम का अहम् हिस्सा रहे है, क्योंकि उनमें असली जीवन है। वे संघर्ष करते हुये जीवन के प्रत्येक क्षण को जीते हैं।

आपके शिल्प में भारतीय मूर्तिकला शैली की कमी अखरती है?

शुरुआत में भारतीय मूर्तिकला के बारे में कोई गुरू नहीं मिला जो सही प्रायोगिक जानकारी दे पाता। पाश्चात्य कला में ज्यादा लय है, ताल है इसी कारण उसने मुझे ज्यादा प्रभावित किया। भारतीय कला में एकाकीपन ज्यादा है। मै यथार्थवादी हूँ। जीवन की ठोस हकीकत मुझे अच्छी लगती है। मैंने हजारों कलाकृतिया बनाई है जिनमें बड़ी से बडी आदमकद तथा छोटी से छोटी आधा इच की है।

भविष्य में आप किन व्यक्तियों की मूर्ति बनाना चाहेंगे?

टैगोर, शकरदयाल शर्मा, अमिताभ और सीमात गांधी की मूर्तियाँ बनाना चाहूँगा। वैसे मैं अपने शिल्प को आम आदमी तक पहुँचाना चाहता हूँ। इस दृष्टि से ग्वालियर से बाहर जाकर भी काम करना चाहता हूँ।

आप क्या भारतीय मिथकों पर भी काम कर रहे हैं?

मैंने नटराज और हनुमान को अधिक प्रभावी दृष्टि से देखा है। हनुमान के लंका दहन पर उनके चेहरे पर आए परिवर्तन पर काम कर रहा हूँ, यह एक सर्वथा अभिनव प्रयोग होगा।

सत्र - 1993-94

क्रिकेट में उतार-चढ़ाव सामान्य बात है

-नरेन्द्र हिरवानी

अपने पहले ही क्रिकेट टेस्ट मैच में विश्व रिकार्ड बनाने वाले नरेन्द्र हिरवानी आजकल भारतीय टीम से बाहर हैं। उन्हें उम्मीद है कि शीघ्र ही भारतीय टीम में कई बदलाव होंगे और टेस्ट टीम में उनका स्थान पक्का है। हिरवानी का मानना है कि उत्तर प्रदेश में खेलने और सीखने का माहौल नहीं है। प्रस्तुत है उनसे **शरद गोयल** *की बातचीत :-*

अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में कुछ बताइए?

मैं उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में पैदा हुआ। गोरखपुर में मेरे पिताजी के ईंट के भट्टे है। मेरे दो बड़े भाई है जो पिता के साथ ईंट व्यवसाय में लगे हुए है। प्रारंभिक शिक्षा गोरखपुर में ही हुई। उसके बाद क्रिकेट प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु इंदौर आ गया। तब से मैं यहीं पर हूँ।

क्रिकेट के प्रति आपकी रुचि कैसे हुई।

बचपन में मैं घर के पास अपने साथियों के साथ क्रिकेट खेलता था। इसी बीच अधिक से अधिक समय पढ़ने के स्थान पर क्रिकेट खेलने में देने लगा। स्कूल न जाकर क्रिकेट खेलने की बात जब घर पर पता चला तो मेरी खूब पिटाई हुई। परंतु मैं तो क्रिकेट के पीछे पागल हो गया था। अंतत: मेरी रुचि को ध्यान में रखकर परिवारजनों ने मुझे इसी क्षेत्र में आगे बढ़ाने के प्रयास किए।

उत्तर प्रदेश में पैदा होने के बाद भी आपने रणजी ट्राफी मध्य प्रदेश में खेली, ऐसा क्यों?

प्रारंभ से ही उत्तर-प्रदेश को भारतीय टीम में उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिला। दूसरे वहाँ चयन प्रक्रिया इतनी जटिल है कि बहुत सारा समय अनावश्यक खराब हो जाता है। फिर मूलभूत सुविधाएँ ही प्राप्त नहीं है तो आप बेहतर प्रशिक्षण प्राप्त करने की कैसे सोच सकते है। ऐसा नहीं कि उत्तर प्रदेश में प्रतिभाओं की कमी है लेकिन खेलने और सीखने का माहौल गायब है।

क्रिकेट जीवन में अपनी शानदार उपलब्धि किसे मानते हैं?

क्रिकेट जीवन में उतार-चढ़ाव तो निरंतर आते रहते है। मेरी शानदार उपलब्धि यही है कि जब मैंने अपने पहले ही टेस्ट मैच में आस्ट्रेलिया के बॉब मोर्श का रिकार्ड तोड़कर नया रिकार्ड बनाया और मद्रास में 1988 में वेस्टइंडीज के विश्व एक पारी में 61 रन देकर 8 विकेट लिए। तथा पूरी पारी में 10 खिलाड़ियों को आउट किया।

अपने पहले टेस्ट मैच के बाद आपने ऐसा कोई प्रदर्शन नहीं किया जिससे आपका स्थान टीम में स्थायी हो सके?

किसी भी खिलाड़ी को आप ऐसा नहीं कह सकते कि उसका स्थान सदैव टीम में होगा। ऐसा कोई भी खिलाड़ी नहीं है, जिसने सदैव अपने पहले मैचों से अच्छा प्रदर्शन किया हो। प्रदर्शन में उतार-चढ़ाव सामान्य बात है।

लंबे समय से टीम में न होने से आप किस प्रकार क्रिकेट से जुड़े हुए हैं?

देखिए, पहले तो यह कि मैं टीम से बाहर हो गया हूँ, बिल्कुल गलत है। मैं एक दिवसीय मैचों का खिलाड़ी न होकर टेस्ट खिलाड़ी हूँ और लंबे अर्से से भारत ने कोई टेस्ट भी नहीं खेला। एक दिवसीय मैच में बॉलिंग के साथ अच्छी बल्लेबाजी भी जरूरी है। मेरी अच्छी बॉलिंग को मेरी हल्की बैटिंग ने अक्सर नजरअंदाज कराया है। वैसे आजकल मैं प्रतिदिन 20 घंटे क्रिकेट का अभ्यास करता हूँ और बैटिंग सुधारने के प्रयास में लगा हूँ।

भारतीय टीम इंग्लैंड दौरे पर जाने वाली है, तब आपको अपने चयन के बारे में क्या लगता है?

मैं निश्चित रूप से टीम में स्थान पाऊँगा। स्पिनर भारतीय टीम में गेंदबाजी की रीढ़ रहे हैं। पूर्व प्रदर्शन एवं फिलहाल फार्म में होने से मुझे पूरा विश्वास है कि मैं टीम में खेलूँगा। वैसे भी भारतीय क्रिकेट टीम में शीघ्र ही बहुत बड़ा परिवर्तन निश्चित है। कम से कम चार-पाँच परिवर्तन तो होने ही चाहिए।

विश्व कप सेमी फाइनल में भारतीय टीम के हारने के बाद दर्शकों ने जो असंयमित व्यवहार किया, इस बारे में आप क्या सोचते हैं?

भारतीय दर्शकों का ऐसा करना बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है। यह खेल भावना के बिल्कुल विपरीत है। भारतीय टीम दर्शकों की आशा को पूरा नहीं कर सकी तो दर्शक असंयमित हो गए, जो उन्हें नहीं होना चाहिए था। मैं प्रेस की भूमिका की प्रशंसा करूँगा जिन्होंने दर्शकों के व्यवहार को धिक्कारा।

प्रसिद्धि पाने के बाद आपको कैसा लगता है?

खुशी भी होती है और दुख भी। खुशी इस बात की मुझे लोग मान-सम्मान देते है। दुःख इस बात का कि प्रसिद्धि ने मेरी व्यक्तिगत जिंदगी समाप्त कर दी। अब मैं सार्वजनिक स्थान पर जाने से भी डरता हूं कि कहीं अगर पहचान लिया गया तो प्रशंसक......।

□

सत्र - 1995-96

व्यावसायिकता एक सीमा से आगे बुरी है

-सैयद मुश्ताक अली

इंदौर निवासी मुश्ताक अली को भारतीय क्रिकेट का इतिहास पुरुष माना जाता है। उन्होंने कई बेहतरीन पारियाँ खेलीं और अनेक कीर्तिमान स्थापित किए। वे अपने जीवन काल में ही क्रिकेट जगत की किंवदन्ती बन गये हैं। उनका क्रिकेट पराक्रम सँजोए रखने के लिए एन.आई.एस. पटियाला के खेल म्यूज़ियम में उनके बल्ले, कपड़े, जूते, हैट आदि सुरक्षित रख लिए गए हैं।

मुश्ताक अली ने उन्नीस वर्ष की आयु में भारत एकादश में शामिल होने का गौरव प्राप्त किया। टीम में इन्हें बायें हाथ के धीमे गेंदबाज के रूप में प्रवेश मिला था। परन्तु मुश्ताक अली के अथक लगन व दृढ़ इच्छा शक्ति की बदौलत कुछ समय उपरान्त ही दायें हाथ के धुआंधार सलामी बल्लेबाज के रूप में मैदान में उतरना शुरू कर दिया। क्रिकेट के आंकड़े इनकी कहानी खुद बयान करते हैं। इक्यासी साल उम्र की पारी खेल चुके इस शख़्स का लंबा चौड़ा डील-डौल, सांवले चमकदार चेहरे पर तेजतर्रार आंखें और सिर पर चाँदी से सफेद बाल एक अलग ही व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। सहजता और तत्परता उनके अब भी बरकरार है। दंभ और घमंड का तो नाम ही नहीं। प्रस्तुत है उनसे ***राजेश शुक्ल*** *की एक बातचीत:-*

आपका जन्म कब और कहाँ हुआ था और आपके नाम के साथ कैप्टन क्यों जुड़ा है?

मेरा जन्म 17 दिसम्बर 1914 को इंदौर में हुआ। मै होल्कर राज्य की सेना में था। वहाँ के शासक ने मुझे अपना ए.डी.सी. भी बना लिया था।

क्रिकेट खेलने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?

क्रिकेट मेरे खून में था। जब ऊपर वाला पैदा करता है तो उसी वक्त व्यक्ति का सहारा बना देता है। लता को गला दिया तो दिलीप कुमार को अदाकारी। लोगों ने मुझे तब पहचाना जब मैंने 1932-33 की सर्दियों में दिल्ली में श्रीलंका की टीम के विरुद्ध प्रथम श्रेणी मैच में 129 रन देकर 10 विकेट लिए थे। टेस्ट मैच खेलने का सौभाग्य मुझे इंग्लैंड के खिलाफ 1933-34 में मिला।

पहली बार देश के लिए खेलते हुए कैसा महसूस किया था?

उन दिनों भी इंडिया के लिए खेलना गर्व की बात थी और मुझे भी बेहद खुशी हुई थी, हालांकि देश गुलाम था।

किन-किन देशों के विरुद्ध आप खेले?

मैंने श्रीलंका, ईस्ट अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया, वेस्ट इंडीज व पाकिस्तान के खिलाफ खेला था। मुझे इंग्लैंड में खेलना सबसे अच्छा लगा क्योंकि वहाँ अनुशासन बहुत था। मेरे शतक बनाने पर लोगों ने खड़े होकर तालियाँ बजाई और मुझे सम्मानित किया।

क्रिकेट के अलावा क्या आपने किसी अन्य खेल में भी हिस्सा लिया है?

हाँ। मैंने भोपाल में खेले जाने वाले राष्ट्रीय स्तर के ओबेदुल्ला खाँ स्वर्ण कप हाकी में हिस्सा लिया है।

अपने खेल जीवन के महत्वपूर्ण क्षण किन्हें मानते है?

क्रिकेट के क्षेत्र में मेरे योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने 1964 में मुझे पद्मश्री से सम्मानित किया। डॉ. राधाकृष्णन ने यह सम्मान मुझे दिया। वह एक अविस्मरणीय क्षण था। इससे पहले 1936 में मैनचेस्टर, के ओल्ड ट्रेफोर्ड में मैंने शतकीय पारी खेली तो मुझे इंग्लैंड के खिलाफ उसकी धरती पर शतक बनाने वाला पहला भारतीय होने का गौरव प्राप्त हुआ। यह कभी न टूटने वाला रिकार्ड है जिसका मुझे गर्व है। हाल में नवंबर 1995 में क्रिकेट बोर्ड ने मुझे कर्नल सी.के. नायडू पुरस्कार से भी नवाज़ा। यह पुरस्कार पहले लाला अमरनाथ को भी मिल चुका है

आपके परिवार में आपके अलावा किसी और की क्रिकेट में रुचि है?

मेरे पुत्र गुलरेज अली ने रणजी ट्राफी खेली है। अब पौत्र अब्बास अली खेल में रुचि ले रहे है। वह विल्स कप में खेल चुके है और इंग्लैंड भी जा चुके है।

क्या आपने क्रिकेट खेलने के लिए किसी से प्रशिक्षण लिया था और क्या वर्तमान क्रिकेट खिलाड़ियों में से किसी को आपने प्रशिक्षण दिया है?

मैंने कर्नल सी.के. नायडू से प्रशिक्षण लिया था और श्रीकांत, अजहरूद्दीन और हनुमंत राव आदि को प्रशिक्षण दिया है।

अपने समय का सबसे अच्छा कप्तान किसे मानते है?

कर्नल सी.के. नायडू को सबसे अच्छा कप्तान मानता हूँ। समकालीन खिलाड़ियों में चन्दू सर्वटे, सी.एस. नायडू आदि बेहतरीन' खिलाड़ी है।

आपको देश के किन मैदानों पर खेलना अच्छा लगा?

ईडन गार्डन कलकत्ता, फिरोजशाह कोटला दिल्ली, सी.सी.आई. बम्बई आदि।

आपने बतौर कमेंटेटर कार्य किया है?

जी नहीं। मैं खुद को इस योग्य नहीं पाता। मेरी पढ़ाई केवल मैट्रिक तक ही है। जबकि एक अच्छे कमेंटेटर के लिए भाषा का संपूर्ण ज्ञान होना तथा शिक्षा का होना जरूरी है।

आपके समय क्रिकेट खिलाड़ियों को कितना पारिश्रमिक मिलता था?

हमारे समय में एक टेस्ट मैच के कुल डेढ़-दो सौ रुपये तक मिलते थे। जबकि आज पन्द्रह-बीस हजार रुपये मिल रहे हैं। एक हद तक यह ठीक भी है। इससे खेल अच्छा होगा। हालाँकि एक सीमा के आगे व्यवसायिकता अच्छाई से बुराई की तरफ ले जाती है।

भारत एकादश में चयन प्रक्रिया पर आपकी क्या टिप्पणी है?

वर्तमान चयन प्रणाली में पाँच जोन (क्षेत्र) से पाँच चयनकर्ता होते है। सेलेक्शन जोनल आधार पर होता है। यह ठीक नहीं है क्योंकि कई बार अच्छे चयनकर्ता छूट जाते है। चयन अच्छे और योग्य लोगों का हो। यह जरूरी नहीं कि वे सभी जोन से लिए जाए। एक खिलाड़ी को कम से कम चार टेस्ट मैचों में चांस दिया जाना चाहिए। मेरे समय में अंग्रेज चयनकर्ता रहते थे। रणजी ट्राफी के आधार पर टेस्ट क्रिकेट में चयन होता था। मैंने स्वयं शुरू के चार-पाँच टेस्टों में केवल एक विकेट लिया था किंतु मेरी क्षमता को देखकर मुझे चांस देते रहे।

क्रिकेट बोर्ड की भूमिका के विषय में कुछ कहेंगे?

आज बोर्ड और एसोसिएशन तेंदुलकर और अजहर जैसे खिलाड़ियों की वजह से अमीर हो गये हैं। परन्तु ठीक से काम नहीं कर रहे हैं। कहीं पर दो करोड़ रुपये की कृत्रिम प्रकाश-व्यवस्था कर दी परंतु यह नहीं सोचा कि क्या इन्हें हमेशा मैच मिलते रहेंगे। क्रिकेट में सट्टा लगाया जा रहा है, टिकट ब्लैक में बिकते है। और एसोसिएशन पदाधिकारी पैसा कमाने में लगे हुए हैं।

टेस्ट मैच और एक दिवसीय के बारे में कुछ बताएं?

एक दिवसीय क्रिकेट तमाशा बन चुकी है, परंतु लोकप्रिय है, क्योंकि नतीजे जल्दी आ जाते हैं। जबकि टेस्ट मैच में पांच दिनों के बाद भी अक्सर रिजल्ट नहीं आते। आज फटाफट क्रिकेट, सफेद बाल, रंगीन कपड़े, कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था में लिपस्टिक और चश्में लगाकर मैच खेले जा रहे है। बिना नेल्स के जूते पहनकर खेलते है, फिसलकर गिरते है और बेवजह आउट हो जाते है। पहले सफेद पतलून व शर्ट, ब्लू ब्लेजर आदि चलते थे। क्रिकेट में एक गौरव था। आज वह समाप्त हो गया है। एक दिवसीय रात दिन मैच होने तो चाहिए सफेद बॉल से भी खेला जाना चाहिए पर कपड़े ठीक पहनना चाहिए ताकि क्रिकेट का गौरव कायम रहे।

वर्तमान क्रिकेट खिलाड़ियों के व्यवहार को आप कैसा पाते है?

गावस्कर, कपिलदेव 'सर' बोलते हैं पर नए लोग तो सलाम करना भी पसंद नहीं करते। उनकी नजर में शायद हम फटीचर क्रिकेटर हो गये है। भगवान की कृपा से आज खिलाड़ियों के पास पैसा हैं, उन्हें चाहिए कि एक ट्रस्ट बनाकर गरीब और

होनहार बच्चों को अच्छी जगह पर रखकर ट्रेनिंग की व्यवस्था करें। पैसे के साथ दिमाग नहीं खराब होना चाहिए, साधारण रहना चाहिए, अच्छा खेलने का प्रयास करना चाहिए।

प्रेस की भूमिका में आप क्या परिवर्तन देखते है?

पहले प्रेस वाले क्रिकेट का खेल समझते थे, अब नए लोगों को ज्यादा जानकारी एक दूसरे से पूछ कर लिख लेते है । कई तो ऐसे है जो गुगली बॉल के बारे में भी नहीं बता पाते है। पत्रकारों को चाहिए कि वे अपने देश के प्रति ईमानदार रहें। पूरी जानकारी हासिल करें और आगे बढ़ने के लिए पत्रकारिता का ही कोई एक क्षेत्र चुनें।

अपने जीवन का अंतिम टेस्ट मैच कब और किसके विरुद्ध खेला था?

1952 में इंग्लैंड के विरुद्ध।

आप आजकल अपना समय कैसे व्यतीत करते है?

शाम को घूमता हूँ लोगों से बातचीत करता हूँ। प्रशंसकों और मित्रों के पत्र आते है। फैमिली बड़ी है इंज्वाय करता हूं।

सत्र - 1995-96

सर्वोपरि होता है अंपायर का निर्णय

-रामबाबू गुप्ता

*58 वर्षीय रामबाबू गुप्ता हमारे देश के शीर्षस्थ अंपायरों में से एक हैं। वे भारत की ओर से प्रमुख शृंखलाओं व मैचों में अंपायरिंग कर चुके हैं। यहां प्रस्तुत है अंपायरिंग के विभिन्न पहलुओं पर उनसे **संजय वर्मा** द्वारा लिया गया एक साक्षात्कार। इसे पढ़कर आप स्वयं अंदाजा लगाइए कि उन्होंने इस मैदान पर छक्के जड़े, क्लीन बोल्ड हुए या संदेह का लाभ लेकर छूट गए।*

अंपायरिंग में आपका रुझान कैसे हुआ?

अंपायरिंग में जो हमारा रुझान है, वह काफी शुरू में ही पैदा हो गया था। युवावस्था में जब मैं कालेज में गया था तो हमारे दोस्त स्वर्गीय स्वरूप किशन जी जो हमारे बड़े भाई के समान थे, हमसे कहा करते थे कि, 'लाला, अंपायरिंग भी किया करो। थोड़ी सी इसमें भी रुचि लिया करो। तुम खेलते तो हो ही लेकिन कभी-कभी अंपायरिंग भी करना सीखो।'

क्या आप पहले क्रिकेट खेलते भी थे?

हां, उस समय मैं बैट्समैन और विकेट कीपर था। किशन जी के कहने के अनुसार मैं शनिवार और रविवार को मैदान पर पहुंच जाता था और उस समय लोग मैचों में अंपायरिंग किया करता था। उसमें धीरे-धीरे रुचि जागृत हुई और अच्छा लगने लगा। वास्तव में जैसे हम प्रैक्टिस करते हैं वैसे ही अंपायरिंग करने से भी खिलाड़ी की नजर तेज होती है। इससे एक बैट्समैन को काफी मदद मिलती है। इसके अलावा अंपायरिंग करने से कुछ आर्थिक-सहूलियत भी मिलने लगी, हालांकि वह बहुत थोड़ी थी, लेकिन युवावस्था में इसने मेरा उत्साहवर्धन ही किया। इस चीज ने अंपायरिंग के मेरे शौक को बढ़ाया।

एक अंपायर के रूप में भारतीय टीम में आपने अपनी जगह कब बनाई?

टीम में तो काफी समय बाद आना हुआ, हां, अंपायरिंग की शुरूआत हमने 1955 में की थी। इसके बाद हमें सन् 68 से टीम में रखा जाने लगा, हालांकि बतौर अंपायर हमारी पहचान काफी पहले से ही होने लगी थी।

आप कौन सी प्रमुख शृंखलाओं में अंपायरिंग कर चुके और किन देशों के साथ हुए मैचों में शामिल रहे हैं?

शृंखलाएं तो बस गिनी-चुनी ही हैं। हमने सबसे पहले सन् 85 में इंग्लैण्ड के विरुद्ध हुए मैच में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंपायरिंग की थी। वैसे 78-79 में हमें पाकिस्तान के साथ हुए क्षेत्रीय मैचों में भी अंपायरिंग का मौका मिला। उसके बाद वेस्टइंडीज के साथ सन् 83 के मैच में अंपायर रहा। लेकिन सही मायनों में जिसे अंतराष्ट्रीय मैच कहते हैं वह इंग्लैंड के साथ चंडीगढ़ में हुआ था, जिसमें मैंने अंपायरिंग की थी। यह शायद एक वर्ल्ड रिकार्ड हो कि आज तक का सबसे कम ओवरों का मैच यही था, क्योंकि इसमें केवल 15 ओवर खेले गए थे। बारिश हो जाने के बाद के ओवर खेले ही नहीं गए थे। इसके पश्चात् मैं सन् 86 में आस्ट्रेलिया के साथ हुए दो जोनल मैचों में अंपायर रहा। इसी वर्ष श्रीलंका और पाकिस्तान के साथ हुए कई टेस्ट मैचों तथा एक दिवसीय मैचों में अंपायरिंग की। इसके अगले वर्ष छह टेस्ट मैचों में हिस्सा लिया, जो वास्तव में एक बड़ी उपलब्धि मानी जानी चाहिए।

क्या बदलाव आया है पहले के समय की अंपायरिंग में और आज की अंपायरिंग में?

अंपायरिंग में कोई फर्क नहीं आया है, वह तो जैसी पहले थी वही आज भी है। हाँ, नए नियमों के आ जाने से एक दिवसीय मैचों पर कुछ असर पड़ा है, लेकिन टेस्ट मैचों की अंपायरिंग में कहीं कोई परिवर्तन नहीं आया है। बल्कि नियमों की वजह से कुछ दबाव तेज गति के गेंदबाजों पर जरूर पड़ा है। ये नियम थे तो पहले भी लेकिन तब उन्हें लागू नहीं किया जाता है, अब उन्हीं पर जोर दिया जाने लगा है।

क्या आपको नहीं लगता कि तीसरे अंपायर यानी कैमरे की आंख के प्रयोग से मैदान पर उपस्थित दोनों अंपायरों की विश्वसनीयता पर आंच आई है?

हम इस प्रयोग के प्रबल विरोधी है। इस बारे में मैं कहना चाहूंगा कि वे अंपायर जिन्हें मैदान पर अपायरिंग सौंपी गई है, अपनी ओर से अच्छे से अच्छा करने की कोशिश करते हैं। फिर उन्हें यह मालूम रहता है कि अगर आज वे खराब अंपायरिंग करेंगे तो कल उन्हें हटाया भी जा सकता है। उनका तो पूरा कैरियर अंपायरिंग पर ही निर्भर है। अब यदि इस प्राकृतिक खेल में किसी इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का सहारा लिया जाता है तो यह बहुत अच्छी बात नहीं है। इससे एक नुकसान यह भी है कि अंपायर को जब भी कहीं संदेह होगा तो वह खेल को रोककर कैमरे के निर्णय के लिए संकेत करेगा। तब बॉक्स में बैठा एक्सपर्ट खेल के 'रिप्ले' को कई बार देखेगा। जब वह एक्सपर्ट 'रिप्ले' से पूरी तरह संतुष्ट हो जाएगा तब कहीं जाकर अपना निर्णय देगा। इस बीच कम से कम 4-5 मिनट का समय लगना स्वाभाविक है। इतनी देर तक दोनों ओर के खिलाड़ी और दर्शक सांस रोके किसी निर्णय की प्रतीक्षा करते रहेंगे और व्यर्थ का तनाव तथा अनिश्चितता का माहौल वहां पैदा हो जाएगा। यह चीज खेल की स्वाभाविक लय और उसके सुचारु रूप से चलने में

बाधक है।

तो क्या आप मानते हैं, इससे अंपायरों पर भी एक दबाव उत्पन्न हुआ है?

दबाव तो नहीं, क्योंकि इससे कुछ हद तक अंपायर को सहायता भी मिली है। जैसा कि मैंने पिछले दिनों दक्षिणी अफ्रीका में देखा कि कुछ रन आउट ऐसे दिए गए थे जिनके बारे में नंगी आंखों से निर्णय दे पाना आसान नहीं था। लेकिन क्रिकेट एक ऐसा खेल है जो आमतौर पर बल्लेबाज के पक्ष में ही जाता है। यहां तक कि इसके जो भी नियम कानून बनते हैं वे बल्लेबाज के पक्ष में बनते हैं, क्योंकि यह खेल बल्लेबाजों पर आधारित खेल है। इसलिए अगर कोई निर्णय बल्लेबाज के पक्ष में जाता है तो इसमें कोई खराबी नहीं है। फिर आज एक टीम के बैट्समैन खेल रहे हैं तो कल दूसरी टीम के बैट्समैन खेलेंगे। उन्हें भी इसका लाभ मिलता है। यों, ऐसा बहुत ही कम होता है कि अंपायर कोई गलत निर्णय दे।

आपको कैसा लगता है कि जब कोई मेहमान टीम हमारे देश में खेल रही हो और 'तटस्थ अंपायरों' के नाम पर किसी तीसरे देश के अंपायर मैदान पर हों?

हम इसके भी विरोधी हैं। हमने इस बारे में जब भी बात की है तो तीसरे देश के अंपायर को लेकर हमेशा विरोध किया है। टेस्ट स्तर के लगभग सभी अंपायर एक जैसे हैं और उनमें यह अंतर करना कि किसी विशेष देश, जैसे इंग्लैंड के अंपायरों के बारे में यह कहना कि सिर्फ वहीं के अंपायर विश्वस्तर के हैं, ऐसा नहीं है। 'वर्ल्ड कप-87', जोकि भारत और पाकिस्तान में हुआ था, उसमें सारे देश के अंपायर थे और हमारे देश के अंपायरों ने बाकी देशों के अंपायरों से कहीं अधिक अच्छी अंपायरिंग की थी। इसी तरह आस्ट्रेलिया में हुए विश्व कप में भी अन्य देशों जैसे श्रीलंका और वैस्टइंडीज के अंपायरों ने अच्छी अंपायरिंग की है। इसलिए यह कहना कि कोई एक अंपायर अच्छा या बुरा है, यह उचित नहीं है। क्योंकि अंपायर सब बराबर हैं और वे सब तटस्थ ही हैं।

यह सत्य है कि अंपायर अपने स्थान एक जज के समान होता है। इसलिए इस जज ने जो निर्णय दे दिया तो अधिकतर वह ठीक ही होता है। यदि उसने कोई गलत निर्णय दे भी दिया तो खिलाड़ी को यह व्यवहार सीखना चाहिए कि वह उसके निर्णय को खुशी-खुशी स्वीकार करे। यह कोर्ट तो नहीं है बल्कि खेल का मैदान है और इसमें अपील करने की कोई गुंजाइश नहीं है। क्योंकि 'अंपायर' शब्द इसीलिए रखा गया है कि उसका निर्णय सर्वोच्च होता है और वह सबको मान्य होना चाहिए। अन्यथा तो वह 'रेफरी' हो जाएगा, अंपायर नहीं।

खेल के मैदान पर आपके जीवन में कभी कोई रोचक घटना घटी?

एक घटना है जब 'वर्ल्ड कप' में वेस्टइंडीज और इंग्लैंड मैच खेल रहे थे। मैच पाकिस्तान में हो रहा था और मेरे छोर से आखिरी ओवर कॉटनी वाल्श कर रहे थे। कॉटनी वॉल्श वेस्टइंडीज के बेहतरीन गेंदबाज माने जाते हैं, इसीलिए उन्हें

आखिरी ओवर दिया जाता रहा है। उस दिन वे हड़बड़ा गए। इंग्लैंड को जीतने के लिए लगभग 15 रनों की आवश्यकता थी और एलन लैंब बैटिंग कर रहे थे। वॉल्श ने पहले तो 'नो बॉल' की, फिर लैंब ने अगली बॉल पर चौका भी लगा दिया। वॉल्श ने एक बॉल वाइड फेंकी। उसके बाद उसने मुझसे पूछा- हाउ मैनी बॉल्स? (कितनी बॉल शेष हैं)? मैंने कहा चार। वॉल्श ने फिर एक वाइड बॉल फेंकी, जिस पर चौका लग गया। उसके बाद वाली वॉल्श ने 'नो बॉल' फेंकी। तब उसने मुझसे फिर पूछा- हाऊ मैनी बॉल्स? मैंने कहा- चार, वह आश्चर्य चकित हुआ और बोला- स्टिल फोर (अब भी चार)। वह इतना घबरा गया कि उसी के कारण वेस्टइंडीज मैच हार गया।

सत्र - 1992-93

रक्तदान ही मेरा मिशन

-अरविन्द आगार

स्टेट बैंक ऑफ इंदौर में कार्यरत अरविंद आगार ने स्वैच्छिक रक्तदान के क्षेत्र विश्व कीर्तिमान स्थापित कर 'गिनेस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स' में अपना नाम दर्ज कराकर स्वयं को, सहकर्मियों को तथा नगर व देशवासियों को गौरवान्वित किया है। मानवता की सेवा में रत श्री आगार के साथ ***पंचम सिंह चौहान*** *के साक्षात्कार के अंश :-*

'गिनेस बुक' में नाम दर्ज किये जाने पर आपको कैसा लग रहा है?

यह तो सिर्फ संयोग और निमित्त मात्र की बात है। कि मेरा नाम 'गिनेस बुक' में दर्ज किया गया है। गिनेस बुक में नाम दर्ज कराने के लिए मैंने यह कार्य नहीं किया। फिर भी, मैं खुश हूँ।

क्या आपकी विश्व कीर्तिमान स्थापित करने की इच्छा थी?

नहीं, इतनी अधिक बार रक्तदान के पीछे मेरी मंशा कोई विश्व कीर्तिमान स्थापित करने की नहीं रही है। मात्र मानव सेवा ही इसके पीछे मेरा मिशन रहा है।

आपने पहली बार कब रक्तदान किया?

मैंने 12 नवंबर 1959 को अपने अठारहवें जन्मदिन पर रक्तदान किया।

यह प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?

मैं और मेरा परिवार पिछले कई दशकों से समाज सेवा से जुड़ा है। मेरे काका श्री रामजी आगार समाज सेवा के लिए अनेक अवसरों पर सम्मानित किये जा चुके है। अपने काका एवं माता सावित्री देवी की प्रेरणा से एक आठ वर्षीय बालक का जीवन बचाने हेतु पहली बार रक्तदान किया और पिछले 32 वर्षों से यह सिलसिला अनवरत् चल रहा है।

'गिनेस बुक' में रिकॉर्ड होते समय तक कितनी बार रक्तदान कर चुके थे?

उस समय तक 153 बार रक्तदान कर चुका था। जबकि अब तक मैं 171 बार रक्तदान कर चुका हूँ। मैं वर्ष में औसतन चार-पाच बार रक्तदान करता हूँ। लेकिन भारत-पाक युद्ध के दौरान घायल जवानों के लिए 1965 में 5 दिन में तीन बार, 1980 में 40 दिन में 5 बार तथा 1984 के वर्ष में 14 दार रक्तदान किया।

आपका ब्लड ग्रुप क्या है और आप किस उम्र तक कितनी बार रक्तदान करना चाह रहे हैं?

मेरा रक्त समूह बी-पाजिटिव है और मेरी इच्छा 55 वर्ष की आयु तक 175 बार रक्तदान करने की है।

रक्तदान के समय एक बार में साधारणतया 300 सी.सी. खून शरीर से लिया जाता है, इस तरह यदि गणना की जाय तो आगार जी, आप अभी तक लगभग 60 लीटर खून का दान कर चुके हैं। जबकि एक सामान्य व्यक्ति में 5-6 लीटर खून रहता है। लोगों की जिज्ञासा है कि क्या रक्तदान से मनुष्य में कमजोरी आती है?

यह धारणा नितांत भ्रामक एवं वैज्ञानिक रूप से तर्कसंगत नहीं है कि रक्तदान से कमजोरी आती है। इतना अधिक रक्तदान करने के बावजूद 52 वर्ष की उम्र में मैं पूर्णतया स्वस्थ हूँ और दो स्वस्थ पुत्रों एवं दो पुत्रियों का पिता हूं।

आपके भोजन एवं दिनचर्या के बारे में कुछ बताइये?

मैं और मेरा परिवार पूरी तरह शाकाहारी है। शाकाहारी भोजन के अलावा हम लोग कुछ नहीं खाते। मैं घर के बाहर सामान्यत: भोजन नहीं करता। यदि आवश्यक हुआ तो फल और सलाद ही लेता हूं। व्यायाम के नाम पर पिछले कुछ वर्षों से 8-10 किलोमीटर साइकिल प्रतिदिन चलाता हूँ।

आप युवा वर्ग को कुछ कहना चाहेंगे?

मेरी दिली इच्छा है कि युवक-युवतियों को रक्तदान के क्षेत्र में आगे आना चाहिए ताकि व्यावसायिक रक्तदाताओं को निरुत्साहित किया जा सके और जरूरतमंद लोगों को शुद्ध रक्त मिल सके, साथ ही मानवता को एड्स जैसी जानलेवा बीमारियों के दुष्परिणामों से बचाया जा सके।

नौकरी आपके लक्ष्य की सिद्धि में कितनी सहायक रही?

हमारा बैंक रक्तदान शिविरों के आयोजन में हमेशा अग्रणी रहा है। मैं अपनी सफलता में बैंक द्वारा प्रदत्त सहयोग को महत्त्वपूर्ण मानता हूँ और बैंक अधिकारियों द्वारा मुझे हमेशा प्रोत्साहन दिया जाता रहा है।

रक्तदान के अलावा भी आपका लक्ष्य है?

हाँ, मैंने गुर्दा दान तथा मृत्यु के बाद नेत्रदान का भी संकल्प लिया हुआ है।

सत्र - 1995-96 □

प्रतिभा पलायन देश के लिए खतरनाक

-ओ.पी.रावत

मध्य प्रदेश में आदिवासियों के विकास की योजनाओं को लेकर चर्चा में रहे ओ.पी.रावत मध्य प्रदेश कैडर के जाने-माने प्रशासनिक अधिकारी हैं। वे कई जिलों में जिलाधिकारी तथा अन्य महत्त्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। वार्ता के समय श्री रावत मध्यप्रदेश सरकार के सूचना संचालक के पद पर कार्यरत थे। प्रस्तुत है उनसे ***अनुराग शर्मा*** *का एक संवाद :-*

आप अपने शुरुआती जीवन और पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में कुछ बताएंगे?

मैं झाँसी का रहने वाला हूँ। मैंने वहीं से बी.एससी. किया है। फिर बनारस विश्व विद्यालय से भौतिकी में एम.एससी. किया। पहले मैं अध्यापक बनना चाहता था। मेरे पिताजी भी इस क्षेत्र में थे। मैंने तीन प्रयास अध्यापक की नौकरी प्राप्त करने के लिए किए लेकिन सफल नहीं हो सका और सिविल सेवा में पहले प्रयास में ही चयनित हो गया।

अब तक आप किन-किन प्रशासनिक पदों पर रह चुके हैं?

मैं शासन मे सयुक्त सचिव रहा, नरसिंहपुर और इन्दौर का जिला कलेक्टर भी रहा।

आदिवासियों के विकास के लिए आपने क्या-क्या प्रयास किए?

विकास की धारणा पर विवाद है। एक वर्ग चाहता है कि वहा बडी फैक्ट्रियाँ लगे, जिससे उनका विकास हो। दूसरा वर्ग ऐसा नहीं चाहता। वे समझते हैं इससे मौलिकता समाप्त हो जाएगी। हमने उनकी पेयजल की समस्या को समाप्त करने के लिए ट्यूबवैल लगवाए। वहा के पानी में आयरन की अधिकता थी। उसको निकालने के लिए एक अलग मशीन लगवाई। आवश्यकतानुसार चिकित्सालयों की व्यवस्था की। आदिवासी महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए भी हमने कुछ प्रयास किए।

पढ़े-लिखे आदिवासी युवक द्वारा शहरों की ओर पलायन के विषय पर आप क्या सोचते हैं?

उनमें से अधिकाश युवकों की ऐसी धारणा बन गई है कि थोडा पढने लिखने के बाद वे उस समाज में नही रहना चाहते। वास्तव में उन्हें वहा रहकर अपने समाज को आगे बढाने का प्रयास करना चाहिए।

आरक्षण के विषय में आपके क्या विचार हैं?

आरक्षण के मामले में मैं सरकारी नीति को पूर्णत: सही मानता हूँ।

तकनीकी क्षेत्रों के प्रशिक्षित युवक-युवतियां भी प्रशासनिक सेवा में आने का प्रयास कर रहे हैं क्या यह उचित है?

हाँ, कुछ हद तक यह उचित नहीं है। लेकिन सभी क्षेत्रों के लोग होने से अच्छा कार्य हो सकता है। एक व्यक्ति यदि डॉक्टर बनने के बाद विदेश चला जाए तो यह आई.ए.एस बनने की अपेक्षा ज्यादा नुकसानदायक है। अनेक ऐसे प्रशासनिक पद हैं जहा इस प्रकार के प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।

प्रशासनिक अधिकारियों के फेरबदल में राजनेताओं का हस्तक्षेप आप कहां तक उचित मानते हैं?

राजनेता जनता का प्रतिनिधि होता है। उसे हर पाच साल बाद फिर जनता के सामने जाना पड़ता है। जबकि अधिकारी एक बार बन जाने के बाद उम्र भर का ठेका सरकार के पास होता है। इसलिए राजनेता को पूरा हक है कि वह अपने क्षेत्र में अपने वोटरों को ध्यान में रखते हुए कार्य करें। अधिकारियों को भी राजनेताओं की उचित बात माननी चाहिए।

मध्य प्रदेश की वर्तमान पत्रकारिता के विषय में आप क्या दृष्टिकोण रखते हैं?

वास्तव में यहा पत्रकारिता का स्तर काफी अच्छा है। छोटे शहरों से ऑफसैट पर अखबार छप रहे हैं। कलमकारों की नजर प्रत्येक बिंदु पर है। अखबार सिस्टम की कमियों की ओर हमारा ध्यान दिलाने के साथ जनता को शिक्षित कर रहे हैं। □

सत्र - 1992-93

आयुर्वेद प्रतिरोधी शक्ति बढ़ाता है

-डॉ.राजेंद्र कुमार अग्रवाल

*आयुर्वेद जीवनदायी चिकित्सा पद्धति का नाम है। शायद ही ऐसा कोई रोग हो जिसका आयुर्वेद में इलाज संभव न हो। आयुर्वेद के अपरिमित गुणों के कारण इस पद्धति को संपूर्ण विश्व ने अपनाया है लेकिन भारत में यह पद्धति उपेक्षा का शिकार हो चुकी है। आयुर्वेद के गुणों तथा अन्य बिंदुओं पर राजकीय आयुर्वेदिक कालेज के पूर्व अध्यक्ष और प्रसिद्ध वातरोग विशेषज्ञ डॉ. राजेंद्र कुमार अग्रवाल ने 1955 में आयुर्वेदाचार्य की उपाधि हासिल की थी। चार दशक से वे इसी पद्धति के माध्यम से चिकित्सा कर रहे हैं। उनसे **अमित चौहान** की एक बातचीत -*

आयुर्वेद का मूलाधार क्या है?

आयुर्वेद पंच महाभूत के सिद्धांत पर आधारित है। ये पंचमहाभूत हैं-आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी। इनमें से आकाश व वायु से वात, अग्नि से पित्त तथा जल व पृथ्वी से मिलकर कफ बनता है। ये तीनों वात-पित्त-कफ ही विषम दशा में होने पर शरीर में रोग उत्पन्न करते हैं।

आयुर्वेद व अन्य चिकित्सा पद्धतियों में मुख्य अंतर क्या है?

आयुर्वेद मात्र चिकित्सा पद्धति ही नहीं है, यह आयु को बढ़ाने वाला अर्थात् जीवन का विज्ञान है। अन्य पद्धतिया मात्र चिकित्सा पद्धति है। आयुर्वेद आधुनिक चिकित्सा के जीवाणुवाद को तो मानता है साथ ही मिथ्या आहार-विहार व असात्मेंद्रियार्थ संयोग, प्रज्ञापराध व परिणाम के कारण रोगों का उत्पन्न होना भी मानता है।

उपरोक्त चीजें किस तरह रोग पैदा करती हैं?

ज्ञानेंद्रीय या कर्मेंद्रीय का अयोग, अतियोग या मिथ्यायोग होने से रोग उत्पन्न होते हैं इसी को असात्मेंद्रियार्थ कहते हैं-जैसे कि आखों से अत्यधिक कार्य लिया या बिल्कुल बंद कर लिया अथवा फिर उनकी क्षमता वाला कार्य नहीं किया। जानबूझ कर गलत खान-पान अथवा कार्य से रोग उत्पन्न होना प्रज्ञापराध कहलाता है। ऋतु अनुकूल भोजन न करना परिणाम कहलाता है। एक तरह से ये रोग व्यक्ति खुद ही पैदा करता है।

शोधन और शमन चिकित्सा का आयुर्वेद में क्या स्थान है?

आयुर्वेद में चिकित्सा के लिए ये दोनों ही पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं। यदि इन दोनों पद्धतियों के द्वारा साथ-साथ इलाज़ किया जाय तो बहुत ही अच्छे परिणाम

मिलते हैं। शमन में रोगों को औषधियों द्वारा शांत किया जाता है जबकि शोधन में शरीर के नाइट्रोजनी अवशिष्ट पदार्थों को शरीर से बाहर करके शुद्ध करते हैं।

आयुर्वेद की एक शाखा भूतविद्या भी है। आज के परिप्रेक्ष्य में इसकी क्या सार्थकता है?

आयुर्वेद में इस विद्या के ग्रंथ पूर्णरूपेण उपलब्ध नहीं है। यह केवल भूतभिषक और कौमार्यभृत्य में ही प्राप्त होते हैं। चूँकि इसकी परिकल्पना मनोविज्ञान और आधुनिक विज्ञान से मेल नहीं खाती अतः यह आज मान्य नहीं है; परंतु जहाँ तक आयुर्वेद में इस विद्या का सवाल है जैसे कुछ लोगों में पोलियोमलाइटस उन रोगों की परिकल्पना से लगाया है जिनका स्पष्ट कारण शरीर में बाह्य रूप से नहीं दिखाई देता।

क्या आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा कैंसर और एड्स जैसे रोगों का उपचार संभव है?

उपचार तो संभव है परंतु इन रोगों की कोई निश्चित औषधि आयुर्वेद में नहीं है। इसमें काफी अनुसंधान की आवश्यकता है। कैंसर का उल्लेख कर्कराबुंद व रक्तार्बुद के नाम से आयुर्वेद में है। परंतु एड्स का उल्लेख नहीं मिलता। जहाँ तक औषधि का प्रश्न है वह अनुसंधान से निश्चित रूप से प्राप्त हो सकती है। इस दिशा में आयुर्वेद में काफी प्रयास हो रहे हैं। गत दिनों कुछ चिकित्सकों ने दावा किया भी था कि उन्होंने एड्स की दवा आयुर्वेद में खोज ली।

विदेशों में आयुर्वेद की कितनी मान्यता है?

हालैंड, जर्मनी व अन्य यूरोपीय देशों में आयुर्वेद के प्रति रुचि बढ़ी है। विदेशी लोग आधुनिक चिकित्सा के साइड इफैक्ट्स को लेकर परेशान हैं। इस कारण वे आयुर्वेद को अपनाना चाहते हैं और अपना रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लू. एच ओ) ने तो संपूर्ण स्वास्थ्य के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ सुश्रुत का श्लोक सिद्धान्त रूप में मान लिया है।

समदोषः समाग्निश्च समधातु मलक्रियः।
प्रसन्न आत्मेंद्रियमनः स्वस्थ इति अभिधीयते।।

अर्थात्- वही व्यक्ति स्वस्थ कहा जाएगा जिसके शरीर में वात, पित्त और कफ संतुलित हों, शरीर के अंदर तेरह प्रकार की अग्नियों का कार्य सम हो तथा सातों धातुएं क्रमशः ठीक प्रकार से बनती हों। इसके अलावा मल की क्रियाएं ठीक हों तथा आत्मा, इंद्रियों व मन की प्रसन्नता हो।

क्या आयुर्वेद साइड इफैक्टस से मुक्त है?

हाँ, यहाँ साइड इफैक्ट्स नहीं होते। आधुनिक चिकित्सा पद्धति में जीवाणुओं को मारा जाता है न कि शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई जाती है। इस कारण शरीर की प्रतिरोधक क्षमता तो उतनी ही रहती है परंतु आयुर्वेद में शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा कर जीवाणुओं का अनुकूल वातावरण हटा देते हैं। इस तरह

आयुर्वेद में प्रतिरोधकता बढ़ जाने से साइड इफैक्ट्स का खतरा नहीं है। अन्य पद्धतियों में जिन औषधियों से जीवाणुओं को मारा जाता है, वे मानव कोशिकाओं पर भी बुरा प्रभाव डालती है, जबकि आयुर्वेद में ऐसा कुछ नहीं है।

आज के आयुर्वेदाचार्य आयुर्वेद के इन गुणों के बावजूद आधुनिक चिकित्सा ही क्यों अपनाते हैं?

आयुर्वेद पाठ्यक्रम में आधुनिक और आयुर्वेद को मिश्रित रूप से पढ़ाया जाता है। अब विद्यार्थी किस को अधिक ग्रहण कर ले यह उसके विवेक पर है। फिर प्रतियोगिता से प्रवेश पाने वाला विद्यार्थी मानसिक रूप से आयुर्वेदाचार्य बनने को तैयार नहीं होता। वह तो एम.बी.बी.एस. डॉक्टर बनना चाहता था। ये चीजें उत्तर भारत में ही अधिक है, दक्षिण भारत में आयुर्वेद का स्नातक केवल आयुर्वेद से ही उपचार करता है।

क्या इसका दुष्प्रभाव आयुर्वेद पर नहीं पड़ेगा?

निश्चित रूप से पड रहा है। जब तक सरकार की नीतियाँ ऐसी है, तब तक कुछ नहीं किया जा सकता है।

सूर्य चिकित्सा, जल चिकित्सा, एक्यूप्रेशर व एक्यूपंक्चर आदि नवीन पद्धतियाँ आयुर्वेद से क्या संबंध रखती हैं?

इन सभी चिकित्सा पद्धतियों का मूल तो आयुर्वेद में है, परंतु इन पद्धतियों में काफी कुछ नई चीजें भी हैं हालाँकि एक्युप्रेशर कुछ अधिक विवरण के साथ मिलता है।

प्रदूषण के कारण वनौषधियाँ विलुप्त हो रही हैं, इससे क्या आयुर्वेद का भविष्य संकट में नहीं है?

हाँ, बिल्कुल है। यह चिंता का विषय है। इसके लिए आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों की खेती की जानी चाहिए। हालाँकि इसके लिए सरकार ने एक संस्थान भी बनाया है और वे उसके लिए प्रशिक्षण भी देते हैं परंतु उसका प्रचार प्रसार कम है।

यूं कहिए कि आयुर्वेद के स्वास्थ्यवृत्त का पालन करने से ही मनुष्य स्वस्थ रह सकता है। उसे उपचार की आवश्यकता ही नहीं होगी। यदि कोई व्यक्ति किसी रोग की चपेट में आ भी जाए तो आयुर्वेद उस रोग को दबाता नहीं बल्कि जड़ से खत्म करता है। एक तथ्य यह भी है कि आयुर्वेद हमारे वातावरण और रहन-सहन के अनुकूल है। अन्य पद्धतियों के लोगों ने यह दुष्प्रचार किया है कि आयुर्वेद से इलाज में काफी समय लगता है जबकि यह बात पूरी तरह निराधार है। आयुर्वेदिक औषधि शीघ्र और सार्थक दिशा में कार्य करती है जबकि अन्य दवाइयाँ शरीर को उत्तेजित कर देती है। संपूर्ण स्वास्थ्य आयुर्वेद के माध्यम से ही संभव है।

□

सत्र - 1994-95

मुहूर्त सध जाए तो सब कुछ संभव है

-रमेश वायगाँवकर

स्टेट बैंक ऑफ इंदौर की ग्वालियर शाखा में कार्यरत युवा रमेश वायगाँवकर, अखिल भारतीय स्तर पर 'ज्योतिष मार्तण्ड' उपाधि से सम्मानित हैं। श्री वायगाँवकर विज्ञान में स्नातकोत्तर हैं। ज्योतिष शास्त्र उन्होंने अपने नाना पंडित दत्तात्रेय विनायक राखे से सीखा जो उनके गुरु भी थे। वायगाँवकर ने ज्योतिषशास्त्र की 'कृष्णमूर्ति पद्धति' में सफलता हासिल की है। 1994 में मालदीव की राजधानी माले में हुये आठवें अंतरराष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन में वायगाँवकर ने अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया था। प्रस्तुत है उनसे ***विवेक शर्मा*** *की बातचीत :-*

ज्योतिष क्या है?

किसी विषय के क्रमबद्ध अध्ययन को विज्ञान कहते हैं। इसी तरह भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारे में क्रमबद्ध अध्ययन को ज्योतिष कहते हैं। हालाँकि वर्तमान व भूतकाल की जानकारी भी ज्योतिष से प्राप्त की जाती है।

क्या ज्योतिष में भी विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता हासिल की जाती है?

हाँ, ज्योतिष में किसी भी क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल की जा सकती है। मैंने चिकित्सा के क्षेत्र में कार्य किया है तथा अब भी कर रहा हूँ। चिकित्सा क्षेत्र में कार्य करने का 'स्कोप' ज्यादा है। ज्योतिष द्वारा इस किसी भी पीड़ित की उचित मदद की जा सकती है। यही एक क्षेत्र है जिसमें ज्योतिष मनुष्य के लिये सर्वोपयोगी सिद्ध हुआ है। वैसे यदि दृष्टि निर्माणकारी हो तो सभी क्षेत्रों में ज्योतिष का उपयोग हो सकता है।

क्या प्राचीन काल से ही ज्योतिष इतना विकसित रहा है?

प्राचीन काल में विज्ञान अधिक विकसित नहीं था। किसी भी क्षेत्र में स्पष्टीकरण न देकर उसे धर्म से जोड़ दिया जाता था। इसी से बहुत कुछ आज अंधविश्वास के रूप में रह गया है और ज्योतिष की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगता रहा है। हाँ, वर्तमान में सभी क्षेत्रों में शोध कार्य हो रहे हैं तथा आधुनिक युग में इसकी विश्वसनीयता बढ़ी है।

तो क्या यह समझें कि प्राचीन काल में ज्योतिष में कोई विशेष कार्य नहीं हुआ? भृगु जैसे प्रसिद्ध ज्योतिषियों ने कोई पद्धति नहीं दी?

मैंने ऐसा नहीं कहा कि प्राचीन काल में कोई कार्य नहीं हुआ। हाँ, भृगु ने कोई पद्धति नहीं दी थी। उन्होंने 'भृगु संहिता' नामक ग्रंथ में अधिकाधिक जन्मकुंडलियों का संग्रह कर उनका वर्णन किया है। इन जन्म कुण्डलियों में कोई सी एक आपकी भी हो सकती है। वैसे अन्य पद्धतियों में पाराशरी पद्धति, जैमिनी सूत्रम्, केरली पद्धति तथा कृष्णमूर्ति पद्धति आदि हैं। ये सभी प्राचीन काल की ही देन हैं जिनका उपयोग हम आज भी कर रहे हैं।

आपने ज्योतिष शास्त्र की 'कृष्णमूर्ति पद्धति' में कार्य किया है। इस पद्धति के बारे में कुछ बताएं?

यह पद्धति प्रोफेसर कृष्णमूर्ति के नाम पर है। उन्होंने ज्योतिष की भारतीय व पाश्चात्य विधि का अध्ययन करके यह पद्धति दी थी। इस पद्धति से ज्योतिष में गणना का काम बहुत सरल हो गया है। इस पद्धति से पहले भारतीय ज्योतिष में 'प्रश्न कुडली' से कुछ कहना असंभव था। इसके द्वारा प्राप्त परिणाम 90 प्रतिशत तक सत्य पाए गए हैं।

प्रश्न कुंडली से भविष्यवाणी कैसे होती है?

प्रश्नकर्ता द्वारा प्रश्न करते समय ग्रहों की स्थिति, तत्कालीन समय तथा स्थान के आधार पर गणना करके उक्त प्रश्न के बारे में भविष्यवाणी की जाती है। किंतु प्रोफेसर कृष्णमूर्ति ने इसमें भी सुधार किया। उन्होंने समय को अंकों के आधार पर एक से 249 तक बांट दिया। बीच का कोई सा भी अंक चुन कर ज्योतिषी को बताने पर उक्त प्रश्नकर्ता के बारे में गणना करके सही भविष्यवाणी की जा सकती है। फिर चाहे दो प्रश्नकर्ताओं का एक-सा ही प्रश्न क्यों न हो, उनके द्वारा चुने गये अंक भिन्न होंगे और परिणाम या भविष्यवाणी भी भिन्न ही होंगी।

आपने अंतरराष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन में जो शोध पत्र प्रस्तुत किया उसके बारे में कुछ बताएं?

मेरे शोध पत्र का विषय था-'पुत्र प्राप्ति एव परिवार नियोजन में ज्योतिष का योगदान'। इसके अतर्गत कुछ ऐसे विशिष्ट मुहूर्त तय किए गए हैं जिसके अतर्गत किए गए कार्य से फल प्राप्ति निश्चित है, चाहे वह पुत्र प्राप्ति हो या परिवार नियोजन, बस मुहूर्त का ध्यान रखना आवश्यक है। इसके लिये मैंने चाइनीज चार्ट, अरेबीक पद्धति तथा पाश्चात्य पद्धति आदि की मदद भी ली है।

सर्वाधिक विकसित ज्योतिष किस देश में है?

अमेरिका में। वहाँ विज्ञान भी विकसित है, लोग जागरूक हैं तथा इस विद्या को प्रोत्साहन भी मिलता है। यही वजह है कि वहाँ अधिक से अधिक शोध हो रहे हैं। अब तो नौवाँ अतरराष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन भी अमेरिका में होने जा रहा है।

भारतीय व पाश्चात्य ज्योतिष में क्या अंतर है?

आज विश्व में यह अंतर ही ज्योतिष का सबसे बड़ा विवाद है। भारतीय

ज्योतिष चंद्रमा की गति को आधार मानता है जिसे निरयन पद्धति कहते हैं तथा पाश्चात्य ज्योतिष सूर्य की गति को आधार मानते हैं, उसे सायन पद्धति कहते हैं। सायन पद्धति निरयन पद्धति से 23 डिग्री आगे चल रही है। 23 डिग्री आयनांश के आगे पीछे होने पर भी भविष्यवाणियाँ लगभग एक सी होती हैं। किंतु हर कोई अपने अहंकार में है, इसी वजह एक निश्चित आयनांश नहीं है। अब तो भारत में ही अलग-अलग जगहों के पंचांगों के कारण एक ही पर्व दो दिन मनाया जाता है। पद्धति का अंतर समाप्त होने पर ही ज्योतिष की उचित प्रगति हो सकेगी।

आधुनिक विज्ञान का ज्योतिष पर क्या प्रभाव है?

विज्ञान आज ज्योतिष के लिये बहुत मददगार है। अभी एक वर्ष पूर्व विश्व की सभी घड़ियों को एक सैकिंड के लिये रोक दिया गया था ताकि आयनांश के साथ चल सकें। यह सब विज्ञान की मदद से ही संभव है। जितना विज्ञान बढ़ेगा, उतना ही यह शास्त्र भी बढ़ेगा।

ज्योतिष में कम्प्यूटर के योगदान से संतुष्ट हैं आप?

कंप्यूटर से गणना तो आसान है पर इससे भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। साथ ही जो व्यक्ति कंप्यूटर चलाए उसे ज्योतिष का ज्ञान भी तो होना चाहिए।

ज्योतिष को आधार मानकर भाग्य और पुरुषार्थ में से आप किसे प्रमुख मानते हैं?

देखिए, एक बात तो बिल्कुल सत्य है कि भाग्य अमिट है। भाग्य में जो भी है वह होकर ही रहेगा। पुरुषार्थ से आप अपने भाग्य को नहीं बदल सकते किंतु भाग्य के फल को पाने के लिये पुरुषार्थ या कर्म करना अति आवश्यक है। वैसे ये दोनों एक दूसरे के पूरक ही हैं, कोई प्रधान या छोटा नहीं है।

ग्रहों का असर क्या पेड़-पौधों एवं अन्य जीव-जंतुओं पर भी पड़ता है?

वर्तमान ज्योतिष मनुष्यों के लिए ही है किंतु 'पेड़-पौधों पर ग्रहों के प्रभाव' विषय पर शोध चल रहे हैं। खासतौर पर औषधि देने वाले पौधों पर व उनके गुणों पर शोध कार्य चल रहे हैं। जैसे कि हृदय, जोकि सूर्य से संचालित है, की कोई बीमारी हो तो वह उस पौधे की दवा से शीघ्र दूर हो जाएगी जिसमें अप्रैल व मई में फूल खिलता हो। इसका कारण यह है कि उस समय सूर्य उच्च राशि में होगा और उस पौधे को भी संचालित कर रहा होगा। इसी तरह स्ट्रोबिलैंथैस कुंथीनैसीस नामक पौधे का फूल पूरे 18 वर्ष बाद खिलता है क्योंकि इन 18 वर्षों तक उस पर राहु की महादशा का प्रभाव रहता है। आने वाले समय में किस गुणसूत्र या विटामिन या एमीनो एसिड आदि पर किस ग्रह का प्रभाव है, इसके बारे में ज्योतिष शास्त्र तभी जवाब देने में सक्षम होगा जब उचित शोध हो सकेगा।

□

सत्र - 1994-95

दुर्दशा के लिए कांग्रेस सर्वाधिक जिम्मेदार है

-शिवकुमार शर्मा

*पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में श्रीराम दरबार के माध्यम से विगत तीन दशकों से हर रोज रामकथा जारी है। श्रीराम दरबार के संस्थापक चारों शर्मा बंधु देश-विदेश में निरंतर रस वर्षा कर रहे हैं। प्रस्तुत है श्री रामदरबार के अध्यक्ष पं. शिवकुमार शर्मा से **सुभाष चंद्र भाटी** की एक बातचीत :-*

श्रीराम दरबार की स्थापना कब, हुई?

राम दरबार की स्थापना अलीगढ़ में सन् 1949 को हुई। वहाँ राम कथा करते हुए हमने एक इश्तहार निकाला, जिसमें छपवाया कि भगवान शंकर के पवित्र प्रांगण में श्रीराम दरबार का आयोजन किया जाएगा। 1966 में मुजफ्फरनगर में राम कथा का आयोजन हुआ जिसमें श्रोताओं ने राम दरबार की इस कथा को लगातार सुनने का आग्रह किया था। इस प्रकार 20 अगस्त 1966 से प्रतिदिन सुबह राम कथा होने लगी।

श्रीराम दरबार का स्वरूप क्या है?

श्रीराम दरबार एक परिवार है जिसके माध्यम से राम कथा का प्रचार नगरों, महानगरों एवं राज्यों में किया जाता है। दरबार कोई संस्था, ट्रस्ट या संघ नहीं है। दरबार की अलग से कोई शाखा भी नहीं है।

श्रीराम दरबार ने कथाओं का आयोजन कहाँ-कहाँ किया?

श्रीराम दरबार के सदस्य राम कथा कहने के लिए नेपाल, मारीशस और इंग्लैंड भी गए। इंग्लैंड तथा मारीशस में भारत सरकार ने भेजा था। नेपाल में रायल परिवार ने राम कथा का आयोजन वहाँ के पशुपतिनाथ मंदिर में करवाया था।

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के संबंध में आपकी क्या राय है?

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण तो होना चाहिए लेकिन राजनीतिक तरीकों से नहीं बल्कि भक्तों द्वारा इसका निर्माण हो। मंदिर के नाम पर राजनीति से किसी का भला नहीं होगा और न ही मंदिर बन सकेगा। हम तो श्रद्धालुओं को भक्ति राम-रस से सराबोर करते हैं। इससे हमारा कोई मतलब नहीं कि वे राम मंदिर निर्माण के लिए अयोध्या जाएँ या न जाएँ। राम मंदिर निर्माण के लिए हम किसी दल विशेष का समर्थन भी नहीं करते। यह तो भक्तों का मामला है। वे जब चाहें मंदिर बना लें। राम दरबार तो श्रद्धालुओं को सीख देता है कि वे दुनियावी झगड़ों में न पड़ें।

जो लोग राम कथा की आलोचना करते हैं, उनके संबंध में आपकी क्या राय है?

जो लोग राम कथा की आलोचना करते है, उनकी हम आलोचना नहीं करते क्योंकि एक दिन वे खुद ही राम की महिमा को समझ जाएँगें।

देश में बढ़ते जातीय विद्वेष के लिए आप किसी दल विशेष को जिम्मेदार मानते हैं?

हमारे देश में गुण कर्मो के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की जो व्यवस्था थी, वह अति उत्तम थी। देश का दुर्भाग्य है कि इस व्यवस्था को विकृत करने में राजनीतिक नेताओं का सबसे अधिक हाथ रहा है। देश के उत्थान एवं पतन सभी के लिए कांग्रेस सबसे अधिक जिम्मेदार है।

राम कथा से मानव कल्याण कैसे संभव है?

सामाजिक व्यवस्था रामवादी होने से ही मानव समाज का कल्याण हो सकता है। वर्तमान में देश, समाज या मानव का जो कल्याण हुआ है वह केवल तुलसी कृत रामचरित मानस के कारण हुआ है। राम कथा से ही समाज में सदाचार आएगा, झगड़े खत्म होंगे और सुव्यवस्था की स्थापना होगी।

सत्र - 1993-94 □

राजनीति में माहौल बिगड़ गया है

-सम्पतबाई शर्मा

'मंदिर तो वहीं बनना चाहिये जहां राम जी की जन्म स्थली है' *यह उद्‌गार महामहिम राष्ट्रपति डॉ० शंकरदयाल शर्मा की माता श्रीमती सम्पतबाई शर्मा ने एक साक्षात्कार में व्यक्त किये। वे एक आम गृहणी हैं और भोपाल की पुरानी बस्ती में वैद्यक का कार्य भी करती हैं। यह कार्य उनका पुश्तैनी है और दो-तीन पीढ़ियों से चला आ रहा है। वे एक मृदु, सहृदय व स्पष्टवादी महिला हैं। उनसे* ***हेमचन्द्र जोशी*** *की बातचीत के कुछ अंश प्रस्तुत हैं :-*

आपको राष्ट्रपति जी के शपथ ग्रहण समारोह के समय कैसा लगा?

अपना बेटा अगर कुछ बने तो बुरा थोड़े ही लगता है। खुशी कोई ऊपर थोड़े ही दिखाई जाती है। वह तो अंदर से ही प्रकट होती है।

बचपन को देखते हुए आपने कभी सोचा था कि डॉक्टर साहब राष्ट्रपति बनेंगे?

बचपन में तो खेलना कूदना पढ़ना और लिखना ही था। जब वह इग्लैंड से आए तभी राजनीति में गये। पहले से कोई थोड़े ही सोचा जाता है कि कब कोई क्या बन जाए। वह अपनी मेहनत से उठे हैं। सच्ची ईमानदारी से काम करें तो अपने आप पदवी मिल जाती है। यदि कोई राजा की पदवी पर बैठ कर गलत काम करे तो कोई भी उसे राजा नहीं रखेगा। जो कोई अच्छा काम करेगा उसे ही राजा रखेंगे। डॉक्टर साहब ने कभी किसी के साथ कोई बुरा व्यवहार नहीं किया।

राष्ट्रपति बनने के बाद क्या यहां आप लोगों की जीवनशैली में कोई परिवर्तन आया है?

जैसे हम लोग शुरू में थे वैसे ही आज हैं। कोई परिवर्तन नहीं आया है। बस अब एक गार्ड लग गया है। वह भी बंधन जैसा लगता है। क्योंकि अब कोई मिलने आता है तो उसे उससे पूछना पड़ता है या हमें कहीं जाना पड़ता है तो उसे बता कर जाना पड़ता है।

आपके परिवार में और कोई राजनीति में क्यों नहीं गया?

राजनीति के चक्कर में पड़ कर न कोई खा सकता है न पी सकता है। परेशानियां बहुत हैं। वैसे हमने न तो किसी को रोका है और न ही मना किया है। न ही डॉक्टर साहब को रोका था।

अब तीसरी पीढ़ी में से कोई राजनीति में जाएगा?

यह तो डॉक्टर साहब पर ही निर्भर करता है। वे कहते हैं कि अब राजनीति में माहौल खराब हो गया है। लोग एक-दूसरे पर छींटाकशी करते हैं। आदमी का कोई मोल नहीं है। सब रुपये पैसे को ज्यादा महत्त्व देते हैं।

राष्ट्रपति जी को अपने इस भोपाल वाले घर में आये कितने दिन हो गये?

जब उपराष्ट्रपति बने तो, तब आये थे। अब आने में बड़ी परेशानी है। क्योंकि गली तंग है। गाड़ियों को मुड़ने में दिक्कत होती है। और सुरक्षा ज्यादा होने के कारण भी नहीं आ पाते।

आप भी गई राष्ट्रपति जी के पास रहने?

शपथग्रहण समारोह में गई थी, दो सप्ताह रही, पर मुझे वहां अच्छा नहीं लगा। क्योंकि वहाँ बंधन बहुत है, यहां हमें खुले में बैठने की आदत है वहाँ बंद कमरे में बैठना पड़ा।

जब राष्ट्रपति जी ने मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार को बर्खास्त किया तो आपको कैसा लगा?

अपने को न तो अच्छा लगा और न बुरा लगा। हम तो राजनीति से कोई मतलब नहीं रखते। वो तो डॉक्टर साहब हैं तो उनके चुनाव में जाते हैं, नहीं तो हमें कोई मतलब नहीं।

आपने कांग्रेस का शासन भी देखा और भाजपा का भी। आपको किसका अच्छा लगा?

भारतीय जनता पार्टी अपनी तरह से काम करती है, कांग्रेस अपनी तरह से करती है। डॉक्टर साहब जिस पार्टी से जुड़े हैं हम तो उसकी हाँ में हाँ करते हैं। चाहे वह अच्छा करते हैं या बुरा।

अयोध्या में मंदिर बनना चाहिये या नहीं बने तो कहाँ बने?

हाँ, जरूर बनना चाहिए। वहीं बनना चाहिये, जो जगह मुकर्रर है वहीं। और जगह क्यों बने? जहां भगवान् ने जन्म लिया है जो स्थली उनकी है उसी स्थान पर बनना चाहिए।

और मस्जिद?

मस्जिद कुछ दूर हट कर बन जाए। वैसे यह सब नेताओं के चोंचले हैं। इन लड़ाई झगड़ों में गरीब ही मारा जाता है। कौन नेता आज तक मरा है। मुझे बताओं, कोई नहीं मरा न!

□

सत्र - 1992-93